श्रावण मास, कृष्ण पक्ष, 21 वर्ष, अंक 241, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | मंगलवार 27 सितंबर 2022 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान प्रयागराज

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस लाख वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

क्रियायोग से सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित। क्रियायोग हं क्षं परमात्म अनुभूति का सर्वोच्च मार्ग

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

गहलोत का वार, क्या करेगा हाईकमान ?

विधायकों को तवज्जो मिलेगी या हाईकमान राय थोपेगा

जयपुरः कुछ दिनों पहले गांधी न राहुल गांधी पायलट का उदाहरण देते हुए कहा था कि कांग्रेस धैर्य या सब्र रखना सिखाती है, वहीं गहलोत को अनुभवी नेता बताया था। पायलट गुट चाहता है कि सचिन पायलट मुख्यमंत्री बनें। हाईकमान की भी पसंद वही हैं। दूसरी तरफ गहलोत गुट सचिन पायलट को सीएम के रूप में नहीं देखना चाहता।

तो इसका हल कैसे निकलेगा ?: संभव है कि विधायकों के बीच पायलट के नाम पर वोटिंग करा ली जाए या वन टु वन रायशुमारी कर सबकी इच्छा पूछ ली जाए। अब तक की स्थिति में संख्या बल के मामले में पायलट गुट कमजोर दिख रहा है। गहलोत के समर्थन में शांति धारीवाल के घर हुई बैठक में 70 से ज्यादा विधायक पहुंचे, जबकि सचिन पायलट के घर चुनिंदा एमएलए ही दिखे। यदि ऐसा होता है तो पायलट गुट कमजोर पड़ेगा और संख्या बल के सामने हाईकमान भी किसी अन्य नाम पर विचार कर सकता है।

ऐसा पहली बार नहीं हुआ है। राजस्थान के इतिहास में दो बार और ऐसी ही स्थिति आई, जब विधायकों की राय के आगे हाईकमान को झुकना पड़ा।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए नामांकन करने की घोषणा करने के बाद नए सीएम को लेकर चर्चा शुरू हो गई। हालांकि, शुरूआत में सामने आया है कि गहलोत दोनों पद पर बने रह सकते हैं। ऐसी उन्होंने इच्छा भी जताई थी, लेकिन बाद में मना कर दिया। इसी बीच भारत जोड़ो यात्रा कर रहे राहुल गांधी ने संकेत दिए कि एक पद पर एक व्यक्ति ही रहेगा। उन्होंने उदयपुर में कांग्रेस अधिवेशन में किए गए फैसले का हावाला दिया। इस दौरान सचिन पायलट ने भी राहुल गांधी से मुलाकात की, इसके बाद से वह मुख्यमंत्री पद के दावेदार बन गए। इस बीच यह भी सामने आया कि अशोक गहलोत ने विधानसभा अध्यक्ष और अनुभवी नेता सीपी जोशी का नाम आलाकमान को मुख्यमंत्री पद के लिए

सुझाया। कहा गया कि गहलोत पायलट के सीएम बनने के खिलाफ हैं। उधर, राहुल गांधी से संकेत मिलने के बाद सचिन पायलट राजस्थान में सक्रिय हुए और विधायकों से मिलना शुरू कर दिया। कल यानी शनिवार रात को राजस्थान के नए सीएम पद के उम्मीदवार पर चर्चा करने को लेकर कांग्रेस ने रविवार शाम सात बजे विधायक दल की बैठक बुलाई। विधायकों से चर्चा करने के लिए कांग्रेस हाईकमान ने दिल्ली से राष्ट्रीय महासचिव अजय माकन और मल्लिकार्जुन खड़गे को जयपुर भेजा। दोनों नेता रविवार दोपहर को जयपुर पहुंचे। इसके बाद से प्रदेश की राजनीति में अचानक उबाल गया। गहलोत गुट के विधायक रविवार दोपहर बाद से एक्टिव हो गए। सभी विधायकों को मंत्री शांति धारीवाल के आवास पर शाम पांच बजे बैठक के लिए बुलाया गया। बताया गया कि इस बैठक में शामिल होने के लिए गहलोत गुट के करीब 60 विधायक पहुंचे थे।

विधायकों का बैठक में न आना अनुशासनहीनता

राजनीतिक जानकारों का मानना है कि राजस्थान में रविवार शाम जो भी हुआ वह पूरा मामला पहले से ही स्क्रिप्टेड था। विशेषज्ञों का मानना है कि संभव है कि कांग्रेस आलाकमान को इस पूरे मामले की जानकारी नहीं रही होगी। शायद इसी वजह से उन्होंने विधायक दल की बैठक के लिए अपने दो पर्यवेक्षकों को जयपुर भी भेजा था। राजनीतिक जानकारों का कहना है कि कांग्रेस आलाकमान ने अपनी साफ नियत के साथ राजस्थान में एक प्रक्रिया के माध्यम से नए नेतृत्व को सत्ता सौंपने की कोशिश की। लेकिन जो बगावती सुर रविवार शाम को देखने को मिले उससे स्पष्ट होता है कि पार्टी के विधायकों की ओर से की गई इस पूरे राजनीतिक घटनाक्रम की स्क्रिप्ट पहले से ही तय करके रखी गई थी। यही वजह है कि पर्यवेक्षक बन कर गए कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अजय माकन ने स्पष्ट तौर पर कहा है कि विधायकों का विधायक दल की बैठक में न आना

स्क्रिप्टेड है यह 'पॉलिटिकल ड्रामा', क्या राहुल करेंगे अध्यक्ष के लिए नामांकन?

नई दिल्लीः राजस्थान में अगला मुख्यमंत्री कौन होगा उससे ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है कि अब कांग्रेस का अगला राष्ट्रीय अध्यक्ष कौन होगा। क्योंकि जयपुर में जो हाईवोल्टेज पॉलिटिकल ड्रामा हुआ उससे न सिर्फ पार्टी आलाकमान नाराज है, बल्कि गहलोत के समर्थकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई के मूड में भी दिख रहा है। राजनीतिक जानकार इस घटनाक्रम को दो अलग-अलग नजरियों से देख रहे हैं। एक खेमा यह मान रहा है कि अशोक गहलोत ने रविवार की घटना से यह साबित कर दिया कि उनके अंदर नेतृत्व की क्षमता बहुत ज्यादा है और वह पूरे देश में बेहतर तरीके से राष्ट्रीय अध्यक्ष पद को बगैर रबर स्टैंप की तरह चला सकते हैं। जबकि कई राजनैतिक जानकार यह मान रहे हैं कि जयपुर में रविवार की शाम को जो हुआ वह पूरी तरीके से 'स्क्रिप्टेड पॉलिटिकल ड्रामा' था।

'यूएस-पाक का रिश्ता किसी काम का नहीं'

वॉशिंगटनः संयुक्त राष्ट्र महासभा के उच्च स्तरीय सत्र को संबोधित करने के बाद विदेश मंत्री एस. जयशंकर अभी अमेरिका में ही हैं। सोमवार को उन्होंने भारतीय-अमेरिकी समुदाय के एक कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इस दौरान उन्होंने अमेरिका-पाकिस्तान संबंधों पर दो टूक अपनी बात रखी। पाकिस्तान अमेरिका संबंधों को लेकर विदेश मंत्री ने कहा, ईमानदारी से कहूं.. तो यह एक ऐसा रिश्ता है जिसने न ही पाकिस्तान के हितों को पूरा किया है और न ही अमेरिका के हितों को पूरा किया है। इसलिए अमेरिका को इस पर विचार करना है कि इस रिश्ते से क्या लाभ है और इससे उन्हें क्या हासिल होना है। हाल ही में अमेरिका ने पाकिस्तान को एफ-16 विमानों के बेड़े के लिए 45 करोड़ डॉलर के

मेंटनेंस पैकेज को मंजूरी दी है। कार्यक्रम में इसको लेकर जब जयशंकर से सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि जब आप एफ-16 जैसे विमानों की बात कर रहे हैं तो कहने के लिए यह आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए हैं..लेकिन यह कहकर आप किसी को बेवकूफ नहीं बना सकते हैं। हमें लगता है कि देश अपने हित के आधार पर अपनी पसंद बनाते हैं।

बाइडेन ने पलटा था ट्रंप का फैसलाः अमेरिका ने 8 सितंबर को पाकिस्तान को एफ-16 फाइटर जेट के रखरखाव के लिए 45 करोड़ डॉलर, यानी 3,581 करोड़ देने की मंजूरी दी थी। ये पिछले चार साल में इस्लामाबाद को दी जाने वाली सबसे बड़ी सुरक्षा सहायता थी। इससे पहले तत्कालीन प्रेसिडेंट डोनाल्ड ट्रंप ने 2018 में पाकिस्तान को दी जाने वाली दो अरब डॉलर की वित्तीय सहायता पर बैन लगा दिया था।

पाक को दी सौगात पर अमेरिका की सफाईः एफ-16 फाइटर जेट के रखरखाव के लिए दिए गए पैकेज की भारत में आलोचना हुई थी। इस पर अमेरिकी सरकार का कहना था ।

एसएंडपी को आर्थिक वृद्धि दर 7.3 फीसदी रहने का अनुमान

नई दिल्लीः वैश्विक रेटिंग्स एजेंसी एसएंडपी वित्त वर्ष 2022-23 में भारत की आर्थिक वृद्धि दर 7.3 फीसदी रहने का अनुमान जताया है। इसके साथ ही रेटिंग एजेंसी ने कहा कि महंगाई दर वर्ष 2022 के अंत तक छह फीसदी के ऊपर रह सकती है। एसएंडपी ने सोमवार को जारी एशिया प्रशांत के लिए अपने आर्थिक पूवार्नुमानों में कहा कि अगले साल भारत की आर्थिक वृद्धि को घरेलू मांग में सुधार का समर्थन मिलेगा। रेटिंग्स एजेंसी ने कहा कि हमने चालू वित्त वर्ष में सकल घरेलू ।

'हर तबके को लाभान्वित कर रही डबल इंजन की सरकार'

गोरखपुरः मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सोमवार को दो दिनों के दौरे पर गोरखपुर पहुंचे हैं। सीएम ने यहां खिलाड़ियों को 16 करोड़ की सौगात दी। नवरात्रि के पहले दिन मुख्यमंत्री ने जंगल कौड़िया के रसूलपुर चकिया में अवेद्यनाथ महाराज स्टेडियम और महंत अवेद्यनाथ राजकीय महाविद्यालय में बने सभागार का लोकार्पण किया। स्टेडियम बनाने में 10 करोड़ 16 लाख रुपए का खर्च आया था। 6 करोड़ 80 लाख रुपए राजकीय महाविद्यालय का सभागार बनाने में खर्च हुए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा, हमारे खिलाड़ी राष्ट्रीय और वैश्विक मंचों पर प्रदेश के शक्ति एवं सामर्थ्य का प्रदर्शन करते हैं। इसे देखते हुए प्रदेश सरकार हर गांव में खेल मैदान, विकास खंड स्तर पर स्टेडियम, बड़ी संख्या में स्पोर्ट्स कॉलेज बनवाने तथा बड़े पैमाने पर खेल सुविधाओं को उपलब्ध कराने की प्रक्रिया को तेजी से आगे बढ़ा रही है। हम यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विजन के अनुरूप नए भारत के नए उत्तर प्रदेश के निर्माण में हमारे खिलाड़ियों का योगदान भी सुनिश्चित हो। उन्होंने कहा, ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय और स्टेडियम विकास के कई आयामों समेत राष्ट्रीय शिक्षा नीति से जुड़ने और खेलों को आगे बढ़ाने की प्रेरणा देते हैं। नवरात्र के पहले दिन सभी नागरिकों के जीवन में मंगल की प्रार्थना करते हुए उन्होंने कहा कि शैलपुत्री के आराधना के पावन अवसर पर इस स्टेडियम का लोकार्पण शक्ति व सामर्थ्य के प्रति श्रद्धा निवेदित करने का प्रतीक है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि डबल इंजन की भाजपा सरकार बिना भेदभाव समाज के हर तबके को शासन की योजनाओं का लाभ पहुंचा रही है। पीएम मोदी के जन्मदिन पर 17 सितंबर से जनसेवा के विभिन्न आयामों को लेते हुए सेवा पखवाड़ा शुरू किया गया है।

आजाद ने नई पार्टी का ऐलान किया

जम्मू/श्रीनगरः नवरात्रि के पहले दिन जम्मू-कश्मीर के पूर्व सीएम नेता गुलाम नबी आजाद ने अपनी पार्टी का ऐलान कर दिया है। उन्होंने अपनी पार्टी का नाम डेमोक्रेटिक आजाद पार्टी रखा है। आजाद ने बताया- मेरी नई पार्टी के लिए लगभग 1,500 नाम हमें उर्दू, संस्कृत में भेजे गए थे। हिन्दी और उर्दू का मिश्रण 'हिन्दुस्तानी' है। हम चाहते हैं कि नाम लोकतांत्रिक, शांतिपूर्ण और स्वतंत्र हो।

नई पार्टी का फ्लैग भी लॉन्चः गुलाम नबी आजाद ने जम्मू में प्रेस कॉन्फ्रेंस में अपनी नई पार्टी का फ्लैग भी लॉन्च किया। मस्टर्ड, सफेद और नीले कलर से बने इस

फ्लैग का संदेश काफी अच्छा है। मस्टर्ड कलर क्रिएटिविटी और यूनिटी को दर्शानता है। सफेद शांति को दशार्ता है

और नीला स्वतंत्रता, खुली जगह, कल्पना और समुद्र की गहराई से आकाश की ऊंचाइयों तक की सीमाओं को दशार्ता है। मीडिया से बातचीत के दौरान उन्होंने कहा कि नई पार्टी में उम्र की कोई सीमा नहीं होगी। युवा और दिग्गज पार्टी में एक साथ काम करेंगे।

आबू धाबी के रेस्तरां से चलता था मनी लॉन्ड्रिंग का पूरा खेल

पीएफआई ने खाड़ी देशों से जुटाए थे 120 करोड़ रुपए

नई दिल्ली

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) को लेकर बड़ा खुलासा करते हुए बताया है कि पीएफआई के हजारों सदस्य खाड़ी देशों में एक्टिव हैं। जो संगठन के लिए धन जुटाने का काम करते हैं। इन पैसों को अबू धाबी के एक रेस्तरां से मनी लॉन्ड्रिंग के जरिए भारत भेजा जाता था। एऊ के अनुसार पिछले साल पीएफआइ ने मनी लॉन्ड्रिंग के जरिए 120 करोड़ रुपए जुटाए हैं। इन पैसों को लेकर पीएफआई का दावा था कि ये पैसे

संगठन ने देश भर में दान के माध्यम से जुटाए हैं। जबकि एऊने बताया संगठन ने फर्जी दान रसीद बनाकर भारत में मनी लॉन्ड्रिंग के माध्यम से धन जुटाया और अधिकारियों को गुमराह किया। मनी लॉन्ड्रिंग के लिए थेजस अखबार (मलयालम भाषा की भारतीय ऑनलाइन समाचार वेबसाइट) ने भारत और खाड़ी देशों के बीच माउथ पीस का काम किया।

ईडी ने रिमांड एप्लिकेशन में किया है 120 करोड़ रुपए का जिक्रः हाल ही में नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी ने पीएफआई 15 राज्यों में स्थित 93 ठिकानों पर छापा मारा था। इस दौरान करीब 106 लोगों की गिरफ्तारी भी की गई थी। इनमें से केरल से गिरफ्तार पीएफआई के सदस्य शफीक पायथ को 22 सितंबर को लखनऊ की अदालत में पेश किया गया था।

पहले देश में कबूतर उड़ाए जाते थे, अब चीते छोड़े जाते हैं

'1971 के युद्ध में ही हो जाना था पीओके का फैसला

कांगड़ाः रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) पर फैसला भारत और पाकिस्तान के बीच 1971 के युद्ध के दौरान ही ले लिया जाना चाहिए था। हमने हाल ही में 1971 के युद्ध की जीत की स्वर्ण जयंती मनाई है। 1971 के युद्ध को इतिहास में याद किया जाएगा, क्योंकि यह युद्ध भारत ने संपत्ति, कब्जे या सत्ता के बजाय मानवता के लिए लड़ा था। सिंह ने कहा कि अफसोस यह है कि उस समय पाकिस्तान के 90,000 से ज्यादा सैनिक भारत ने बंदी बना लिए थे, इसके बावजूद भारत ने पाकिस्तान से पीओके वापस नहीं लिया। राजनाथ सिंह नादौन में

ब्यास नदी के तट पर सोमवार को सैन्य बलिदानी परिवार सम्मान समारोह को संबोधित कर रहे थे। रक्षा मंत्री ने कहा कि हिमाचल प्रदेश देव व वीर भूमि है, जिसकी शौर्य, पराक्रम व बलिदान की समृद्ध परंपरा रही है। उन्होंने हिमाचल से प्रथम परमवीर चक्र विजेता मेजर सोमनाथ शर्मा, महावीर चक्र विजेता शेर सिंह थापा, धनसिंह थापा, संजय कुमार व कारगिल युद्ध में बलिदान देने वाले विक्रम बत्तरा का जिक्र करते हुए कहा कि भारत के हर युद्ध में हिमाचलियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राजनाथ सिंह ने कहा कि पहले भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में आधारभूत ढांचे के विकास को प्राथमिकता नहीं दी जाती थी, लेकिन मोदी सरकार में इसे पूरी प्राथमिकता पर रखा है। प्रदेश के सीमावर्ती जिलों किन्नौर और लाहौल-स्पीति में हर घर में नल और जल पहुंचा दिया है।

रूस-यूक्रेन युद्ध: सुखोई जेट भारत में ही होंगे अपग्रेड

नई दिल्लीः यूक्रेन के साथ युद्ध का असर रूसी विमान सुखोई-30एमकेआई लड़ाकू विमानों को अपग्रेड करने की योजना पर भी पड़ा है, इसलिए अब इस बेड़े का भारत में ही तेजी के साथ आधुनिकीकरण करने का फैसला लिया गया है। अग्रिम पंक्ति के लड़ाकू विमानों को अपग्रेड करने की योजना काफी समय से लंबित होने की वजह से अब वायु सेना अपनी लड़ाकू स्क्वाड्रन को मजबूत करने के इरादे से सुखोई का अपग्रेडेशन तेज गति से बढ़ाने के लिए काम कर रही है। रूस के साथ पहली बार 30 नवंबर,1996 को हुए अनुबंध के

बाद से भारत ने मार्च, 2020 तक ऑर्डर किए गए सभी 272 विमानों का उत्पादन पूरा कर लिया लेकिन इस समय वायुसेना के पास 261 सुखोई-30 लड़ाकू विमान हैं। दरअसल, 2000 से 2019 के बीच 11 सुखोई-30 दुर्घटनाग्रस्त हो चुके हैं। वायुसेना के लड़ाकू बेड़े में इन विमानों की भरपाई करने के लिए जुलाई, 2020 में रक्षा अधिग्रहण परिषद (डीएसी) ने 10,730 करोड़ की लागत से 12 सुखोई-30 एमकेआई विमानों की खरीद को मंजूरी दी है।

खबर संक्षेप

युवती के साथ अश्लीलता करने वालों में एक और आरोपी की तलाश जारी

मऊआइमा। मगेतर के साथ बैठी युवती को कतिपय युवकों ने पकड कर अश्लील हरकतें किए और वीडीओ बना कर वायरल कर दिए। पुलिस ने दो को गिरफ्तार कर लिया एक आरोपी मुठभेड़ में पकडा गया। एक फरार आरोपी की तलाश पुलिस बडी सरगर्मी से कर रही है। बता दें कि एक युवती और युवक की सगाई हो चुकी है। दोनों की शादी की तिथि भी जल्द पडने वाली थी। मऊआइमा के ग्राम सिंसई सिपाह पावर हाउस नहर के पास मंगेतर और युवती बातें कर रहे थे कि तथी गांव के कतिपय युवक पहुंच कर युवती के साथ अश्लील हरकतें करने लगे । तथा वीडीओ बना कर वायरल कर दोनों परिजनों की आबरु तार तार कर दी। वीडीओ वायरल के बाद अधिकारियों के आदेश पर इंस्पेक्टर मऊआइमा सुरेश सिंह ने ग्राम सिंसई सिपाह के युवकों की शिनाख्त कर संगीन धाराओं में मुकदमा दर्ज कर के शुक्रवार को आरोपियों के घर बुल्डोजर लेकर पहुंच गए। जिसपर जिकरिया ,मासूम हाजिर हो गए जबकि मोहम्मद कैफ पुलिस मुठभेड़ में पकड़ लिया गया। सभी को जेल भेज दिया गया है। अब मुख्य आरोपी वसीक पुत्र शफीक की तलाश में पुलिस दबिश दे रही है। इंस्पेक्टर मऊआइमा सुरेश सिंह का कहना है कि जल्द ही वसीक को भी पकड लिया जाएगा।

दुर्गा पंडाल में लाउडस्पीकर बांधते समय हाई वोल्टेज करंट से दो युवकों की मौत

अखंड भारत संदेश

करछना। थाना क्षेत्र के अंतर्गत बरइयवा चौराहे पर दुर्गा पंडाल में लाउडस्पीकर बांधने गए दो युवकों की हाई वोल्टेज बिजली करंट की चपेट में आने से मौत हो गई। एक साथ दो युवकों की मौत होने से दोनों परिवार में कोहराम मच गया। जानकारी के मुताबिक क्षेत्र के बरांव गांव निवासी गणेश प्रसाद केसरवानी का बेटा शिवम केसरवानी 22 वर्ष बीते कई वर्षों से किसी भी शुभ अवसर पर लाइट व साउंड बांधने का काम करता है। ऑर्डर मिलने पर सोमवार सुबह गांव के ही साथी राहुल वर्मा 21 वर्ष पुत्र लाल प्रताप को साथ लेकर घर से 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित बरइयवा चौराहे पर दुर्गा पंडाल में लाउडस्पीकर व लाइट बांधने के लिए गया था। जहां दोनों युवक ऊपर चढ़कर लाउडस्पीकर बांध रहे थे ,तभी ऊपर से गुजरी हाई वोल्टेज बिजली तार की चपेटा में आ गए । जहां एक साथ दोनों युवकों को करंट लगने से नीचे गिर पड़े। जिसे देख पंडाल पास उपस्थित लोगों में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। वही लोगों ने आनन-फानन में दोनों युवकों को उपचार के लिए जिले के अस्पताल में ले गए जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। घटना के लगभग 4 घंटे बाद दोनों युवकों का शव एक साथ बरांव गांव पहुंचा तो समूचे गांव में शोक की लहर दौड़ पड़ी। दोनों परिवार के परिजन दहाड़ मार कर रोने पीटने लगे। सूचना होने पर थाना प्रभारी विश्वजीत सिंह पुलिस फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे। इसी बीच आक्रोशित परिजन व ग्रामीणों ने शव मैजिक पर लादकर सड़क जाम करने के लिए चल पडे। थाना प्रभारी ने लोगों को शांत कराना चाहा लेकिन आक्रोशित लोगों ने एक नहीं मानी और कौवा बाजार में पहुंचकर कोहडार वाया करछना मार्ग पर शव रखकर चक्का जाम कर दिया। गणेश प्रसाद केसरवानी घर के सामने बरांव बाजार में फल फूल की दुकान खोल रखी है। उनके 6 बेटा व 2 बेटियां हैं। बेटों ने शिवम केसरवानी चौथे नंबर का लड़का था। शिवम घर पर ही लाइट साउंड व डेकोरेशन की दुकान खोलकर चलाता था। साथ ही किसी भी शुभ अवसर पर लाइट साउंड बांधने का भी काम करता था।वहीं दूसरी तरफ लाल प्रताप वर्मा मजदूरी का काम करते हैं। उनके दो बेटों में राहुल वर्मा दूसरे नंबर का लड़का था। और वह घर पर ही रहता था।

मृतक युवकों की फाइल फोटो एवं शव को सड़क पर रखकर चक्का जाम करते हुए

आरोपित की गिरफ्तारी व आर्थिक मदद की मांग को लेकर किया गया चक्का जाम

करंट लगने से यूवको की हुई मौत से आक्रोशित परिजन व ग्रामीणों ने आरोपी की गिरफ्तारी व आर्थिक मदद की मांग करते हुए कौवा बाजार में कोहडार वाया करछना मार्ग पर शव रखकर चक्का जाम कर दिया। 3 घंटे तक रहे चक्का की वजह से राहगीरों को काफी दिक्कत उठानी पड़ी । पीड़ित परिजनों के द्वारा आरोपित किया गया कि कार्यक्रम आयोजक दिनेश केसरवानी के द्वारा जबरन लाउडस्पीकर ऊपर से गुजरे हाई वोल्टेज बिजली के तार के पास बांधने के लिए मजबूर किया गया। जिसके कारण यह घटना घटित हुई। सूचना होने पर एसडीएम रेनू सिंह क्षेत्राधिकारी अजीत सिंह चौहान, तहसीलदार रमेश चंद्र पांडे, नायब तहसीलदार मौके पर पहुंचे। जहां पीड़ित परिजनों को आर्थिक मदद के साथ हरसंभव मदद करने का आश्वासन देते हुए जाम को छुड़वाया गया। थाना प्रभारी विश्वजीत सिंह ने बताया कि मृतक के भाई राजा केसरवानी के तहरीर पर दिनेश केसरवानी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।

न्यूज झरोखा

पशु लादकर जा रहे चार अभियुक्तों को खीरी पुलिस ने किया गिरफ्तार,भेजा जेल

रत्योरा। खीरी पुलिस ने क्रूरता पूर्वक एक वाहन में लाद कर ले जा रहे पांच अदद पशुओं समेत चार अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया। थाना प्रभारी खीरी अनिल कुमार वर्मा के नेतृत्व में डाक बंगला कल्याणपुर रोड से थोड़ी दूर पर क्रूरता पूर्वक पशुओं को लाद कर जा रहे आरोपियों क्रमशः चांद बाबू पुत्र गुलजार, मोबीन पुत्र नन्हे, हुसैन अहमद पुत्र खलील अहमद निवासीगण सेमरी जारी बाजार थाना कौंधियारा जनपद प्रयागराज व इम्तियाज अली पुत्र रजा निवासी डिहार थाना खीरी जनपद प्रयागराज के कब्जे से एक अदद मैजिक वाहन में क्रूरता पूर्वक लाद कर ले जाए जा रहे तीन अदद भैंस, एक राशि पड़वा, एक राशि पाडिया कुल 5 राशि गोवंश बरामद कर अभियुक्तों का चालान कर दिया। उपरोक्त अभियुक्तों को गिरफ्तार करने वाली टीम में उपनिरीक्षक अनुराग वर्मा, हेड कांस्टेबल कृष्ण पाल सिंह, कांस्टेबल नरेश चंद्र शामिल रहे। इसी प्रकार की पुलिस ने 3 नफर अभियुक्तों का 151, 107, 16 सीआरपीसी में कार्यवाही कर चालान किया है। जिन अभियुक्तों का चालान किया गया है उनमें लव कुश पुत्र गेंदालाल, शेखर लाल उर्फ जोखर पुत्र बब्बू, नीरज पुत्र इंद्रजीत निवासी ग्राम दोबहट थाना खीरी जनपद प्रयागराज शामिल है। इन अभियुक्तों को गिरफ्तार करने वाली टीम में उप निरीक्षक विनोद कुमार, कांस्टेबल अंकित यादव, कांस्टेबल यतेंद्र कुमार शामिल रहे।

बच्चा चोरी की अफवाह में ग्रामीणों ने 2 महिलाओं को पकड़ा पुलिस को सौंपा

उतरांव। उतरांव थाना क्षेत्र के बरेठी माधोराम का पूरा में बच्चा चोरी की अफवाह में एकत्रित ग्रामीणों ने 2 महिलाओं को पकड़ लिया। वही ग्रामीणों ने 112 नंबर पुलिस को सूचना दिया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने महिला देखकर थाने में फोन कर महिला सिपाही बुलवाकर दोनों महिलाओं को थाने ले आई। पूछताछ में पता चला कि भदोही जिले की दोनों महिलाएं मांगने वाली थी।जो दूसरे जिले से आकर गांव-गांव में मागकर अपने जीवन यापन करती हैं। बच्चा चोरी की अफवाह में इन दिनों ग्रामीण सख्त हो चुके हैं।वहीं आशंका होने पर ग्रामीण दपोच ले रहे हैं फिर हाल महिलाओं से पुलिस पूछताछ कर रही है। वही बरेठी बाजार में क्षेत्र के आधा दर्जन से ज्यादा ग्रामीणों की भारी भीड़ जुटी रही।

बड़ौदा यूपी बैंक ने चौपाल लगाकर समूह की महिलाओं को गणित संबंधी जानकारी दी

सिरसा। मेजा प्रयागराज बड़ौदा यूपी बैंक ने सोमवार को क्षेत्र के गंगा पब्लिक स्कूल छतवां सिरसा के परिसर में ग्राम चौपाल लगाकर समूह की महिलाओं को सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारी दिया गया। मैनेजर प्रथम अजय ताम्रकर और द्वितीय मैनेजर आशुतोष ने कहा कि जन सुरक्षा योजनाओं हेतु संतृप्तिकरण भारत सत्कार की एक गारंटीयुक्त पेंशन योजना अटल पेंशन योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना एवं केसीसी किसान क्रेडिट ब्याज के बारे मे जानकारी दिया गया। बैंक द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारी समूह महिलाओं को नहीं है इसलिए चौपाल लगाकर विभिन्न लाभकारी योजनाओं की से अवगत कराना हमारा कर्तव्य है योजनाओं का लाभ आवश्यक कागजात उपलब्ध कराकर आसानी से महिला समूह लाभ उठा सकती हैं। इस मौके पर बैंक कर्मी केशियर आभा, बैंक सहयोगी ज्ञान चन्द्र, राजेश कुमार, बैंक सखी श्रीमती शिलोत्तमा, सपना निषाद समूह सखी, ललिता साही समूह सखी, राजकुमारी समूह सखी,शंकर लाल कोटेदार,मनोज यादव,दीपक कुमार और आजीविका स्वयं सहायता समूह के महिलाओं उपस्थित रही।

परिषदीय विद्यालय का ताला काटकर हजारों की चोरी

शंकरगढ़। विकास खंड शंकरगढ़ के उच्च प्राथमिक विद्यालय सुरवल साहनी का ताला काटकर चोरों ने हजारों रुपये के सामान पर हाथ साफ कर दिया। चोरी की जानकारी सोमवार की सुबह उस समय हुई, जब स्टाफ स्कूल पहुंचा तो स्कूल का गेट खुला था। ताला नीचे पड़ा था और गेट की कुंडी कटी हुई थी।अंदर रखी दोनों आलमारियों का ताला टूटा था और सभी सामान अस्त-व्यस्त थे। पुलिस चौकी प्रभारी नारीबारी को दी गई तहरीर में सहायक अध्यापक सरिता सिंह ने बताया कि बीती रात उच्च प्राथमिक विद्यालय सुरवल साहनी में ताला काटकर चोरों ने हजारों रुपये के सामान पर हाथ साफ कर दिया है। चोरी गई सामानों में थाली, गिलास, भगोना, केतली, चाय की गिलास, ट्रे, कड़ाही, आवश्यक रजिस्टर, स्पीकर, चार्जर, कुर्सियां, चटाई, चावल आदि चोर उठा ले गए हैं। नारीबारी चौकी पुलिस का कहना है कि विद्यालय में चोरी की तहरीर मिली है। मामले की जांच की जा रही है।

नशे के दलदल में फंसे युवाओं पर एक अभियान, नशा मुक्ति अभियान

बारा। बारा विधानसभा क्षेत्र के युवाओं में इस दौरान नशे की बुरी लत लगती जा रही है। उसका सबसे बड़ा कारण यह है कि भागदौड़ व व्यस्तता भरी दिनचर्या में माता पिता अपने बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाते हैं। बच्चे जब छोटे होते हैं तो ये एक कच्चे घड़े के समान होते हैं। जिस समाज और दिशा का संस्कार मिलेगा, वही उनकी आदतों में शुमार हो जायेगा। इसी कारण नए उम्र के युवाओं को नशे की ऐसी गन्दी लत लगती जा रही है कि उन्हें समझ में ही नहीं आ रहा है कि यह भविष्य के लिए कितना घातक सिद्ध होगा। पहले तो गुटखा, तम्बाकू और शराब का नशा था,लेकिन अब तो स्मैक जैसी नशे की लत युवाओं में लगती जा रही है।इसके लिए समाज के हर समझदार व्यक्ति को अपने क्षेत्र में स्मैक की बिक्री पर रोक लगाने की आवश्यकता होगी। प्रयाग संगम सेवा संस्थान के अध्यक्ष एवं सभी पदाधिकारियों ने युवाओं से अनुरोध किया है कि दादागीरी और कुसंगति के चक्कर में गलत लोगों से दूरी बनाकर रहें, ये लोग केवल आपको बर्बाद करने पर तुले हुए हैं और जब आप इस दलदल में फंस जाओगे तो आपका साथ देने वाले सब भाग खड़े होंगे। क्षेत्र के कितने युवाओं की जिंदगी नशीले पदार्थों के उपयोग से बर्बाद हो चुकी है।इससे हम सभी को बहुत सतर्क रहने की जरूरत है।

ससुराल से घर लौट रहे व्यक्ति का नाले में पड़ा मिला शव

हत्या व मार्ग दुर्घटना में उलझी घटना, पुलिस ने पीएम के लिए भेजा शव

रत्योरा। कोरांव थाना क्षेत्र के बेलवनिया गांव में ससुराल से लौट रहे एक व्यक्ति का नाले में शव पड़ा मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। हादसा बीती देर रात का बताया जा रहा है। सुबह जब ग्रामीणों ने नाले में शव पड़ा देखा तो पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को नाले से बाहर निकलवाया और पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। जानकारी के मुताबिक लवकुश पुत्र प्रेमनारायण उर्फ पप्पू (24) निवासी बैदवार थाना कोरांव अपनी ससुराल बेलहट थाना कोरांव गया हुआ था। जहां से वह रविवार को दोपहर में भोजन करने के उपरांत अपने गांव बैदवार के लिए चला था।रास्ते में उसे कौन लोग मिले इस बात की परिजनों को कोई जानकारी नहीं है। सुबह बेलवनिया गांव के नाले में लवकुश का शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। लवकुश अपनी पत्नी शिवकुमारी से यह कहकर चला था कि 3 दिन बाद पुनः आऊंगा तब बच्चों समेत तुमको घर लेकर चलूंगा, इसके बाद लवकुश परदेस जाने की भी योजना बना रखी थी। लवकुश के पिता व माता केसरी देवी दोनों का निधन हो चुका है। यह अपनी मां-बाप का इकलौता संतान था। मृतक लवकुश को दो पुत्री व एक पुत्र का पिता था। बड़ी बेटी प्रिया 5 वर्ष, पुत्र शिवांश 3 वर्ष, श्रुति 1 वर्ष की है। लवकुश की मौत हत्या व मार्ग दुर्घटना में उलझी हुई है। वह अपने ससुराल से भोजन करने के उपरांत होशो हवास में चला था। रास्ते में वह मार्ग दुर्घटना का शिकार हो गया अथवा किसी ने अनहोनी घटना को अंजाम दिया, यह तो पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही स्पष्ट हो सकेगा।

नौ देशी बमों के साथ तीन सगे भाइयों सहित चार गिरफ्तार ,भेजे गए जेल

मऊआइमा। प्रतिबंधित मांस का धंधा करने वालों को मऊआइमा पुलिस ने घेरा बंदी करके चार को गिरफ्तार कर लिया। जिनसे झोलों में नौ देशी बम बरामद हुआ। पुलिस ने चारों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जेल भेज दिया। मऊआइमा क्षेत्र के ग्राम चकश्याम उर्फ पूरे हिंचा निवासी चार लोग बागी मेला मैदान के पास संदिग्ध हालात में खडे थे। गश्त पर निकली पुलिस को देख कर भागने लगे। पुलिस ने दौडा कर चारों को गिरफ्तार कर उनके पास से झोलों में नौ देशी बम बरामद हुआ। थाने लाकर पुलिस ने जब पूछताछ की तो एक ने अपना नाम सरताज ,दूसरे ने दिलशाद , तीसरे ने अपना नाम शादाब तीनों के पिता का नाम रईस था। तीनों के पास से दो दो देशी बम झोलों में मिले । जबकि चौथे ने अपना नाम आशिक पुत्र लईक अहमद बताया उसके पास तीन देशी बम मिले। पुलिस के अनुसार चारों ने बताया कि वह प्रतिबंधित पशुओं को पकड कर वध कर उसका मांस बेचते हैं। वह बम अपनी आत्म सुरक्षा के लिए रखे थे। पुलिस ने चारों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जेल भेज दिया।

ट्रक से टकराकर बाइक सवार की हुई मौत, मचा कोहराम

बारा। बारा तहसील क्षेत्र के गन्ने पुलिस चौकी के पास रीवा-प्रयागराज हाइवे पर ट्रक से टक्कर लगने से बाइक सवार युवक की मौत हो गई,जबकि पीछे बैठा युवक गम्भीर रूप से जख्मी हो गया।पुलिस ने जीवित होने की उम्मीद से अस्पताल भेजा, लेकिन युवक की जान बचाई नहीं जा सकी।सूचना मिलने पर परिजन भी मौके पर पहुंच गए।परिजन बदहवास होकर बिलखने लगे।अमित सिंह उर्फ गुन्नु (22वर्ष)पुत्र त्रिवेणी प्रसाद सिंह अपने मित्र गन्ने पहाड़ निवासी समयलाल आदिवासी के बेटे कल्लू (26वर्ष) के साथ बाइक पर सवार होकर गन्ने की ओर जा रहा था।गन्ने चौकी से कुछ दूर पहले ही सड़क किनारे खड़े ट्रक से टकराकर सड़क पर छिटक गए और खून से लथपथ हो गए।बाइक भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई।चौकी पुलिस ने घायलों को उठाकर तत्काल अस्पताल भेजवाया।जहाँ डॉक्टरों ने अमित को मृत घोषित कर दिया, कल्लू का नाजुक हालत में उपचार चल रहा है। जहाँ इलाज के दौरान ही अगले दिन कल्लू ने भी दम तोड़ दिया। इस घटना से दोनों परिवार सदमे में डूबा हुआ है।ऐन त्यौहार के मौके पर अनहोनी से दोनों परिवारों की खुशियां छिन गई हैं।रा क्षेत्र के गन्ने पुलिस चौकी के पास रीवा-प्रयागराज हाइवे पर ट्रक से टक्कर लगने से बाइक सवार युवक की मौत हो गई,जबकि पीछे बैठा युवक गम्भीर रूप से जख्मी हो गया।पुलिस ने जीवित होने की उम्मीद से अस्पताल भेजा, लेकिन युवक की जान बचाई नहीं जा सकी।सूचना मिलने पर परिजन भी मौके पर पहुंच गए।परिजन बदहवास होकर बिलखने लगे।अमित सिंह उर्फ गुन्नु (22वर्ष)पुत्र त्रिवेणी प्रसाद सिंह अपने मित्र गन्ने पहाड़ निवासी समयलाल आदिवासी के बेटे कल्लू (26वर्ष) के साथ बाइक पर सवार होकर गन्ने की ओर जा रहा था।गन्ने चौकी से कुछ दूर पहले ही सड़क किनारे खड़े ट्रक से टकराकर सड़क पर छिटक गए और खून से लथपथ हो गए।बाइक भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई।चौकी पुलिस ने घायलों को उठाकर तत्काल अस्पताल भेजवाया।जहाँ डॉक्टरों ने अमित को मृत घोषित कर दिया, कल्लू का नाजुक हालत में उपचार चल रहा है। जहाँ इलाज के दौरान ही अगले दिन कल्लू ने भी दम तोड़ दिया। इस घटना से दोनों परिवार सदमे में डूबा हुआ है।ऐन त्यौहार के मौके पर अनहोनी से दोनों परिवारों की खुशियां छिन गई हैं।

धूमधाम से मनाया गया वर्ल्ड फार्मासिस्ट डे

सोरांव। सोरांव तहसील के सत्यम, शिवम फामेर्सी कॉलेज टिकरी में वर्ल्ड फार्मासिस्ट डे धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर कॉलेज में हेल्थ कैम्प, निबन्ध प्रतियोगिता, क्विज कॉम्पटीशन,पोस्टर और रंगोली प्रेजेंटेशन एवं फार्माफ्यूचर टॉपिक पर डिबेट प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता मे कई छात्र/छात्राएं ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। इस दौरान सत्यम शिवम ग्रुप के चेयरमैन संजय शुक्ल ने फार्मासिस्ट दिवस मनाये जाने के उद्देश्य पर विस्तार से चर्चा किए। तथा सभी छात्र/छात्राएं से अधिक से अधिक ज्ञान अर्जित करने पर जोर दिया। वहीं प्रधानाचार्य गिरीश चन्द्र तिवारी ने सभी छात्र/छात्राओं से फामेर्सी पेशे/व्यापार के प्रति अनुशासित,ईमानदार एवं कर्तव्य निष्ठ रहने का भी पाठ पढ़ाया। तथा फामेर्सी कैरियर के प्रति विशेष उद्बोधन दिया। कार्यक्रम का संचालन कॉलेज के अध्यापक प्रीतम मिश्र द्वारा किया गया। संचालन के दौरान बताया गया कि 1912 से रविवार के दिन इंटरनेशनल फार्मास्यूटिकल फेडरेशन की स्थापना हुई थी। इसी कारण 25 सितम्बर को यह दिवस मनाया जाता है । पहली बार सन 2009 में इस्ताम्बुल(तुर्की) में मनाया गया था। फामेर्सी कॉउन्सिल ऑफ इण्डिया द्वारा पूरे देश में इस कार्यक्रम को हर वर्ष नयी थीम के साथ मनाया जाता है।इस वर्ष के थीम फामेर्सी यूनाइटेड इन एक्शन फॉर ए हैल्थियर वर्ल्ड को भी बताया गया। अध्यापक दीपक यादव ने कोरोना काल में फार्मासिस्ट के योगदान और इंडस्ट्री में फार्मासिस्ट के रोल को विस्तार से समझाया। अध्यापकगण अनिल मिश्र,अभिषेक शुक्ल आदि उपस्थित रहे। हेल्थ कैम्प के आयोजन में पास आउट छात्र सौरभ यादव, निखिल केसरवानी,शमशुद्दीन, चाँद अली उपस्थित रहे। सभी छात्र व छात्राओं में खुशी का माहौल रहा।

आरके ग्रुप ऑफ फार्मेसी के छात्रों ने किया रक्तदान

नैनी। आरके ग्रुप आफ इंस्टीट्यूशंस के तत्वाधान में कॉलेज आफ फार्मेर्सीमें विश्व फार्मासिस्ट दिवस पर रक्त दान सहित विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. विवेकानंद मिश्रा सीएमएस चाका, निदेशक इं. आशीष त्रिपाठी, फामेर्सी प्राचार्य डॉ. सीएस सिंह, विधि प्राचार्य डॉ. मो. जफर ने दीप प्रज्वलन एवं मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम की शुरूआत की। निदेशक ने मुख्य अतिथि को अंगवस्त्र एवं बुके देकर उनका स्वागत किया गया। इसके बाद ब्लड बैंक प्रयागराज से आई हुई मेडिकल टीम की देख-रेख में संस्थान के छात्र-छात्राओं एवं कर्मचारियों ने कुल 11 यूनिट रक्त का दान किया गया। फामेर्सी छात्र छात्राओं द्वारा कैंडल लाईटिंग, रंगोली, पोस्टर प्रजेंटेशन, फेस पेंटिंग आदि कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में रजिस्ट्रार अनुज शुक्ला, डॉ. कार्तिकेय मिश्रा, डॉ. दिलीप सिंह, डॉ. सुरेन्द्र सिंह, डॉ. पंकज चतुर्वेदी, नेहा मिश्रा, हर्षिता श्रीवास्तव, अर्पिता यादव, अमन कुमार कुशवाहा, आरके पाठक सहित अन्य मौजूद रहे।

शुआट्स : फार्मेसी विभाग ने मनाया विश्व फार्मासिस्ट दिवस

नैनी। शुआट्स के फामेर्सी विभाग में विश्व फार्मासिस्ट दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का विषय ह्यएक स्वस्थ दुनिया के लिए कार्रवाई में फामेर्सी व्यवसायज्ञ रहा। मुख्य अतिथि प्रयागराज के औषधि निरीक्षक संतोष कुमार रहे। उन्होने फामेर्सी पेशे में डिग्री प्राप्त करने के बाद उपलब्ध अवसरों के बारे में चर्चा की। विभागाध्यक्ष प्रो. अमिता वर्मा ने सभी का स्वागत किया। स्वास्थ्य संकाय की सह अध्यक्ष डॉ. शीजा मेथ्यु ने बताया कि फार्मासिस्ट की जिम्मेदारी सिर्फ दवाएं बांटने तक ही सीमित नहीं बल्कि दवाओं की खोज करना, उनकी गुणवत्ता की जांच करना, मरीज और डॉक्टर को दवाई के बारे में उचित सलाह देना, आदि भी शामिल है। इस मौके पर शपथ ग्रहण समारोह, विषय अनुरूप निबंध लेखन एवं क्विज प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में डॉ. रजनी श्रीवास्तव, डॉ. नीतू सोनी, डॉ. पुष्पराज गुप्ता, डॉ. दानिश अहमद, डॉ. दीपिका सिंह, डॉ. दिनेश कुमार पटेल, डॉ. महफूजउर रहमान, अमोल कुमार, कनिका पटेल, अनूप मसीह, मो. इब्राहीम खान, विनय कुमार यादव आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम का समापन पुरस्कार वितरण से हुआ।

शारदीय नवरात्र पर सोमवार को पंडालों में विधि विधान से स्थापित हुई दुर्गा प्रतिमाएं

अखंड भारत संदेश

करछना। शारदीय नवरात्र के प्रथम सोमवार के दिन नरैना गांव के नारायणी धाम स्थित प्राचीन दुर्गा देवी शक्तिपीठ पर चंडी यज्ञ अनुष्ठान आचार्य जनो की मौजूदगी में वैदिक मंत्रोचार के साथ कलश स्थापन के साथ शुरू हुआ । कार्यक्रम के संयोजक पं राम कैलाश शुक्ल ने बताया कि नवरात्र के प्रथम दिन मां भगवती का भव्य रूप से श्रृगांर किया गया। और विधि विधान से चंडी यज्ञ अनुष्ठान का आचार्य जनों की मौजूदगी में जन कल्याण हेतु मंत्रों का जाप किया जा रहा है। इसी प्रकार नव दुर्गा जागरण कमेटी भडेवरा की ओर से पूजा पंडाल में मां दुर्गा की प्रतिमा स्थापित की गई । और पुरोहित की मौजूदगी में वैदिक मंत्रोचार के साथ दुर्गा देवी की प्राण प्रतिष्ठा की गई। वही सायं कालीन में सामूहिक रूप से मां भगवती की आरती भी की गई । नव दुर्गा जागरण के व्यवस्थाको में साकेत शुक्ल उत्कर्ष शुक्ल विष्णु देव शर्मा रोहित पांडेय गौरव शर्मा अतुल पांडेय आयुष शर्मा अनुज पांडेय रजनीश शर्मा प्रशांत शर्मा आदि लोगों की ओर से मां भगवती की पूजा अर्चना की जा रही है। वहीं रात्रि में जागरण किया जा रहा है।

अंबे तू है जगदंबे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली...

जंघई। नवरात्रि के प्रथम दिवस पर मां विंध्यवासिनी भक्त मंडल साईंवाटिका चनेथू शरीफाबाद के पंडाल में मां शैलपुत्री का पूजन अर्चन किया गया। आचार्य धर्मेंद्र मिश्रा द्वारा वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच प्राण प्रतिष्ठा कराई गई तत्पश्चात पूजन अर्चन आरती भक्तों द्वारा किया गया।इस अवसर संकल्प कर्ता रोहित दुबे, आयोजनकर्ता गण नारायण दुबे, जितेन्द्र दुबे, दिलीप दुबे, अनुज, बिग्गू, अंबुज, अक्षत, अभिषेक, रिशु, रवि, नितिन, दीपक, निशांत, शिवम, शिवांश, बऊ, अंश, सौरभ सहित तमाम भक्तगण मौजूद रहे।

शारदीय नवरात्रि में भक्तिरस से सराबोर हुआ प्रतापपुर क्षेत्र

प्रतापपुर। क्षेत्र के चौका, पतवां, पतैंया, जलालपुर, नेदुला, रस्तीपुर, सोरें, खखैचा, बजती, अनुवां, भेलखा, बरियांवा, वारी, बेला सरायममरेज, मियांपुर, सेमरी, प्रतापपुर, नेवादा बेला, चनेथू, चंपापुर, महरछा, मठोही, पिलखिनी, भूलेंद्र, झारी, जंघई आदि गांवों में शारदीय नवरात्र मे भव्य पंडालों एवं घरों मे देवी माँ की मूर्ति एवं कलश स्थापना मंत्रोच्चारण के बीच किया गया स्थापना के साथ माँ के जयकारों के बीच पूजन अर्चन आरती किया जा रहा है जिसमें भक्तों की भारी भीड़ उमड़ रही है। इसी क्रम मे नवदुर्गा पूजा समिति चनेथू के पंडाल में आचार्य धरणीधर शुक्ला द्वारा विधि विधान से वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच कलश स्थापना एवं मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा कराई गई। जिसमें संकल्प कर्ता विनय शुक्ला, राजेश मिश्रा, दयाशंकर मौर्य, शिवमणि शुक्ला, महेश त्रिपाठी, अंबुज शुक्ला, अविनाश मिश्र, गौरव शुक्ला, युवराज शुक्ला, आदर्श शुक्ला, सूरज शुक्ला, सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

जंघई रामलीला में सीता स्वयंवर धनुष यज्ञ का मंचन

जंघई। राम जानकी मंदिर जंघई प्रांगण में आयोजित रामलीला मंचन में सीता स्वयंवर धनुष यज्ञ का मंचन किया गया। स्वयंवर में देश-विदेश के राजा शामिल हुए सभी ने शिवजी के धनुष को उठाने की कोशिश की, लेकिन उठाना तो दूर हिला तक न सके। बेटी सीता का विवाह नहीं होता देख राजा जनक परेशान होकर गुस्से में आकर उन्होंने कहा कि मुझे नहीं मालूम था पृथ्वी वीरों से खाली हो चुकी है। कठोर वचनों से अपमान महसूस कर लक्ष्मण खड़े हुए और कुछ बोलने को हुए तो भगवान राम ने जनक को पिता का स्थान देकर शांत होकर बैठने को कहा।वहीं गुरु की आज्ञा पाकर भगवान राम ने पलक झपकते धनुष को उठा लिया और प्रत्यंचा खींचते ही तेज गर्जना के साथ धनुष टूट गया धनुष टूटने के बाद सीता ने उनके गले में वरमाला डाल दी चारों ओर से फूलों की वर्षा होने लगी।महंत चंद्रमा दास महराज के मार्गदर्शन में चल रही रामलीला कमेटी के सदस्यों में शीतला प्रसाद पाठक, राजू सिंह, सभाजीत पांडेय, पुलथी यादव, लोलारख यादव, आचार्य संदीप पांडेय, अमित पाठक, सुजीत पाठक, किशन पाठक विहिप, सुरज दुबे, शैलेष पाठक, धीरज पांडेय, आदित्य, आयुष जायसवाल, नरेश प्रजापति आदि लोग उपस्थित रहे।

सार्वजनिक रामलीला का मुकुट पूजन संपन्न, आज से मंचन

नैनी। सार्वजनिक रामलीला समिति, पीएसी ग्राउंड नैनी में रविवार को विद्वान पंडितो विधि-विधान से भूमि पूजन बाद मुकुट पूजन कराया। मुकुट पूजन के दौरान मैदान में रामलीला मे अभिनय करने वाली पूरी टीम पदाधिकारी एवं स्थानीय लोग मौजूद रहे। इस दौरान मयार्दा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम के जयकारे लगे। समिति के मुख्य संरक्षक विनीत पांडेय एवं अध्यक्ष राकेश जायसवाल, ने बताया कि 26 सितंबर को शरदीय नवरात्र के पहले दिन शाम 7:30 बजे से भव्य रामलीला का मंचन आरंभ होगा।मुकुट पूजन में डायरेक्ट आलोक नायर, नयन कुमार कुशवाहा, दिलीप केसरवानी, धीरू,आकांक्षा जायसवाल, अजय मिश्रा, हरे कृष्ण तिवारी, समर बहादुर सिंह, सिद्धार्थ पांडेय, हिमांशु, धीरेंद्र यादव, पवन यादव, मनोज सिंह, शुभम तिवारी, विजय सिंह, प्रमोद सिंह, सुरेश पटेल आदि मौजूद रहे।

मुकुट पूजन से शुरू हुई मऊआइमा की ऐतिहासिक रामलीला

मऊआइमा। मऊआइमा कस्बा के सदर बाजार से सोमवार को ऐतिहासिक कर्ण घोड़ा शोभा यात्रा निकाल कर मऊआइमा के विजय दशमी उत्सव की शुरूआत की गई शोभा यात्रा चुनौटा कुंआ,गंजिया बाजार,पक्का तालाब होते हुए रामबाग स्थित रामलीला मैदान में पहुंची जहाँ विधान परिषद सुरेंद्र चौधरी की अगुवाई में रामलीला कमेटी के कार्यकताओं एवं पदाधिकारियों द्वारा मुकुट पूजन कर ऐतिहासिक रामलीला का शुभारम्भ किया गयो संरक्षक निमिष खत्री,अध्यक्ष सचिन साहू,महामंत्री रमेश सोनी,मेला प्रबंधक देव नारायण मौर्य,प्रदीप केसरवानी,बिंदेश्वरी केसरवानी,विजय साहू,संजय साहू समेत भारी संख्या में लोग मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

जेपी सिंह उच्चतर माध्यमिक विद्यालय को दसवीं तक की मान्यता मिलने से हर्ष

रत्योरा। जेपी सिंह उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मानपुर बड़ोखर को कक्षा 6 से दसवीं तक की मान्यता मिलने पर क्षेत्रीय लोगों में हर्ष देखा जा रहा है। ज्ञातव्य हो कि लंबे अरसे से यह विद्यालय क्षेत्र में उत्कृष्ट शिक्षण केंद्र का माध्यम बना हुआ है। जिसको देखते हुए शासन की ओर से कक्षा 6 से लेकर 10वीं तक की मान्यता मिलने के बाद विद्यालय परिवार एवं छात्र छात्राओं में हर्ष का माहौल देखा जा रहा है। विद्यालय के प्रबंधक विकास सिंह व प्रधानाचार्य प्रशांत सिंह मान्यता मिलने के बाद छात्र छात्राओं को शुभकामनाएं देते हुए क्षेत्रीय अभिभावकों से अपील की है कि अब विद्यालय में जिस तरीके से उत्कृष्ट शिक्षा क्षेत्रीय बच्चों को मुहैया कराई जाती रही है। उसी प्रकार से अनवरत शिक्षण पद्धति का कार्य चलता रहेगा। क्षेत्रीय बच्चों को अपने क्षेत्र में ही सरल व सुगम तरीके से बेहतर शिक्षा मिल सकेगी।

स्वच्छ गंगा मिशन का काम आंखों में धूल झोंकने वाला, पैसे बांटने की मशीन बनकर रह गया है मिशन

अखंड भारत संदेश

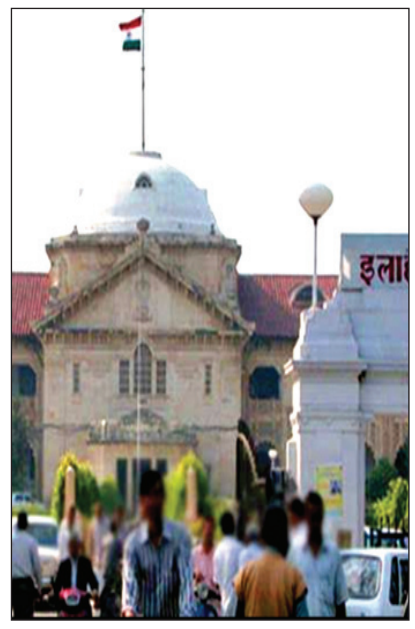

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने गंगा प्रदूषण के मामले में दाखिल जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी यानी नेशनल मिशन फॉर क्लीन गंगा) पर गंभीर टिप्पणी की है। कोर्ट ने कहा कि मिशन का काम आंखों को धोखा देने वाला है। यह मिशन केवल पैसा बांटने की मशीन बनकर रह गया है। इसके द्वारा बांटे गए पैसे से गंगा की सफाई हो रही है या नहीं, इसकी न तो निगरानी हो रही है और न ही जमीनी स्तर पर कोई काम दिख रहा है। मुख्य न्यायमूर्ति राजेश बिंदल की अगुवाई वाली खंडपीठ ने सोमवार को सुनवाई के दौरान मिशन की ओर से बांटे गए बजट का ब्योरा जाना। पूछा कि गंगा सफाई के लिए खर्च किए गए करोड़ों रुपये के बजट से काम हुआ

या नहीं तो कोर्ट को कोई जवाब नहीं मिला। इसकेपूर्व सुनवाई शुरू होते ही कोर्ट ने क्रमशः एनएमसीजी, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, यूपी प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, जल निगम ग्रामीण एवं शहरी, नगर निगम प्रयागराज सहित कई विभागों की ओर से दाखिल किए गए हलफनामे को रिकॉर्ड पर लिया और बारी-बारी से उस पर जानकारी मांगी।लेकिन, कोर्ट उनके जवाब से संतुष्ट नहीं हुई। कोर्ट ने पूछा कि इतनी बड़ी परियोजना के लिए पर्यावरण इंजीनियर है या नहीं। इस पर जवाब दिया गया कि एनएमसीजी में काम कर रहे सारे अधिकारी पर्यावरण इंजीनियर ही हैं। उनकी सहमति के बिना कोई भी परियोजना पास नहीं होती है। इस पर कोर्ट ने पूछा कि परियोजनाओं की निगरानी कैसे करते हैं तो इस पर कोई जवाब नहीं आया।

सांप के काटने से विवाहिता की मौत, मायके वालों ने मामले को बताया संदिग्ध

मेजा रोड। क्षेत्र के भसुन्दर खुर्द गांव मे सांप के काटने से एक विवाहिता की मौत हो गई। सूचना पर मायके वाले पंहुच गए और मायके वालों ने मामला संदिग्ध होने की बात कही। सूचना पर पंहुची मेजा पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। महिला की मौत से परिजनों में कोहराम मचा हुआ है। मिली जानकारी के अनुसार मेजा थाना क्षेत्र के भसुंदर खुर्द गांव निवासी राकेश यादव की पत्नी अंजू यादव (24) की सांप के काटने से मौत हो गई।

सूचना पर मायके वाले भी पंहुच गए और मामला संदिग्ध होने की बात कही। जिसकी सुचना पर मेजारोड चौकी के दरोगा सचिन देव वर्मा ने पुलिस टीम के साथ पंहुचकर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। महिला का मायका मेजा थाना क्षेत्र के कुर्की कला गांव मे है। तीन वर्ष पूर्व शादी हुई थी। थाना प्रभारी मेजा धीरेन्द्र सिंह ने बताया कि सांप के काटने से महिला की मौत हुई है। मायके वाले मामला संदिग्ध मान रहे थे जिसको लेकर पोस्टमार्टम के लिए शव को भेजा गया है।

डीआईओएस कार्यालय का वरिष्ठ लिपिक घूस लेते रंगे हाथों हुआ गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। विजिलेंस ने जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय में तैनात बाबू रामकृष्ण मिश्रा को 10 हजार रुपये की रिश्वत लेते रंगेहाथ गिरफ्तार कर लिया। आरोप है कि उसने अध्यापिका की पदोन्नति संबंधी फाइल आगे बढ़ाने के लिए रिश्वत ली। आरोपी के खिलाफ भ्रष्टाचार अधिनियम के तहत केस दर्ज किया गया है। गार्गी श्रीवास्तव लूकरगंज स्थित विद्यावती दरबारी बालिका इंटर कॉलेज में अध्यापिका हैं। उन्होंने एसपी विजिलेंस को शिकायती पत्र देकर बताया था कि उनकी पदोन्नति अंग्रेजी प्रवक्ता के पद पर होनी है। आरोप लगाया कि पदोन्नति संबंधी फाइल संयुक्त शिक्षा निदेशक के समक्ष भेजने के लिए डीआईओएस कार्यालय में तैनात वरिष्ठ सहायक रामकृष्ण मिश्रा 10 हजार रुपये की रिश्वत मांग रहा है। प्रारंभिक जांच पड़ताल में शिकायत सही मिलने पर विजिलेंस टीम ने आरोपी को पकड़ने के लिए जाल बिछाया। इसके बाद सोमवार दोपहर में शिक्षिका रुपये लेकर डीआईओएस कार्यालय में आरोपी बाबू के पास पहुंची। जैसे ही उसने नोट थामे, वहां मौजूद विजिलेंस टीम ने उसे पकड़ लिया। साथ ही उसके कब्जे से नोट भी बरामद कर लिए। इसके बाद उसके खिलाफ विजिलेंस थाने में मुकदमा दर्ज किया गया। विजिलेंस अफसरों ने बताया कि आरोपी को सिविल लाइंस थाने में रखा गया है। उसे मंगलवार को भ्रष्टाचार निवारण न्यायालय में पेश करने के लिए वाराणसी ले जाया जाएगा।

विजिलेंस की टीम ने दबोचा, नोट भी हुआ बरामद

कोई घूस मांगे तो इन नंबरों पर करें शिकायत

पुलिस अधीक्षक, विजिलेंस की ओर से अपील की गई है कि सरकारी अधिकारी या कर्मचारी रिश्वत की मांग करे तो इसकी शिकायत हेल्पलाइन पर की जा सकती है। हेल्पलाइन का नंबर 454404859, 9454401866 है।

बिजली विभाग के अधिकारियों की मनमानी ....

प्रतिनिधियों पर लादे जा रहें फर्जी मुकदमे, आक्रोश

विद्युत विच्छेदन के नाम पर हो रहे बवाल

रत्योरा। कोरांव क्षेत्र में बिजली विभाग के अधिकारियों की मनमानी को लेकर तनाव का माहौल देखा जा रहा है। बीते चौबीस सितंबर को एक जेई की मनमानी का आलम यह रहा कि विद्युत विच्छेदन के नाम पर कोसफरा में अपनी टीम के साथ पहुंचा और एक महिला को घर में अकेली देख उसके साथ अभद्रता करने लगा। सूचना पर गांव के ही जिला पंचायत सदस्य जिला महासचिव समाजवादी पार्टी सोमदत्त सिंह पटेल जब बीच बचाव करने पहुंचे तो उनसे भी हाथापाई करने लगा। महिला के साथ छेड़खानी करने का आरोप लगने वाले जेई ने खुद थाने पहुंचकर सरकारी कार्य में बाधा डालने लूट समेत कई धाराओं में जिला पंचायत सदस्य समेत चार लोगों के विरुद्ध मुकदमा पंजीकृत करा दिया। जबकि मामले में पीड़ित महिला के द्वारा भी पुलिस को तहरीर दी गई है। अभी तक मामला पंजीकृत नहीं हुआ है। जिससे तनाव की स्थिति बनी हुई है। कोरांव क्षेत्र में बिजली विभाग के मनमानी को लेकर वरिष्ठ भाजपा नेता जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति ग्रामीण विकास मंत्रालय भारत सरकार के सदस्य तुलसीदास राणा का कहना है कि लाइनमैन राजबली यादव गौरव केंद्र पर ही लगातार 30 वर्षों से तैनात है जो क्षेत्र में मनमानी कर रहा है। तार जर्जर हो चुके हैं, सामान उपलब्ध न होने से आए दिन बिजली के तार टूट कर गिरते रहते हैं। क्षेत्र में लंबे समय से तैनात लाइनमैन की गड़बड़ी से ही उपभोक्ताओं से विवाद होते हैं। उन्होंने कई वर्षों से तैनात जेई को हटाए जाने की मांग की है। इस बाबत जिला पंचायत सदस्य सोमदत्त सिंह पटेल ने कहा कि जब जनप्रतिनिधियों के ऊपर इस प्रकार से फर्जी मुकदमे लादे जाएंगे तो ग्रामीण गरीबों की समस्याओ को लेकर आवाज कौन बुलंद करेगा। उन्होंने मनमाने जेई के कार्यों की निंदा करते हुए प्रशासन से यथोचित कार्रवाई की मांग की है।

माता को पंडाल में भक्तों ने किया विराजमान भक्तों की माता रानी लेती रही परीक्षा

मेजा रोड। दुर्गा पूजा इस समय अपने चरम पर चल रही है और इसमें भक्ति के कई रंग देखे जा रहे हैं। छोटी मूर्तियां हों या बड़ी मूर्तियों के मॉडल,भक्तों की आस्था के जुनून के उदाहरण देखने को मिल रहे हैं। सोमवार को दुर्गा प्रतिमा स्थापना के दिन एक माता का भक्त ऐसा मिला, जो आपका दिल बरबस भक्ति के लिए प्रेरित कर सकती है। माता के भक्तों की आस्था के बीच हम आपको एक ऐसे मां भक्त के बारे में बता रहे हैं, जिसे देखकर आपका दिल पसीज जायेगा। सोमवार को दोपहर लगभग 3 बजे एक भक्त मां दुर्गा की प्रतिमा को मेजारोड की ओर से बाइक से लेकर आ रहा था कि रास्ते में सिरखिडी के ताल में बाइक का तेल खत्म हो गया और वह पैदल ही बाइक को खींच कर ले आ रहा था। तेज धूप, उमस भरी गर्मी, फिर भी वह भक्त माता की प्रतिमा को पैदल ही पेट्रोल टंकी तक खींच कर ले आया। जब इस पत्रकार ने उसे देखा तो उसकी मदद के लिए हाथ बढ़ाया।फिर क्या कुछ और भक्तों ने सहयोग किया और वह पेट्रोल टंकी तक आसानी से पहुंच गया और अपने गंतव्य स्थान को रवाना हो गया।इस मार्मिक दृश्य को देखकर सभी की आंखे माता और उस भक्त के लिए नम हो गई और बरबस मुंह से आवाज निकली जय माता दी।

विराजमान से पहले भक्तों की परीक्षा लेती माता रानी

सभी धर्मों की एकता दर्शाने को श्री युक्तेवार जी ने लिखी थी कैवल्य दर्शनम : स्वामी श्री योगी सत्यम

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। झूंसी स्थित क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान में इन दिनों अंतरराष्ट्रीय क्रियायोग गुरु स्वामी श्री योगी सत्यम जी ने क्रियायोग शिक्षा के दौरान आए हुए देश व विदेश के साधकों को ज्ञानावतार स्वामी श्री युक्तेश्वर गिरी द्वारा लिखी पुस्तक कैवल्य दर्शन के बारे में साधकों को बताए। तथा साधकों को बताया कि ज्ञानावतार श्री युक्तेश्वर गिरी जी एक महान क्रियायोगी व उत्कृष्ट ज्योतिषी थे। वह श्री लाहिड़ी महाशय के शिष्य तथा श्री परमहंस योगानंद जी के गुरु थे। श्री युक्तेश्वर गिरी जी गुरु परंपरा का निर्वहन करते हुए श्री परमहंस योगानंद जी को क्रियायोग की दीक्षा दिए। तथा स्वामी जी ने यह भी बताया कि क्रियायोग के अभ्यास से स्पष्ट अनुभव होता है कि ब्रह्मांड की सभी रचना पावन व पवित्र है और इसको व्यक्त किया गया है एक पुस्तक के नाम से कैवल्य दर्शनम (द होली साइंस) जिसको स्वामी श्री युक्तेश्वर गिरी जी ने 1 महीने के अंदर लिखा। क्रियायोग ध्यान करने पर अनुभव होता है कि परमब्रह्म स्वयं दृश्य और अदृश्य जगत के रूप में विद्यमान हैं। परमब्रह्म का अस्तित्व पूर्ण और पवित्र है इसलिए क्रियायोग ध्यान की गहराई में बैठने पर अपवित्रता का बोध नहीं होता है, केवल पवित्रता का ही बोध होता है। ऐसे स्थितियों में पूरा ब्रह्मांड एक दूसरे से मिला हुआ है, जैसे आग के साथ गर्मी। इसके पश्चात स्वामी जी ने प्रतिदिन की तरह क्रियायोग का अभ्यास कराया तथा एक स्वस्थ जीवन जीने का संदेश दिया।

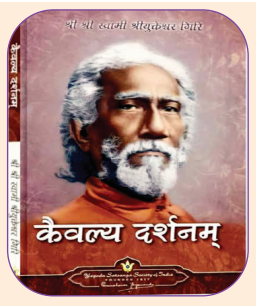

महावतार बाबाजी के आदेश पर श्री युक्तेश्वर गिरी जी ने एक मंथ से कम दिनों में लिख दिया था कैवल्य दर्शनम

विविधता में एकता, भारत की अमूल्य धरोहर : राजमणि कोल

वैजनाथ धर्मशाला में विधायक ने कार्यकताओं को किया सम्मानित

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। विविधता में एकता, भारत की अमूल्य धरोहर है। विभिन्न भाषा, जाति और धर्म के होने के बाद देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सभी को साथ लेकर चलते हुए सभी का विकास, उत्थान में शतत प्रयासरत हैं और विश्वपटल पर भारत का परचम बुलंद कर रहे हैं। यह बातें कोरांव विधायक राजमणि कोल ने कही। कोरांव विधायक, वैजनाथ धर्मशाला नारीबारी में द्यविविधता में एकताह्न सेवा पखवाड़ा के तहत आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। अध्यक्षता कर रहे जिलाध्यक्ष यमुनापार विभवनाथ भारती ने कहा, विभिन्न जाति, बोली और मजहम-धर्म के लोगों का एक साथ रहना, एक दूसरे के सुख-दुख में सहभागी बनना ही हमारी असली ताकत है। कार्यक्रम में अतिथियों एवं कार्यकताओं का आभार जिला उपाध्यक्ष राजेश्वरी तिवारी ने व्यक्त किया। पिछड़ा मोर्चा काशी क्षेत्र अध्यक्ष अश्वनी सिंह पटेल, जिला उपाध्यक्ष अशोक पांडेय, जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुर्वेदी, जिलाध्यक्ष पिछड़ा मोर्चा सुभाष सिंह पटेल, वरिष्ठ नेता चंद्र प्रकाश त्रिपाठी, जगदीश चंद्रा, नरसिंह केशरी, रामलखन गुप्ता, मंडल अध्यक्ष अंजनी लाल, जगत शुक्ला, वंदना सिंह, शिवप्रसाद केसरवानी, संजय पटेल ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया।संयोजक जिला महामंत्री विजय शंकर शुक्ल ने संचालन करते हुए अतिथियों का स्वागत किया। विधायक राजमणि कोल, जिलाध्यक्ष विभवनाथ भारती ने विभिन्न प्रांतों के कार्यकताओं को अंगवस्त्र भेंट किया। इस अवसर पर रत्नाकर सिंह पटेल, वीरेंद्र शुक्ल, प्रीतम पांडेय, नीरज केसरवानी, श्याम मिश्र, हरेकृष्ण द्विवेदी, वसंत लाल, आशीष सोनकर मौजूद रहे।

25 हजार के इनामी अभियुक्त को पुलिस ने गिरफ्तार कर भेज

करछना। थाना के भीरपुर रिपोर्टिंग पुलिस चौकी क्षेत्र अंतर्गत बीरपुर गांव निवासी मंगला प्रसाद पांडे की बीते 16 मार्च को जेल में बंद शातिर अपराधी राजा पांडे के द्वारा षड्यंत्र रच कर सहयोगियों के अपहरण कर देवरी कला गांव के सामने ले जाकर निर्मम हत्या करा दिया गया था। मामले में पुलिस ने घटना का अनावरण करते हुए उसके सहयोगियों को गिरफ्तार कर लिया था। जबकि घटना में शामिल अपराधी राजा पांडे का सहयोगी व साला राहुल दुवेदी पुत्र राजभर दुवेदी निवासी मसिका थाना औद्योगिक पुलिस के गिरफ्त से फरार चल रहा था। जिसकी गिरफ्तारी के लिए वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के द्वारा 25 हजार रुपए इनाम घोषित कर दिया गया था। सोमवार को करछना पुलिस व एसओजी यमुनापार की संयुक्त टीम ने मुखबिर की सूचना पर कचरी खाई गांव के पास वांछित चल रहे राहुल दुवेदी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। गिरफ्तारी की संयुक्त टीम में थाना प्रभारी विश्वजीत सिंह, उप निरीक्षक लवकुश कुमार, एसओजी यमुनापार उपनिरीक्षक रणजीत सिंह, हेड कांस्टेबल फिरोज खान, स्वतंत्र सिंह यादव मौजूद रहे।

पुलिस ने एक वांछित को गिरफ्तार कर भेजा जेल

मऊआइमा। प्रतिबंधित मांस के बिक्रेता एंव गौवंश के हत्यारे की तलाश में पुलिस जुटी थी। सोमवार को प्रयागराज - प्रतापगढ़ फोरलेन पर से गिरफ्तार कर लिया। जिसने अपना नाम मोहम्मद फहीम पुत्र नईम निवासी बागी बताया। जो एक माह से वांछित चला आ रहा था। पुलिस ने गौवंश के हत्यारे मोहम्मद फहीम को जेल भेज दिया।

खेल से होता है सामाजिक व शारीरिक विकास : विपेंद्र सिंह पटेल

अखंड भारत संदेश

फूलपुर। खेल हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। यह हमारे स्वास्थ्य के साथ-साथ हमारे नैसर्गिक विकास में भी सहायक सिद्ध होता है। खेल को हमेशा भाईचारे की भावना से खेलना चाहिए। जिससे आने वाली पीढ़ियां खेल विधा को आगे बढ़ाने के साथ ही भाईचारा को भी कायम रख सके। खेल से जहां शारीरिक विकास होता है वहीं यह स्वास्थ्य के लिए भी लाभप्रद है। यह बातें वीरकाजी गांव में विशाल कबड्डी प्रतियोगिता का उद्घाटन करते हुए ब्लाक प्रमुख विपेन्द्र सिंह पटेल ने बतौर मुख्य अतिथि सोमवार को कहीं। जिला पंचायत सदस्य दीनानाथ यादव ने कहा कि समाज के युवा शिक्षा,संस्कार के साथ-साथ अब खेल-कूद के क्षेत्र में भी निरन्तर आगे बढ़े रहे है। इसलिए कबड्डी में भी युवा अपना भविष्य बना सकते हैं। उन्होंने युवाओं को देश का आधार स्तंभ बताया। राज्य स्तरीय कबड्डी महासंग्राम में आयोजित प्रतियोगिता में दिल्ली, वाराणसी,धनूपुर, घूरपुर, आगरा, फूलपुर, प्रतापगढ़, भदोही हनुमानगंज सहित अन्य क्षेत्रों की टीमों ने प्रतिभाग किया। उद्घाटन मैच मेरठ और तेवरिया के बीच खेला गया जिसमें तेवरिया की टीम विजयी रही। कबड्डी महासंग्राम में जहां एक ओर युवा अपना जोश दिखा रहे थे। वहीं दूसरी ओर अपनी-अपनी टीमों का समर्थन करने के लिए बड़ी तादात में युवा उनका हौसला आफजाई कर रहे थे। कार्यक्रम का संचालन रमेश कुमार भारतीय व कमेन्ट्री मो०ताज व अखिलेश ने संयुक्त रूप से किया। मौके पर ग्राम प्रधान राम चन्द्र तुफानी, समाजसेवी इमरान अहमद, मानिक चंद,दुर्विजय सिंह भारतीय, शैलेन्द्र कुमार, राजेंद्र भारतीय, बड़ेलाल यादव, राकेश भारतीय, धर्मराज गौतम,दयाराम मेठ सहित भारी संख्या में दर्शक मौजूद रहे।

वीरकाजी गांव में आयोजित विशाल कबड्डी प्रतियोगिता में ब्लाक प्रमुख ने किया खिलाड़ियों का हौसला अफजाई

खिलाड़ियों का हौसला अफजाई करते ब्लाक प्रमुख विपेन्द्र सिंह पटेल

लड़िका बे रोजगार बा, पढि लिखि के लाचार बा...

हिंदी पखवाड़ा के तहत न्यू चिल्ड्रेन पब्लिक स्कूल में काव्य गोष्ठी का आयोजन

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। देश की आत्मा हिंदी को समृद्ध बनाने के उद्देश्य से मनाए जा रहे हिंदी पखवाड़ा के तहत सोमवार को काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। नगर पंचायत शंकरगढ़ के सिंधी टोला में स्थित न्यू चिल्ड्रेन पब्लिक स्कूल में आयोजित काव्य गोष्ठी में कवियों ने हिंदी की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला और अपनी रचनाओं के जरिए हिंदी को समृद्धता प्रदान करने की कोशिश की। हिंदी पखवाड़े के तहत आयोजित काव्य गोष्ठी में हिंदी प्रवक्ता इंद्रजीत मिश्र ने अपनी रचना-₹लड़िका बे रोजगार बा, पढि लिखि के लाचार बा, ऐरा गैया बरधन से किसनवन पे अत्याचार बा₹ जैसी पंक्तियों से वर्तमान समस्या को उठाया। तो वहीं हिंदी शिक्षक सचिन ने ₹देश हमारा सुधर रहा है, सबका जीवन निखर रहा है₹ जैसी पंक्तियां पढ़कर देश की वर्तमान व्यवस्था की तारीफ की। शिक्षिका अंजू केसरवानी ने काव्य पाठ पढ़ते हुए कहा- सबको ज्ञान दिलाती शिक्षा, अच्छी राह सिखाती शिक्षा, बच्चे ज्ञानवान हों अपने, हम शिक्षक की यही है इच्छा₹, से बच्चों को शिक्षा के प्रति जागरूक किया। काव्य गोष्ठी में अन्य शिक्षक कवियों ने अपनी-अपनी रचनाएं पढ़ कर वाहवाही लूटी और उपस्थित बच्चों को हिंदी के प्रति लगाव रखने तथा शिक्षा के महत्व को दशार्ते हुए उन्हें प्रेरित किया। प्रबंधक प्रकाशचंद्र मिश्र ने उपस्थित सभी शिक्षकों को शुभकामनाएं देते हुए बच्चों को आशीर्वचन दिया। इस अवसर पर शिक्षक जय केसरवानी, सुशांत वर्मा, राहुल राव, वेद प्रकाश, योगेश पांडेय, रवि सिंह, अंजू केसरवानी,वैशाली सिंह, संध्या सिंह, जान्हवी जायसवाल मौजूद रहीं।

पकरी-सेवर गांव में पेयजल टंकी बनी शो पीस ग्रामीणों को शुद्ध पानी नही मिल रहा

सिरसा। प्रयागराज विकास खंण्ड उरूवा के पकरी-सेवार गांव में नीर निर्मल परियोजना के तहत वर्ष 2013-14 में एक करोड़ 34 लाख ?837 की लागत से पानी की टंकी का निर्माण कराया गया लेकिन 8 साल बीतने के बावजूद भी ग्रामीणों को शुद्ध पानी नहीं मिल पा रहा। बता दें कि नीर निर्मल परियोजना उत्तर प्रदेश द्वारा पानी की टंकी का निर्माण किया गया लेकिन स्थिति यह है कि इससे गांव के लोगों को पानी नसीब नहीं हो सका। ग्रामीणों को शुद्ध पानी के लिए भटकना पड़ता है। संबंधित अधिकारियों को अवगत कराने के बाद भी पानी टंकी से पेयजल आपूर्ति शुरू नहीं हो सकी। गांव के लोगों ने बताया कि पानी टंकी का निर्माण वर्ष 2013-14 पूरा हो गया था पानी की सप्लाई के लिए पाइपलाइन बिछा दी गई लेकिन ग्रामीणों के घरों तक शुद्ध पानी नहीं पहुंच सका। ग्रामीणों ने कि माने तो पानी की सप्लाई के लिए बिछाई गई अंडरग्राउंड पाइप भी जगह जगह क्षतिग्रस्त हो गई है कभी कबार आपूर्ति किया भी जाता है तो क्षतिग्रस्त पाइप के कारण लोगों के घरों में पानी नहीं पहुंच पाता यह समस्या पिछले 8 सालों से जस की तस बनी हुई है। लेकिन स्थानीय प्रशासन सरकार की योजनाओं को धरातल पर लाने में नाकाम साबित हो रहा। ग्रामीणों ने आरोप लगाते हुए कहा कि ठेकेदार की लापरवाही के कारण पेयजल परियोजना को पूरी तरह अस्त-व्यस्त कर दिया गया है। ग्राम सभा में जो भी पाइपलाइन बिछाई गई है वह मानक के अनुरूप गहराई में ना किए जाने की वजह से आए दिन कहीं न कहीं भ्रष्ट हो जाती है वही लोगों ने जब ग्राम सभा के प्रधान से इस विषय में बात किया तो प्रधान ने साफ इंकार करते हुए कहा कि हमें हैंडोवर नहीं किया गया है जहां से हो सकता है इसका कार्य करा देते हैं। ग्रामीणों में इस पेयजल परियोजना के प्रति काफी आक्रोश व्याप्त है। बारिश के मौसम में ग्रामीणों लोग गंदा और मटमैला पानी पीने को हो रहे मजबूत।

शिक्षामित्रों का शोषण बर्दास्त नही : वसीम

अखंड भारत संदेश

बारा। बारा तहसील मुख्यालय के पास सुमन्त तिवारी के आवास पर शिक्षामित्र संघ की एक बैठक रविवार को सम्पन्न हुई। उत्तर प्रदेश प्राथमिक शिक्षामित्र संघ के जिलाध्यक्ष वसीम अहमद ने कहा कि समायोजन रद्द होने के बाद से शिक्षामित्र शासनादेश के अधीन कार्यरत है। शासनादेश के अनुसार शिक्षामित्रों को कक्षा 1 व 2 को पढ़ाने की जिम्मेदारी दी गयी है,लेकिन ज्यादातर शिक्षामित्रों से कक्षा 4 से 8 तक पढ़वाया जा रहा है। इतना ही नही विद्यालय में बच्चों को पढ़ाने के साथ बीएलओ की जिम्मेदारी भी सौपी गयी है। राज्य निर्वाचन अधिकारी द्वारा मतदाताओं को आधार से जोड़ने हेतु सघन अभियान चला कर आधार लिंक करने का निर्देश जारी किया गया है। आधार संकलन हेतु गुरुवार से शनिवार तक बीएलओ को विद्यालय से मुक्त रखने का भी निर्देश दिया गया है। बावजूद इसके, कई खण्ड शिक्षा अधिकारी और प्रधानाध्यापक की मिली भगत के कारण बीएलओ को विद्यालय से मुक्त नही किया जाता है।जिससे समय पर आधार संकलन नही हो पा रहा है और कुछ बीएलओ शिक्षामित्रों की ड्यूटी सुदूर क्षेत्र में लगाई गई है। जिससे उन्हें आने जाने और आधार संकलन में असुविधा हो रही है। विद्यालय से मुक्त नही होने के कारण कार्य तीव्र गति से नही होने पर सहायक निर्वाचन अधिकारियों द्वारा कार्यवाही की धौस दिखाई जाती है।अत्यंत अल्प मानदेय में शिक्षामित्रों को परिवार का भरण पोषण ,बच्चों की पढ़ाई लिखाई,वृद्ध माता पिता की दवाई की चिंता बनी रहती है।अधिकतर शिक्षामित्र अवसाद ग्रसित है। इस लिए प्रधानाध्यापक,खण्ड शिक्षा अधिकारी व निर्वाचन अधिकारी शोषण और अन्याय न करे।अन्यथा की स्थिति में अन्याय और शोषण के खिलाफ आवाज उठाते हुए शिक्षामित्र हित के लिए जिलाधिकारी महोदय से मिल कर शिकायत करने की बात कही। बैठक की अध्यक्षता प्रभात चंद द्विवेदी व संचालन सुमन्त तिवारी ने किया। इस मौके पर दशरथ भारती, वंदना श्रीवास्तव,राकेश कुमार,विजय शंकर रावत कमल सिंह,अशोक त्रिपाठी आदि दर्जनों शिक्षामित्र उपस्थित रहे।

जगत जननी जगदम्बा के जयकारों से हुई गुंजायमान

मंदिरों तथा पाण्डालों में पूजी गयी मां शैलपुत्री, घरों में कलश स्थापना में उत्साह

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सोमवार को शारदीय नवरात्र के पहले दिन भोर की पौ फटते ही चारों दिशाओं से मां जगदम्बे के जयकारे गूंज उठे। मंदिरों के साथ दुर्गा पूजा को लेकर सजाए गए पाण्डालों मे शंख ध्वनि के बीच जगत जननी जगदम्बा का पूजन अर्चन एवं आरती की श्रृंखला शुरू हो गयी। पाण्डालों मे वैदिक मंत्रोच्चारण के मध्य मां दुर्गा तथा साथ मे भगवान गणेश तथा भगवान कार्तिकेय एवं मां सरस्वती की प्रतिमाओं की स्थापना के लिए आयोजको द्वारा संकल्प लिया जाने लगा।

नगर के बेल्हा देवी मंदिर में सुबह से ही श्रद्धालुओं की भीड़ जुटने लगी। श्रद्धालु बैरीकेटिंग

बेल्हा देवी मंदिर में दर्शन के लिये लगी श्रद्धालुओं की भीड़।

में लाइन में लगकर दर्षन पूजन किया। उधर लालगंज नगर में पुराने शिव मंदिर तथा बाजार खास व नेताजीपुरम एवं घुइसरनाथ रोड समेत दर्जन भर दुर्गा पाण्डालों पर मां की आराधना को लेकर भक्त झूम उठे दिखे। वहीं ग्रामीण अंचलो मे भी दुर्गा पूजा उत्सव का भव्य आगाज हुआ। क्षेत्र के पौराणिक स्थली बाबा घुइसरनाथ धाम में नवरात्र के पहले दिन सुबह से शाम तक श्रद्धालुओं का दर्शन पूजन का सिलसिला उत्साह के माहौल मे दिखा। बाबा धाम में पुलिस की तैनाती भी नवरात्र को लेकर हाईअलर्ट दिखी। वहीं लालगंज के हरिहरमंदिरम स्थित मां दुर्गा तथा मां पीताम्बरा व मां विश्वमोहिनी की प्रतिमाओं के समक्ष भी भक्त धूप दीप व पुष्प अर्पित करने में श्रद्धा भाव के बीच आत्मविभोर हो उठे। पौराणिक देवी धाम इनहन भवानी में नवरात्र का मेला पहले दिन ही रंगत मे दिखा। बड़ी संख्या मे श्रद्धालु महिलाओं ने भी देवी मां को चूनर तथा नारियल भेंट किये। यहां संस्कृत विद्वान आचार्य राजेश मिश्र ने बताया कि धाम में देवी पूजन को लेकर प्रतिदिन मां का विविध श्रृंगार श्रद्धालुओं के लिए विशेष प्रस्तुति मे होगा। गुम्मौर देवी वन तथा मनीपुर चंदापुर स्थित ग्राम देवी, कल्यानपुर ढिगवस में मां काली मंदिर एवं नगर पंचायत के सांगीपुर वार्ड में मां चतुभुर्जी देवी एवं भेभौरा में मां संकटा देवी, राहाटीकर मे दुर्गा देवी मंदिर तथा अगई मे दुर्गन देवी धाम मे भी श्रद्धालुओं की आस्था चरम पर दिखी।

नगर पालिका ने हटाया स्टेट बैंक से चौक तक का अतिक्रमण

चार ठेलेवालों से वसूला 2200 रुपया जुमार्ना

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर पालिका ने सोमवार को चैक कचहरी रोड पर स्टेट बैंक से चैक तक अतिक्रमण विरोधी अभियान चलाया जिससे ठेलों पर फल बेंचने वालों में हड़कंप मच गया। ज्यादातर ठेलेवाले तो भाग खडे.हुए लेकिन चार फलों की दुकानों को पकड़ा गया जिन पर नगर पालिका ने 2200 रुपये का जुमार्ना ठोंका।

यह जानकारी देते हुए नगर पालिका के सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि रामलीला समिति का रथ इसी मार्ग से निकलता है। कई बार चेतावनी के बाद जब ठेलेवाले नहीं माने तो उन पर नगर पालिका ने जुमार्ना ठोंका है। कुछ ठेलेवाले भाग गये थे। उनका ठेला नगर पालिका उठा लाई है।

ठेलेवाले का चालान करते नगर पालिका अधिकारी।

इस अतिक्रमण विरोधी अभियान में स्वच्छ भारत मिषन के डिस्टिक कोआर्डिनेटर आषीष मिश्रा, आरआई लाल बहादुर सिंह, सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह तथा पुलिस चैकी के उप निरीक्षक मिथिलेष चैरसिया तथा रोड गैंग के कर्मचारी शामिल थे। सफाई निरीक्षक ने यह भी बताया कि नगर पालिकाध्यक्षा प्रेमलता सिंह व अधिषाषी अधिकारी मुदित सिंह के निर्देषन में प्रमुख मार्गों से अतिक्रमण हटाने का कार्य किया जा रहा है।

नाराज अधिवक्ताओं ने तहसील बंद कर जताया विरोध

आरोपी पुलिसकर्मियों का हुआ अंतर्जनपदीय तबादला

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। दो दिन पहले अधिवक्ता के साथ पुलिस द्वारा अभद्रता किए जाने तथा मारपीट के मामले में कोई कार्यवाही ना होने से तथा एक एसआई और एक दीवान का ट्रांसफर करके खाना पूरी करने के मामले से नाराज पट्टी के अधिवक्ताओं ने तहसील में कामकाज बंद कर दिया तथा सभी विभागों में ताला जड़कर के विरोध जताया और कहा कि जब तक आरोपी पुलिसकर्मियों पर कार्यवाही नहीं की जाती है तब तक धरना प्रदर्शन और तालाबंदी जारी रहेगा।

पट्टी तहसील क्षेत्र के तरदहा गांव के रहने वाले मानस त्रिपाठी पुत्र कृष्ण देव त्रिपाठी पट्टी में अधिवक्ता है। दो दिन पहले पट्टी कोतवाली के समीप एक रेस्टोरेंट में खाना खाते समय रेस्टोरेंट के संचालक से कहासुनी के बाद मारपीट के बाद पुलिस वहां पहुंच गई आरोप है कि पुलिसकर्मियों ने पीड़ित अधिवक्ता को मारपीट करके थाने ले आई और वहां पर पीटने के साथ मुकदमा करने की धमकी दी। इसी बात से नाराज अधिवक्ताओं ने शनिवार को थाने का घेराव किया था और कार्यवाही की मांग की थी। सीओ दिलीप सिंह ने मामले को गंभीरता से लेते हुए अधिवक्ताओं को आश्वासन दिया था कि आरोपी पुलिसकर्मियों पर कार्यवाही की जाएगी।

गौरा से ब्याह रचाने चले त्रिपुरारी, भूत-प्रेत व देवतागण बने बारातीं

श्री राम लीला समिति ने भव्य शोभायात्रा निकाल किया रामलीला का आगाज

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। श्री रामलीला समिति प्रतापगढ़ द्वारा रामलीला का शुभारंभ आज शिव बारात से हुआ। दोपहर 2रू00 बजे भगवान भूतभावन भोलेनाथ की बारात गोपाल मंदिर से गाजे.बाजेए हाथी. घोड़े के साथ बारात में भूत. प्रेत. देवगण. किन्नर- राजा आदि बारात की शोभा बढ़ा रहे थे।

बारात का शुभारंभ भगवान भोले शंकर की आरती कर समिति के संरक्षक रोशनलाल उमरवैश्य, विधायक राजेंद्र कुमार मौर्य, नगर पालिका अध्यक्षा प्रेमलता सिंह, रामलीला समिति के अध्यक्ष संजय खंडेलवाल, संयोजक दिनेश सिंह मंत्री विपिन गुप्ता, श्याम शंकर सिंह, रवि अग्रवाल, मनीष गुप्ता ने बारात निकाली।शिवजी की बारात में इस बार मातृशक्ति की भागीदारी बहुत ही सराहनीय रही। महिला टीम ने भगवान की आरती उतारी और बारात में नाचते गाते चल रही थी जिससे बारात में चार चांद लगा दिया था। आज पूरा शहर भगवान भोलेनाथ के बारात में शामिल होना चाहता था। पूरा शहर भक्तिमय हो गया था बारातियों के लिए जगह.जगह जलपान की व्यवस्था नगर वासियों ने की थी। जगह.जगह भगवान

भोलेनाथ की बारात में थिरकते विधायक राजेन्द्र मौर्य व अन्य।

भोलेनाथ की भक्तगण आरती उतार रहे थे बारात गोपाल मंदिर से चौक होते हुए रेलवे स्टेशन प्रतापगढ़ होते हुए फिर चौक होते हुए चिलबिला हनुमान मंदिर तालाब पर पहुंची वहां पर समिति के संरक्षक रोशनलाल उमरवैश्य ने भगवान भोलेनाथ की आरती उतारी। इस अवसर पर महिला टीम कि अर्चना खंडेलवालए बिना के सरवानीए सुधा अग्रवालए रेखा उमरवैश्य, सुमन केसरवानी, विनीता केसरवानी, मेघा खंडेलवाल, ज्योति खंडेलवाल, रोशनी सिंह, लक्ष्मी सिंह, अनामिका पांडे, जया खंडेलवाल, शकुंतला खंडेलवाल, प्रीति केसरवानी रही। भक्तों में रामलीला समिति के पदाधिकारी पंकज शुक्ला, रवि अग्रवाल, विनय सिंहए छेदीलाल, राजेंद्र केसरवानी, सूरज, धर्मेंद्र सिंह, संजय जैन, अमन, धर्मेंद्र चौरसिया, विकास, देवानंद, संतोष कुमार, सुरेश अग्रवाल, प्रदीप गोयल, राजेश खंडेलवाल, श्याम शंकर सिंह, प्रदीप केसरवानी, विपिन गुप्ता, शीतला सोनीए संजीव अहूजा, बंटी नेता, विवेक कुमार, अशोक अग्रवाल, परमानंद मिश्रा आदि रहे। सभी राम भक्तों ने जिला प्रशासन व पुलिस प्रशासन के पदाधिकारियों को संरक्षक रोशनलाल उमरवैश्य ने आभार जताया। संयोजक संचालन दिनेश सिंह व विपिन गुप्ता ने किया।

पं0 दीनदयाल के विचार आज भी प्रासंगिकः संगम लाल

शिवानी मातनहेलिया द्वारा दीनदयाल परिचर्चा में बोले सांसद

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रखर राष्ट्रवादी, अप्रतिम नेतृत्व व संयोजन, क्षमता वाले मानवतावादी चिंतक व समाज सुधारक पं० दीनदयाल उपाध्याय जी की 106वीं जयंती के उपलक्ष्य में जिले की वरिष्ठ समाजसेवी डॉ० शिवानी मातनहेलिया ने जगदीश मातनहेलिया मेमोरियल ट्रस्ट व उत्तर प्रदेश शासन के संस्कृति विभाग के लोक एवं जनजाति कला एवं संस्कृति संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में पं० दीनदयाल जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक परिचर्चा का आयोजन किया, जिसकी अध्यक्षता प्रतापगढ़ जनपद के भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष श्री हरिओम मिश्रा ने की। मुख्य अतिथि सांसद संगमलाल

कार्यक्रम में बोलतीं डा0 शिवानी मातनहेलिया।

गुप्ता व विशिष्ट अतिथिगण सदर विधायक राजेंद्र मौर्य व मुनीश्वरदत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० मनोज मिश्रा, कार्यक्रम अध्यक्ष व मुख्य आयोजक ने सम्मिलित रूप से दीप प्रज्वलन व पंडित जी को पुष्पांजलि अर्पित कर के कार्यक्रम का शुभारंभ किया। समस्त उपस्थित अतिथियों ने अपने व्यक्तव्य में पं० दीनदयाल के विचारों व जीवन दर्शन को आज भी प्रासंगिक बताया व उनके दिखाए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। युवा समाजसेवी अर्पित खंडेलवाल व नीरज अग्रहरि के संयोजन में आयोजित इस कार्यक्रम में जनपद के सभी वर्गों व समुदायों की उपस्थिति विशेष रूप से उल्लेखनीय रही। अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल व उ० प्र० उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल की प्रतापगढ़ ईकाई, सैलून एसोसिएशन, एकीकृत ब्राह्मण महासंघ, मौर्य बंधुत्व क्लब, भारत विकास परिषद, लायन्स क्लब की समस्त शाखाओं, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, केसरवानी व जायसवाल महिला समाज, भारतीय जनता युवा मोर्चा, अनेक शिक्षण संस्थानों व समाजसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि, भारतीय जनता पार्टी के लगभग समस्त पदाधिकारीगण व बड़ी संख्या में प्रबुद्ध लोग प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। अंत में सभी ने सफल कार्यक्रम हेतु आयोजिका डॉ० शिवानी मातनहेलिया को बधाई दी।

विपक्षी दे रहे जान से मारने की धमकी

प्रतापगढ़। दिलीपपुर थाना क्षेत्र के मरुआन गांव निवासी अरविन्द यादव उर्फ गुड्डू ने एसपी को शिकायती पत्र देकर आरोप लगाया है कि पड़ोसियों द्वारा जान से मारने की धमकी दी जा रही है। अरविन्द का आरोप है कि पड़ोसी से पुरानी रंजिष को लेकर मुकदमा चला आ रहा है जिसको लेकर विपक्षी आए दिन मुकदमा में सुलह करने का दबाव डालते हैं और जान से मारने की धमकी दे रहे हैं। अरविन्द यादव का आरोप है कि पुलिस को इस बारे में कई बार कहा गया लेकिन पुलिस इस पर कोई ध्यान नहीं दे रही है।

छत के रास्ते से घर में घुसे चोरों ने नगदी सहित कीमती जेवरात उड़ाए

पीड़ित की तहरीर पर मुकदमा हुआ दर्ज

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। बीती रात अज्ञात चोरों ने एक घर में छत के रास्ते से कमरे के अंदर प्रवेश करके कीमती जेवरात तथा नकदी उठा ले गए। सुबह परिजन जब उठे तो घर में सामान बिखरा हुआ देखकर डायल 112 पुलिस को फोन किया उसके बाद थाने में तहरीर दिया। पुलिस को दी गई तहरीर पर अज्ञात चोरों के विरुद्ध मामला दर्ज किया गया है।

पट्टी तहसील क्षेत्र के आसपुर देवसरा थाना अंतर्गत ऐलाही गांव के रहने वाले बृजेंद्र पांडे पुत्र वासुदेव पांडे के परिजन रविवार की शाम को खाना खाकर सो गए। रात में अज्ञात चोर छत के रास्ते से घर के अंदर प्रवेश किए घर में घुसकर चोरों ने कमरे के अंदर रखा हुआ मंगलसूत्र, हार, सोने की चैन, अंगूठी झाला, पायल, हाथ मेहंदी तथा नकदी सहित कीमती सामान उठा ले गए। आश्चर्य की बात यह रही कि परिजनों को इस बात की जानकारी ही नही हुई। सुबह पांच बजे जब बृजेंद्र कमरे से अंदर प्रवेश किए तो कमरे का ताला टूटा देखकर हैरान हो गए।

अंदर रखा हुआ सामान बिखरा हुआ था। शोर मचाने पर आसपास के लोग जुटे और डायल 112 पुलिस को फोन करके इसकी सूचना दी गई।

उसके बाद आसपुर देवसरा थाने में तहरीर देने के बाद पुलिस ने अज्ञात चोरों के विरुद्ध भारतीय दंड संहिता की धारा 380 का मामला दर्ज किया है और उसके बाद पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है। इस संबंध में आसपुर देवसरा थानाध्यक्ष संजय पांडे से बात करने पर उन्होंने बताया कि चोरी का मामला दर्ज किया गया है आरोपी चोरों की खोजबीन की जा रही है।

एमडीपीजी कालेज के प्रोफेसर का हुआ स्वागत

प्रांतीय महामंत्री निर्वाचित हुए प्रो0 प्रदीप कुमार सिंह

प्रोफेसर का स्वागत करते एमडीपीजी कालेज के प्राचार्य।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। एमडीपीजी कॉलेज के प्रो प्रदीप कुमार सिंह के उत्तर प्रदेश विश्वविद्यालय महाविद्यालय शिक्षक संघ का प्रांतीय महामंत्री निर्वाचित होने पर एमडी पीजी कॉलेज में आज उनका भव्य स्वागत किया गया। शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने फूल मालाओं से उन्हें लाद दिया। प्राचार्य प्रो मनोज मिश्र ने बुके प्रदान कर उनका स्वागत किया।

बता दें कि 25 सितंबर को लखनऊ में संपन्न फुपुक्टा के चुनाव में एमडीपीजी के डॉ प्रदीप कुमार सिंह ने सर्वाधिक 439 मत पाकर महामंत्री पद पर अपनी शानदार जीत दर्ज की जबकि उनके प्रतिद्वंदी हीरालाल पीजी कॉलेज खलीलाबाद के डॉ राजेश चंद्र मिश्र को 331 मत मिले। बता दें कि सभी पदों के प्रत्याशियों द्वारा पाए गए मतों की तुलना में प्रदीप कुमार सिंह को सर्वाधिक मत मिले। नवनिर्वाचित महामंत्री प्रदीप कुमार सिंह के आज एमडीपीजी कॉलेज पहुंचने पर प्राचार्य प्रो मनोज मिश्र ने बुके प्रदान कर उनका स्वागत किया। शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने उनका फूल मालाओं से भव्य स्वागत किया। स्वागत करने वालों में प्रो अरुण कुमार श्रीवास्तव, प्रो अरुण तिवारी, प्रो अरविंद मिश्र, प्रो पीके शर्मा, डॉ सी एन पांडे, डॉ डी के पांडे, डॉ ऊषा तिवारी, डॉ मायाशंकर, डॉ राजेंद्र मिश्र, डॉ रंजीत पटेल आदि प्रमुख रहे। शिक्षकों एवं कर्मचारियों के स्वागत से गदगद डॉ पी के सिंह ने कहा कि वे शिक्षकों एवं कर्मचारियों की समस्याओं के समाधान के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

परिषदीय विद्यालयों मे एमडीएम के खाता संचालन पर बीएसए हुए सख्त

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। परिषदीय विद्यालयों में एमडीएम खातों के संचालन प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष के साथ कराए जाने को लेकर बीएसए ने कडी नाराजगी जतायी है। जिले के बीएसए भूपेन्द्र सिंह ने खण्ड शिक्षा अधिकारियों को पत्र लिखकर हर कीमत पर ग्राम पंचायतों के गठन के बाद एमडीएम खातों का संचालन प्रधानाध्यापक एवं प्रधान के संयुक्त हस्ताक्षर से ही कराए जाने के निर्देश दिये है। सोमवार को बीएसए का पत्र यहां पहुंचने से परिषदीय विद्यालयों मे हडकंप का माहौल दिखा। बीएसए ने पत्र में कहा है कि किसी भी विद्यालय मे एमडीएम खातो का संचालन एसएमसी अध्यक्ष के साथ नहीं संचालित कराया जाना चाहिए। उन्होने खण्ड शिक्षा अधिकारियो को आगाह किया है कि यदि एमडीएम खाते के संचालन मे नियम के विपरीत शिकायत मिली तो सम्बन्धित प्रधानाध्यापक अथवा प्रभारी प्रधानाध्यापक के विरूद्ध कडी कार्रवाई की जाएगी। खण्ड शिक्षा अधिकारी प्रभाकर यादव ने स्पष्ट किया है कि विद्यालयों के खातों का बैंको के अभिलेखों के जरिए परीक्षण कर बीएसए को शीघ्र रिर्पोट भेजी जाएगी।

पान विक्रेता ने तनाव के चलते की आत्महत्या, कोहराम

लालगंज, प्रतापगढ़। मानसिक तनाव के चलते नगर पंचायत की बाजार में पान विक्रेता ने सोमवार की सुबह फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। शीतलमऊ वार्ड निवासी स्व. बाबूलाल चैरसिया के पुत्र संतोष चैरसिया 40 ने लालगंज कालाकांकर रोड पर ब्लाक के समीप पान की दुकान खोल रखी है। सोमवार की सुबह संतोष ने परिवार के सदस्यों के साथ नाश्ता किया। इसके बाद उसने पत्नी रेखा को अपनी तबीयत खराब होने की बात बताते हुए दुकान पर भेज दिया। दिन में लगभग ग्यारह बजे के आसपास संतोष घर के अंदर अपने कमरे मे चला गया। वहां उसने फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। जानकारी होने पर परिजनों मे कोहराम मच गया। मृतक अपने पीछे पुत्र करन 15 तथा अंश 12 व पुत्री अर्चिता 07 तथा पत्नी रेखा को निराश्रित छोड गया है। पारिवारिक सूत्रों के मुताबिक संतोष इधर कुछ सालों से बीमारी से पीडित था। बीमारी के चलते वह मानसिक अवसाद मे रहता था। मृतक के चाचा रामधन चैरसिया व परिजनों का रोना बिलखना देख लोग भावुक हो उठे। वहीं बाजार में भी संतोष की मिलनसारिता को लेकर व्यापारियों में शोक का माहौल देखा गया।

माता मईया धाम परिसर में बने दुर्गा पण्डाल में विराजमान हुई मां दुर्गा

माता मईया धाम से निकली कलश यात्रा

माता मइया धाम से निकली कलश यात्रा में शामिल महिलाएं।

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। विकास क्षेत्र कालाकांकर के पाइकगंज बाजार परियावां में शारदीय नवरात्रि के पावन पर्व पर सोमवार को मां दुर्गा, गणेश, लक्ष्मी, सरस्वती व कार्तिके की प्रतिमा विराजमान हुई। प्राण प्रतिष्ठा के पूर्व श्रीमद्भागवत कथा के प्रारम्भ के पूर्व प्रथम दिन सोमवार को महिलाओं ने कथा वाचक अर्चना साध्वी के नेतृत्व में सिर पर कलश रखकर शोभा यात्रा निकाली जो माता मईया धाम से परियावां रेलवे फाटक, दुर्गा माता मंदिर से वापस माता मईया धाम डीजे के साथ पहुंची। शाम को श्रीमद् भागवत कथा अर्चना साध्वी द्वारा किया जाएगा, जो नव रात्रि के समापन तक चलता रहेगा। बता दें कि माता मईया धाम में शारदीय नवरात्रि का कार्यक्रम लगभग 45 वर्षो से निरन्तर बाजार वासियों व क्षेत्र वासियो के सहयोग से निरन्तर चला आ रहा है जिसमे सभी बढ़ चढ़ कर भाग लेते है।नवमी के समापन पर कन्याओं के साथ विशाल भंडारा का आयोजन किया जाता है दशमी के दिन दुर्गा प्रतिमाओं के साथ अन्य प्रतिमाओं की शोभा यात्रा निकाल कर पैदल गाजा बाजा डीजे के साथ गंगा नदी में विसर्जन किया जाता है जिसमें स्थानीय पुलिस सुरक्षा ब्यबस्था में तत्पर रहती है।कलश यात्रा के दौरान सोम सोनी, सत्यम अग्रवाल, संजय अग्रहरि, अमित, डब्बू, राहुल, गौरव, सर्वेश, आशीष, फ्रैंकी, रिंकू, गनेश, अनिल, विजय, रोहित, अश्वनी, मिथलेश, बबलू आदि लोग शामिल रहे।

जीजीआईसी में श्रेष्ठ भारत विषय पर हुए कार्यक्रम

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत राजकीय बालिका इंटर कॉलेज प्रतापगढ़ में विविधता में एकता, भारत की विशेषता एवं एक भारत, श्रेष्ठ भारत विषय पर कार्यक्रम प्रधानाचार्य गरिमा श्रीवास्तव की अध्यक्षता में एवं मुख्य अतिथि एसपी दिवेदी सह जिला विद्यालय निरीक्षक प्रतापगढ़ एवं अति विशिष्ट अतिथि श्री विजय कुमार सूचना अधिकारी प्रतापगढ़ एवं डॉक्टर विंध्याचल सिंह प्रधानाचार्य राजकीय बालिका इंटर कॉलेज बडौदा प्रतापगढ़ एवं डॉ मोहम्मद अनीश के संचालन में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के वक्ता के रूप में डॉ प्रियंका सिंह, सिद्धार्थ श्रीवास्तव एवं अन्य लोग रहे द्यइस अवसर पर धर्मेंद्र कुमार ओझा, उमर जमील एवं समस्त विद्यालय परिवार उपस्थित रहा। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने कहा कि भारत विभिन्नता में एकता को हमेशा से बनाए हुए है। हमें सभी वर्गों का सम्मान करना चाहिए और सभी लोगों के साथ आपस में मेल मोहब्बत के साथ रहना चाहिए। सूचना अधिकारी ने कहा कि सेवा पखवाड़े के अंतर्गत इस कार्यक्रम में छात्राओं ने विभिन्न प्रांतों की भाषा बोली एवं पहनावा प्रस्तुत करके विभिन्नता में एकता को प्रस्तुत किया जो कि प्रशंसनीय है।

छात्रा का अपहरण, केस

लालगंज, प्रतापगढ़। स्कूल पढने निकली छात्रा के वापस घर न पहुंचने पर पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ अपहरण का केस दर्ज किया है। कोतवाली लालगंज के लालूपुर निवासी अमृतलाल वर्मा पुत्र रामकृपाल ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि उसकी पन्द्रह वर्षीया पुत्री उमा बीती पचीस अगस्त को राजकीय बालिका इण्टर कालेज मे पढ़ने गयी थी। देर शाम तक उमा घर नही पहुंची तो परिजन परेशान हो उठे। खोजबीन के बाद भी उमा का पता न लगने पर पिता ने रविवार को कोतवाली मे तहरीर सौपी। तहरीर के आधार पर अज्ञात के खिलाफ पुलिस ने अपहरण का केस दर्ज किया है।

खबर संक्षेप

डीएम एसपी ने कड़ाधाम नवरात्र मेले का किया निरीक्षण

अझुवा कौशाम्बी। शारदीय नवरात्रि के अवसर पर जिलाधिकारी सुजीत कुमार और पुलिस अधीक्षक हेमराज मीणा ने कड़ा धाम क्षेत्र के शीतला धाम मंदिर पर दर्शन पूजन कर मां शीतला से आशीर्वाद लिया एवं मेले की सुरक्षा में लगे जिम्मेदारों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया है इस दौरान सिराथू उप जिलाधिकारी राहुल देव भट्ट ,सीओ डॉक्टर केजी सिंह अधिशासी अधिकारी कड़ा धाम शैलेंद्र मिश्रा सहित तमाम जिम्मेदार अधिकारी मौजूद रहे।

अवैध जमीन के कब्जे को लेकर मारपीट

कौशांबी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के कस्बा नया नगर निवासी सानू अहमद,वशीम अहमद, आजा, गोरे, इरसाद, हंसा, एजाज आदि लोगों ने एक बेश कीमती जमीन पर अवैध कब्जा कर निर्माण कार्य करवा रहे थे तभी वेशकीमती जमीन के बगल में रह रहे राजू पुत्र स्वर्गीय अच्छे मियां ने बिरोध किया तो आरोपीयों ने भुक्तभोगी के घर में घुसकर गाली गलौज और मारपीट किया। भुक्तभोगी को चोट लगी है और वह बेहोश हो गया भुक्तभोगी के बेहोश हों जाने पर आरोपी फरार हो गए। भुक्तभोगी ने मंझनपुर थाने में आरोपियों के विरुद्ध लिखित तहरीर देकर न्याय की गुहार लगाई है।

कोचिंग के लिए निकली छात्रा की तालाब में मिली लाश, हड़कंप

परिजनों ने जताई हत्या की आशंका तालाब के बाहर छात्रा की मिली साइकिल और चप्पल

अखंड भारत संदेश

करारी कौशांबी। करारी थाना क्षेत्र के चक सय्यद अलीपुर गांव की एक छात्रा अपने छोटे भाई के साथ सोमवार की सुबह कोचिंग के लिए निकली थी लेकिन वह कोचिंग नहीं पहुंच सकी गांव के बाहर तालाब में उसकी लाश मिली है छात्रा की मौत की जानकारी मिलते ही घटनास्थल पर ग्रामीणों की भीड़ लग गई परिजनों में कोहराम मच गया मामले की सूचना पुलिस को दी गई सूचना मिलते ही घटनास्थल पर स्थानीय थाना पुलिस पहुंची है और बालिका के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। जानकारी के मुताबिक करारी थाना क्षेत्र के चक सैय्यद अलीपुर गांव निवासी राकेश कुमार चौकीदार है और उनकी पत्नी ग्राम प्रधान है राकेश कुमार की 13 वर्षीय पुत्री रानी देवी अपने भाई अखिलेश उम्र 10 वर्ष के साथ प्रतिदिन की तरह सोमवार की सुबह पांच बजे घर से साइकिल से कोचिंग के लिए निकली थी कुछ दूर जाने के बाद जब उसके भाई ने पीछे देखा तो छात्रा नहीं दिखाई पड़ रही थी जिस पर छात्रा को खोजते खोजते उसका भाई वापस लौटने लगा लेकिन कहीं छात्रा नहीं दिखाई पडी तालाब के पास छात्रा की साइकिल और चप्पल पड़ी थी जिस पर बालक ने घर पहुंच कर बताया कि छात्रा दिखाई नहीं पड़ रही है वह कहीं गायब हो गई बालक की बात सुनकर घर के लोग किसी अनहोनी की आशंका में आशंकित हो गए और बालिका को ढूंढने के लिए निकल पड़े खोजने के बाद मालूम चला कि रास्ते में ही एक तालाब के पास बालिका की साइकिल पेड़ में टिकी हुई है और बगल में बालिका की चप्पल पड़ी हुई है जिस पर परिजन तालाब के आसपास बालिका को खोजने लगे खोजते खोजते तालाब के अंदर बालिका की डूबी हुई लाश मिली है संदिग्ध परिस्थितियों में छात्रा की लाश मिली है गांव वालों की मदद से छात्रा की लाश को तालाब से निकालकर परिजन अस्पताल ले गए जहां छात्रा को मृतक घोषित कर दिया है पुलिस ने मामले में लिखा पढ़ी कर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है मामले में पुलिस ने सूक्ष्म जांच कराई तो बड़े रहस्य उजागर होंगे।

बालिका की मौत के बाद घटनास्थल पर मौजूद पुलिस और ग्रामीण

मामूली विवाद पर युवक पर जानलेवा हमला, नहीं हुई कार्रवाई

कौशांबी। पिपरी कोतवाली अंतर्गत चायल कस्बा में शनिवार रात्रि में मामूली विवाद को लेकर दो पक्ष आपस में भिड़ गए जानकारी के मुताबिक चायल कस्बा निवासी आशा देवी पत्नी मंगरू चौधरी अपने घर में लिंटर डला रही है। रास्ते में बल्ली लगी होने के कारण कस्बा के ही मनोज साहू व संतोष साहू लात मारने लगे इतने में महिला ने विरोध किया तो आरोप संतोष साहू व मनोज साहू ने उक्त महिला को खरी खोटी सुनाई धमकी दिया कि अगर हमारी शिकायत कही पर किया तो जान से हाथ धो बैठोगे। हमारा कोई कुछ नहीं कर पाएगा। धमकी देकर मनोज साहू व संतोष साहू आशा देवी के पति मंगरू को देख इस बात का उलाहना देने लगे तो दोनो में मामला झगड़े में तब्दील हो गया और इसी बीच चौराडीह निवासी लल्ला पांडे जो चायल तहसील के पास अपनी चाय नाश्ता की दुकान चलाता है जिसे बंद कर वह अपने घर चौराडीह जा रहा था इसी बीच झगड़ा को देख कर वह अपने मोबाइल से वीडियो बनाने लगा वीडियो बनता देख संतोष साहू को यह बात अच्छी न लगी और पत्थर उठा कर लल्ला पांडे के सर पर वार कर दिया जिससे लल्ला पांडे का सर फट गया और काफी खून बहा खून बहता देख संतोष साहू व मनोज साहू आनन फानन में उसको बेहोसी की हालत में छोड़ फरार हो गए। मामले की शिकायत आशा देवी ने मौखिक चौकी पुलिस से की लेकिन साहू व भाजपा से पकड़ रखने वाले मनोज साहू के दबदबे से चौकी पुलिस ने अपनी कलम चलाने में नाकाम रही।

प्राण घातक हमले के आरोपियों ने रची गोलीकांड की झूठी कहानी

अखंड भारत संदेश

1 वर्ष पहले प्राणघातक हमले में घायल बड़े लाल का अभी चल रहा है इलाज

कौशांबी। सराय अकिल थाना क्षेत्र के चंदूपुर अमरायन में प्राण घातक हमले के आरोपियों ने गोलीकांड की साजिश रची है और पुलिस को तहरीर दे कर घायल के परिजनों पर गोलीबारी करने का आरोप लगाया है हाला की साजिश रचने वालों की झूठी कहानी से पुलिस वाकिफ हो चुकी है और जल्द ही उनकी करतूत का पुलिस खुलासा कर देगी मामले की जानकारी मिलते ही सराय अकिल पुलिस मौके पर पहुंच कर घटना की जांच कर मामले का खुलासा करने में लगी है। घटनाक्रम के मुताबिक सराय अकिल थाना क्षेत्र के चंदूपुर अमरायन गांव निवासी बड़े लाल पुत्र बुधाई पर एक वर्ष पहले प्राणघातक हमला किया गया था बड़े लाल पर हमले के आरोप में उसके बड़े भाई मूल चंद व अन्य लोगों पर मुकदमा दर्ज हुआ था पुलिस ने आरोपी मूलचंद आदि पर आरोप पत्र दाखिल कर दिया है बड़े लाल के हमले में अपने को फंसता देख मूलचंद आदि ने बीती रात एक साजिश रची और मूलचंद की पत्नी आशा देवी ने पुलिस को तहरीर देते हुए बताया कि बड़े लाल उसकी पत्नी ने बीती रात मूलचंद के ऊपर फायरिंग कर दी है जिसका इलाज जिला अस्पताल में चल रहा है हालांकि शिकायतकर्ता महिला का कहना है कि उसके पति के पेट में गोली छूकर चमड़ी छीलते हुए निकल गई है गोली कांड की जानकारी मिलते ही घटनास्थल पर स्थानीय पुलिस पहुंची है और लोगों से इस घटना की जानकारी ली तो मामला संदिग्ध प्रतीत हुआ है ग्रामीणों का कहना है कि 1 वर्ष पहले हमले में घायल बड़े लाल का अभी अस्पताल में इलाज चल रहा है।

मनौरी के दशहरे में लाखो लोगो की भीड़ सड़क की दुर्दशा से आहत व्यापारी

पीडब्ल्यूडी के जेई और ठेकेदार की लापरवाही से मनौरी से पूरामुफ्ती सड़क निर्माण में हो रही देरी से आक्रोशित लोगों ने थाना अध्यक्ष को कराया अवगत

मनौरी कौशाम्बी। श्री राम लीला समिति के तत्वाधान में व्यापारियों ने मनौरी से पूरामुफ्ती तक बनने वाली सड़क में पीडब्ल्यूडी के जेई और ठेकेदार की लापरवाही को पूरामुफ्ती थानाध्यक्ष को अवगत कराया। व्यापारियों ने बताया कि मनौरी बाजार का ये ऐतिहासिक मेला सैकड़ों साल से होता आ रहा है इस मेले में लाखो की संख्या में भीड़ रहती है इस बार 5 ,6,7अक्टूबर को मेला होना निश्चित हुआ है लेकिन सड़क की दुर्दशा देखकर रोना आ रहा है जबकि मनौरी बाजार में रामलीला कमेटी की बैठक में पीडब्ल्यूडी के जेई को बुलाकर बताया गया कि रोड को जल्दी जल्दी ठीक कराया जाय लेकिन पीडब्ल्यूडी के जेई और ठेकेदार बहुत मंद गति से काम कर रहे है। व्यापारियों का दुखड़ा सुनकर पूरामुफ्ती थानाध्यक्ष ने अपने उच्चाधिकारियों के संज्ञान में बात डाल दी अब देखना यह की मेला से पहले सड़क का निर्माण हो पाता है या इसी दुर्दशा में मेला संपन्न कराना होगा।

खराब सड़क को लेकर थानेदार से वार्ता करते मनौरी के व्यापारी

ढाबे में बिक रही थी शराब पुलिस ने दबोचा

कोखराज कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के हाईवे स्थित नेशनल बसेरा होटल में ठेके के शराब की सीसी मंहगे रेट पर बेचते हुए युवक को पुलिस ने गिरफ्तार किया है इलाके में अभी और ढाबे में शराब का कारोबार हो रहा है इन दिनों भट्ठा मजदूर बिहार से चलकर ईट भट्ठा के लिए रवाना होते हैं, नेशनल हाईवे पर होटलों में रूक कर मजदूर खाना पीना करके शराब लेकर अपने स्थान पहुंचते हैं राष्ट्रीय राजमार्ग में चलने वाले ट्रकों के चालक भी शराब के शौकीन हैं और जिन ढाबों में शराब मिलती है वहां ट्रक चालक रुक कर भोजन करने के साथ शराब पीते हैं लंबे समय से ढाबों में शराब का कारोबार हो रहा है लेकिन जब सोशल मीडिया में वीडियो वायरल हुई तो पुलिस सक्रिय हुई और ढाबे में पहुंची तो देखा कि वहां बेखौफ तरीके से ठेके की शराब बेची जा रही है पुलिस ने शराब के साथ 2 लोगों को गिरफ्तार किया है इलाके में अभी कई ढाबे और है जहां बेखौफ तरीके से शराब बेची जा रही है।

विविधता में एकता है हमारी संस्कृति : अनिता त्रिपाठी

सरस हाल में आयोजित हुआ कार्यक्रम, पश्चिम बंगाल और बिहार के नागरिकों का हुआ सम्मान

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिला मुख्यालय स्थित सरस हाल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्म दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के अंतर्गत सोमवार को विविधता में एकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में गैर प्रांतों से अन्य संस्कृतियों के आए हुए लोगों को सम्मानित किया गया। जिसमें बिहार और पश्चिम बंगाल के लोग शामिल रहे कार्यक्रम की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष अनीता त्रिपाठी ने किया। कार्यक्रम संयोजक जिला महामंत्री जय प्रकाश विश्वकर्मा रहे जबकि सह संयोजक के रूप में लोकेश चौधरी पप्पू व सुनील मिश्रा रहें। इस मौके पर बोलते हुए जिलाध्यक्ष अनीता त्रिपाठी ने कहा कि विविधता में एकता भारत की पहचान है आज देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चलते भारत मजबूत और एकजुट हुआ है। देश राज्य विभिन्न भाषाओं, पहनावा, रहन सहन और संस्कृतियों के लोग भारत माता को अपना सब कुछ अर्पण कर देश की प्रगति में अपना योगदान कर रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी देश के सभी सांस्कृतिक विरासत वाले लोगों का सम्मान करती है और उनके योगदान का प्रोत्साहन करती है। आज विविधता दिवस के अवसर पर इसी आपसी सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए पूरे भारत में विभिन्न संस्कृतियों के लोगों का सम्मान किया जा रहा है। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से पूर्व विधायक लाल बहादुर, शीलू पाण्डेय, वेद प्रकाश पाण्डेय, दिनेश पाण्डेय, राजीव तिवारी, सत्यम केशरवानी, आशारानी, जितेन्द्र साहू, हरेंद्र लोधी सहित बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

गैरप्रांत के लोगों को सम्मानित करती भाजपा जिला अध्यक्ष

न्यूज झरोखा

वेटेरिनरी यूनिट वाहन को डीएम ने हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

सीडीओ ने कहा कि आमजन टोल फ्री नंबर 1962 पर सम्पर्क कर लम्पी चर्म रोग के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार एवं मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी द्वारा 02 मोबाइल वेटेरिनरी यूनिट वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया तथा गोवंश में फैल रही लम्पी चर्म रोग की रोकथाम के लिए प्रतिदिन टीकाकरण कराकर कंट्रोल रूम में रिपोर्ट करने के लिए निर्देशित किया सीडीओ ने कहा कि आमजन टोल फ्री नंबर 1962 पर सम्पर्क कर लम्पी चर्म रोग के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं इस अवसर पर मुख्य पशु चिकित्साधिकारी उप मुख्य पशु चिकित्साधिकारी, पशु चिकित्सा अधिकारी एवं लम्पी चर्म रोग टीकाकरण कार्यकर्ता उपस्थित रहें टीकाकरण अभियान के वाहन को हरी झंडी दिखाने के अवसर पर डीएम ने बताया कि 70 हजार गोट पॉक्स बैक्सीन जनपद कौशांबी में आ चुकी है जिसमे से 25 हजार बैक्सीन पशुओ को लग गई है सभी गोआश्रयो में लगाने के बाद अब सीमावर्ती गांव में और नगर पंचायत से 5 किलोमीटर के दायरे में पशुओ को टीका लगाया जा रहा है।

बोलेरो की टक्कर से खाई में गिरी ऑटो पलटी,कई श्रद्धालु घायल

अझुवा कौशाम्बी। जिले में तेज रफ्तार बोलेरों गाड़ी ने श्रद्धालुओं से भरी ऑटो में टक्कर मार दी,टक्कर लगने के बाद ऑटो सड़क किनारे बनी खाई में पलट गया, ऑटो पलटने से उसमे बैठे कई श्रद्धालु घायल हो गए,सूचना पर पहुंची पुलिस ने सभी घायलों को एंबुलेंस से जिला अस्पताल भेजा। घटना सैनी कोतवाली क्षेत्र के चतुरीपुर गांव के पास की है जहा महेवाघाट थाना के शाहपुर गांव के कुछ श्रद्धालु नवरात्रि के प्रथम दिन कड़ा धाम गंगा स्नान करने और दर्शन करने जा रहे थे,तभी अचानक चतुरी पुर गांव के पास एक तेज रफ्तार बोलेरो गाड़ी ने ऑटो में टक्कर मार दी,टक्कर लगते ही ऑटो सड़क किनारे खाई में पलट गया, ऑटो में दबकर श्रद्धालु इंद्र पाल,गया प्रसाद,मुन्नी देवी सहित कई दर्शनार्थी घायल हो गए।सूचना पर पहुंची पुलिस ने सभी घायलों को एंबुलेंस से जिला अस्पताल भेज दिया है जहा सभी का इलाज किया जा रहा है।

भव्य कलश यात्रा के साथ भागवत कथा हुई शुरू

बैरमपुर कौशांबी। मंझनपुर तहसील क्षेत्र के कोरीपुर बैरमपुर में भागवत कथा का आयोजन कथावाचक पंडित अनुज कृष्णा शास्त्री द्वारा शुरू किया गया है भागवत कथा के पूर्व भव्य कलश यात्रा का आयोजन हुआ कलश यात्रा में महिला और पुरुषों ने सिर में कलश रखकर देश समाज के कल्याण के लिए क्षेत्र भ्रमण किया इस मौके पर कथा वाचक पंडित अनुज कृष्ण शास्त्री के मुखारविंद से श्रीमद भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ सुनने के लिए इलाके के लोग उमड़ पड़े हैं इस अवसर पर श्रोता उर्मिला देवी पत्नी स्व० अवध नारायण त्रिपाठी आयोजक पंडित रमाकांत त्रिपाठी पंकज वेद पांडे, अम्बुज तिवारी, नीलू तिवारी, पप्पू सिंह, गौरव तिवारी, राज सिंह अंशू तिवारी , सुमित तिवारी, प्रिंस सिंह सहित तमाम महिला पुर भक्त मौजूद रहे।

ऐतिहासिक रामलीला मुकुट पूजन हुआ संपन्न

टेढ़ी मोड़ कौशांबी। सिराथू तहसील के अंतर्गत सहजादपुर में सोमवार को रामलीला का मुकुट और शस्त्र पूजा कमेटी के पदाधिकारियों ने विधि विधान से किया है रामलीला शुरू होने के पूर्व मुकुट पूजन के अवसर पर रामलीला कमेटी के अध्यक्ष राम प्रकाश तिवारी और मुख्य अतिथि अनुज सिंह यादव ग्राम प्रधान डॉ उधम सिंह यादव मोहित यादव कोषाअध्यक्ष प्रचार मंत्री मनीष सिंह ठाकुर प्रभात सोनकर मंत्री संदीप सोनकर कार्यकारी सदस्य राजकुमार चौरसिया एवं समस्त ग्रामवासी मौजूद रहे।

पांच दिवसीय स्काउट गाइड प्रशिक्षण शिविर का हुआ शुभारंभ

कौशाम्बी। सन्त सिंह इंस्टिट्यूट भड़ेवारा मेजरोड में आज दिनांक 26 सितंबर 2022 दिन सोमवार को उत्तर प्रदेश भारत स्काउट और गाइड प्रयागराज के तत्वाधान में पांच दिवसीय डी.एल.एड. छात्राध्यापक/ छात्राध्यापिकाओ का स्पेशल इंट्रोडक्टरी कोर्स प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सन्त सिंह इंस्टिट्यूट के प्रभारी डा समर बहादुर यादव रहे मुख्य अतिथि ने कार्यक्रम शुभारंभ से पहले सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलित किए श्याम बाबू यादव जिला संगठन कमिश्नर जनपद कौशांबी ने मुख्य अतिथि को स्कार्फ पहनाकर स्वागत किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डा समर बहादुर यादव ने कहा कि स्काउट गाइड ऐसी शिक्षा है जो बच्चों को शारीरिक मानसिक एवं बौद्धिक विकास करता है और निस्वार्थ भाव से सेवा कार्य करने के लिए हमेशा समर्पित व तत्पर रहता है डीएलएड छात्राध्यापक/ छात्राध्यापिका ने स्काउट गाइड का इतिहास, नियम, प्रतिज्ञा, सिद्धांत, शिविर के नियम ,व ध्वज शिष्टाचार के बारे में प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कार्यक्रम के संचालन शिविर संचालक श्याम बाबू यादव जिला संगठन कमिश्नर के द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रवक्ता धर्मेंद्र यादव सहित तमाम लोग उपस्थित रहे।

खान पान वेषभूषा एवं भाषा में भारत मे देखने को मिलता है परिवर्तन : प्राचार्य

अखंड भारत संदेश

सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम में उपस्थित डायट प्राचार्य व अन्य

कौशाम्बी। महामाया राजकीय महाविद्यालय में 26 सितंबर 22 को 'सेवा पखवाड़ा' के अन्तर्गत एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के अंतर्गत विविधता में एकता कार्यक्रम के अंतर्गत सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर किया गया। सरस्वती वंदना एवं स्वागत गीत की प्रस्तुति मोहिनी केसरवानी एवं अंकिता ओझा द्वारा की गई कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ विनय कुमार सिंह ने की कार्यक्रम में मुख्य अतिथि संदीप कुमार प्रबंधक यूको बैक एवं विशिष्ट अतिथि विजय कुमार सहायक शिक्षक ,कन्नड़ भाषा जवाहर नवोदय विद्यालय रहे महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ विनय कुमार सिंह ने कहा कि भारत में खान - पान, वेषभूषा एवं भाषा में परिवर्तन देखने को मिलता है अभिषेक, विभा, पूजा, अमृत, जयदीप, संध्या, अभिलाषा, राधा, पिंकेश आदि ने अनेकता में एकता विषय पर नाटक प्रस्तुत किया। इसके बाद नुक्कड़ नाटक के माध्यम से मोहिनी, प्रियंका, अवन्तिका, आयुषी, अभिषेक, अंकिता आदि ने भारत कि सर्वधर्म सम्पन्नता को प्रदर्शित किया। विजय कुमार ने कहा कि नवोदय विद्यालय कि माइग्रेशन पालसी विविधता में एकता को बढ़ावा देती है। इसके अन्तर्गत अलग अलग भाषा प्रत्येक नवोदय विद्यालय में पढ़ाई जाती है संदीप कुमार ने पश्चिम बंगाल के खान-पान, वेषभूषा , त्योहार आदि के बारे में बताया।कार्यक्रम का संचालन डॉ अजय कुमार ने किया। धन्यवाद ज्ञापन श्रीमती रीता दयाल ने किया कार्यक्रम में डॉ अरविन्द कुमार, डॉ अनिल कुमार, डॉ नीलम बाजपेई,डॉ भावना केसरवानी, डॉ तरित अग्रवाल, पवन कुमार, नीरज कुमार सिंह , डॉ रमेश चंद्र, डॉ शैलेश मालवीय एवं समस्त छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

अधेड़ पर कुल्हाड़ी से किया प्राण घातक हमला

कौशांबी। पिपरी थाना क्षेत्र के चायल तहसील के पन्ना स्टोर हाउस के पास एक अधेड़ पर कुल्हाड़ी रॉड से हमला किया गया है जिससे अधेड़ को चोटें आई हैं दहशत फैलाने के लिए फायरिंग की गई है घायल को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। राघवेंद्र उम्र 30 वर्ष पुत्र रुद्रदेव मिश्र निवासी कटरा किसी काम के लिए गए थे वही चायल निवासी संतोष मंटू मनोज शंकर अजय और सनतू से किसी बात को लेकर उनसे कहासुनी हो गई इतने पर आरोपियों ने राघवेंद्र को कुल्हारी और राड से मारना शुरू कर दिया और जान से मारने की नियत से फायर कर दिया बताया जा रहा है कि राघवेंद्र को गंभीर चोटे आई हैं घायल को एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है मामले की सूचना पिपरी थाना पुलिस को दी पुलिस ने आरोपियों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर छानबीन में जुट गयी है।

शिक्षक से चेयरमैन बनने की नियत रखने वाले शिक्षक की बदनीयति शुरू !

अखंड भारत संदेश

पश्चिम शरीरा कौशाम्बी। बेसिक शिक्षा परिषद के पश्चिम शरीरा क्षेत्र के एक सरकारी स्कूल में शिक्षक के पद पर तैनात एक शिक्षक इन दिनों नगर पंचायत पूरब पश्चिम शरीरा से चेयरमैन का चुनाव लड़ने का ख्वाब देख रहा है स्कूल में ड्यूटी करने के बजाय यह शिक्षक ड्यूटी छोड़कर अपने चुनाव प्रचार में लग गया है कुछ देर स्कूल में रहने के बाद यह शिक्षक स्कूल छोड़कर चुनाव प्रचार में लग जाता है अपने चुनाव प्रचार को गति देने के लिए उक्त शिक्षक ने राजेंद्र सोनकर को 10 हजार रुपए महीने वेतन पर प्रचार करने के लिए लगाया था नवंबर 2021 से मार्च 2022 तक राजेंद्र ने उक्त शिक्षक के चुनाव का प्रचार किया लेकिन जब राजेंद्र ने शिक्षक से अपनी मेहनताना मांगी तो उसके साथ शिक्षक में गाली गलौज कर फर्जी मुकदमे में फंसाने की धमकी देना शुरू कर दिया है स्कूली बच्चों को पढ़ाने के बजाय शिक्षक द्वारा चुनाव प्रचार किए जाने से बेसिक शिक्षा की शिक्षा व्यवस्था चौपट हो गई है लेकिन कई महीने से शिक्षण कार्य छोड़ कर स्कूल से गायब रहने वाले शिक्षक के कारनामे को अभी तक शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने गंभीरता से नहीं लिया है इतना ही नहीं चुनाव प्रचार के लिए लगाए गए राजेंद्र से शिक्षक स्कूल में भी बच्चों को पढ़ाने का काम लेते थे लेकिन जब राजेंद्र को मेहनताना मांगी तो उसकी नियत बदल गयी कई महीने बाद भी शिक्षक से मजदूरी की रकम नहीं मिली तो राजेंद्र ने शिक्षक के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है और शिक्षक से चेयरमैन बनने की नियत रखने वाले अध्यापक के कारनामों की शिकायतें शुरू कर दी हैं अब सवाल उठता है कि अभी नुमाइंदगी नहीं हुई हैं बाद नियति और गुंडई शुरू हो गई है यदि आम जनता ने शिक्षक को चेयरमैन बना दिया तो यह कितनी गुंडई और बेईमानी करेंगे इसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता है।

गरीबों के घर बारिश में ढहे, नहीं मिली सरकारी मदद

कौशाम्बी। जिले में लगातार हो रही बारिश गरीबों के लिए आफत बन गई है। बारिश की वजह से कच्चे घर गिरने लगे हैं। सिराथू तहसील क्षेत्र लगभग 40 परिवार घर से बेघर हुए लोगों को अब सरकारी मदद की आस है। ग्राम प्रधानों के घरों में पीड़ित सुबह-शाम दस्तक दे रहे हैं। प्रधानों ने इसकी जानकारी भी राजस्व कर्मियों को दी है, इसके बाद भी मदद को कोई हाथ नहीं बढ़ा रहा है। बारिश अब लोगों के लिए कहर बन गई है। पिछले तीन दिनों से जिले में लगातार बारिश हो रही है,लगातार बारिश के चलते कच्चे घर सीलन आने की वजह से गिरने लगे। सिराथू तहसील क्षेत्र में 39 कच्चे घर ढह गए हैं। वहीं गुरुवार को बरौली में एक महिला का मकान जमीदोंज हो गया। कच्चे घरों के धराशायी होने से लोग खुले आसमान के नीचे रहने को मजबूर हो गए हैं। परिवार समेत लोग दूसरों की शरण में किसी तरह रात गुजार रहे हैं। वह मदद के लिए इधर-उधर भटक रहे हैं। ग्राम प्रधानों से लोगों ने गुहार लगाई है। ग्राम प्रधानों ने इसकी जानकारी हलका लेखपाल को दी है। लेखपालों को सर्वे करने का निर्देश एसडीएम ने दिया है, लेकिन पीड़ितों तक लेखपाल नहीं पहुंच सके हैं। इससे पीड़ितों को सरकार से मिलने वाली सहायता नहीं मिल पा रही है।

दीवार फांद घर में घुसे चोर उठा ले गए नगदी व जेवर

अखंड भारत संदेश

पूर्व में हुई आधा दर्जन चोरी की घटनाओं का पुलिस नहीं कर सकी खुलासा

करारी कौशाम्बी। करारी थाना क्षेत्र में इन दिनों चोर गिरोह बेखौफ तरीके से सक्रिय हैं आए दिन घटनाओं को अंजाम देकर चोर समान उठा ले जाते हैं लेकिन पुलिस खुलासे के नाम पर फिसड्डी साबित होती है बीती रात पवारा गांव में चोरों ने एक घर को निशाना बनाया है दीवार फांद कर घर के भीतर घुसे चोर घर के अंदर से सोने चांदी के जेवर नगदी बक्सा कपड़ा आदि सामान उठा ले गए हैं परिजन घर के बाहर सो रहे थे आधी रात को चोर घटना को अंजाम देकर समान उठा ले जाने में कामयाब हो गए हैं इलाके में पूर्व में भी चोरी की कई घटनाएं हो चुकी हैं लेकिन किसी मामले का खुलासा पुलिस नहीं कर सकी है जिससे लोगों के बीच भय का माहौल व्याप्त है। घटनाक्रम के मुताबिक करारी थाना क्षेत्र के पवारा गांव निवासी उदित नारायण पुत्र कामता प्रसाद अपनी पत्नी के साथ दरवाजे के बाहर सो रहे थे आधी रात को दीवार फांद कर घर के अंदर घुसे चोर घर में रक्खा चांदी की हाफ पेटी चांदी की पायल सोने के कान की बाली और 15 हजार रुपए नगद उठा ले गए हैं मामले की सूचना पीड़ित परिजनों ने पुलिस को दिया है लेकिन पुलिस किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सकी है। इसके पहले भी क्षेत्र के दुक्खू पुत्र हरिलाल निवासी इब्राहिमपुर के घर चोरों ने घटना को अंजाम दिया था दिनेश पुत्र अमृतलाल शुक्ला शुक्लन का पूरा के घर चोर लगभग 80 हजार रुपए के जेवर नकदी आदि सामान दिसंबर 2021 में उठा ले गए हैं घटना का खुलासा पुलिस नहीं कर सकी है चोरी की घटनाओं को अंजाम देकर चोर फरार हो रहे हैं राजेश कुमार पुत्र चौबे लाल निवासी बंधवा कल्याण के घर दिसम्बर 2021 में घुसे चोरों ने लगभग 4 लाख रुपए का सामान उठा ले गए है पूर्व की घटनाओं का खुलासा पुलिस नही कर सकी कि राम लौटन निवासी शिवनाथ का पूरा के घर को चोर गिरोह के सदस्यों ने फिर निशाना बनाया और लाखों रुपए का सामान उठा ले गए लगातार हो रही घटनाओं के बाद करारी पुलिस खुलासे के प्रति लगातार लापरवाह बनी रही और चोर गिरोह के सदस्य लगातार घटनाओं को अंजाम देते रहे लेकिन पुलिस खुलासे में लगातार लापरवाह बनी रही विनोद सरोज निवासी बंधवा कल्याण के घर से जनवरी 2022 में लाखों रुपए का सामान उठा ले जाने में चोर कामयाब हो गए और पुलिस अंधेरे में तीर मारती रह गई इतना ही नहीं दुक्खू पुत्र हरिलाल के घर को फिर फरवरी 2022 में निशाना बनाते हुए चोर 20 हजार रुपए से अधिक का सामान उठा ले गए इस मामले का भी खुलासा पुलिस नहीं कर सकी प्राथमिक विद्यालय बराई बंधवा से 25 दिन पूर्व गैस सिलेंडर चूल्हा अरहर की दाल भगोना बर्तन आदि सामान चोर उठा ले गए हैं मीरापुर गांव में भी 6 महीने पहले चोरी की घटनाएं हो चुकी हैं लेकिन लगातार हो रही घटनाओं के खुलासे के प्रति थाना पुलिस गंभीर नहीं है और लापरवाह थाना पुलिस पर आला अधिकारी भी कठोर कार्यवाही अभी तक करते नहीं दिख रहे हैं।

चोरों का सुराग लगाने में असफल पिपरी पुलिस!

कौशाम्बी। पिपरी थाना क्षेत्र के भीखपुर मेंडवारा गांव निवासी शिवम कुशवाहा नाम का छात्र शनिवार के दिन बाइक से कादिलपुर रोड के किनारे स्थित कोचिंग में पढ़ाई करने गया था। छात्र कोचिंग के बाहर बाइक खड़ी कर अंदर पढ़ाई करने चला गया। पढ़ाई करने के बाद छात्र जब बाहर आकर देखा तो जहां पर वह बाइक खड़ी किया था वहां पर बाइक मौजूद नही थी। यहां वहां देखने के बाद बाइक कहीं नहीं दिखाई दी तो छात्र पिपरी थाना पहुंचकर शिकायती पत्र देकर पिपरी पुलिस से मदद की गुहार लगाई है। अब सवाल यह उठ रहा है कि पिपरी पुलिस उक्त चोरों का सुराग कितने दिन बाद लगा पाएगी जो पिपरी पुलिस के लिए सिरदर्द बन गए हैं कभी दिन के उंजाले में तो कभी रात के अंधेरे में चोर बेखौफ होकर से चोरी की घटना को अंजाम दे रहे हैं। इस थाना क्षेत्र के भिन्न - भिन्न गांव में आए दिन चोर चोरी की घटना को अंजाम देकर बेखौफ होकर खुलेआम घूमते हैं। कई चोरियों के बाद भी पिपरी पुलिस चोरों का सुराग लगाने में पूरी तरह से असफल है। पिपरी थाना क्षेत्र में कभी चोरों के द्वारा किसी के घर का सामान लूट लिया जाता है तो कभी किसी की भैंस चोरी हो जाती है इन सब के बावजूद दिन के उंजाले में कभी किसी की बाइक चोरों के द्वारा चुरा ली जाती है इस तरह की घटना पिपरी थाना क्षेत्र में आम बात हो गई है। दबाव ज्यादा होने पर कुछ मामले तो अभिलेखों में दर्ज कर लिए जाते हैं लेकिन कुछ मामले में रिपोर्ट भी दर्ज नहीं होती इस तरह करके बीते दो महीने के अंदर पिपरी थाना क्षेत्र विभिन्न गांवों में लगभग एक दर्जन से अधिक चोरी हो चुकी है जिसका खुलासा आज तक नही हुआ है। इतनी चोरियों के बाद भी पिपरी पुलिस हांथ पर हांथ रखकर बैठी है। आखिर पुलिस का मुखबिर तंत्र कहां सो रहा है, मुखबिर तंत्र का सहारा पिपरी पुलिस क्यों नही ले रही है इन सभी चीजों का जवाब क्षेत्रीय जनता पिपरी पुलिस से जानना चाहती है।

संपादकीय

मुक्त व्यापार नीति में खुलापन दिखाने की जरूरत

चाइना प्लस वन के कारण खुली अवसर की यह खिड़की हमेशा के लिए नहीं खुली रहेगी। श्रम का निर्यात हमें वस्त्र, पर्यटन, कृषि प्रसंस्करण या सॉफ्टवेयर सेवाओं में उच्चतर लक्ष्य पाने में प्रतिस्पर्धी बढ़त देता है। सभी क्षेत्रों में मुक्त या लगभग मुक्त व्यापार को अपनाना हमारे हित में है। भले ही मंदी के असर से प्रभावित दुनिया में व्यापार में हमारी हिस्सेदारी 3 से 4 प्रतिशत तक बढ़ती है तो भी यह भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ा बढ़ावा होगा। भारत तीन साल पहले चीन सहित 15 देशों के बीच एक मुक्त व्यापार समझौते क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी आरसीईपी से अचानक बाहर निकल गया था। आरसीईपी व्यापार वार्ता लगभग 10 वर्षों से चल रही थी जिसमें भारत सक्रिय और उत्साही भागीदार रहा था। मौजूदा आरसीईपी समूह वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 30 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करता है तथा इसकी हिस्सेदारी बढ़ रही है। भारत के बिना आरसीईपी का अंदरुनी व्यापार 2.3 ट्रिलियन डॉलर का है। अंततः आरसीईपी समझौता इस साल 1 जनवरी को लागू हुआ। समझौते में शामिल देश इस इंतजार और उम्मीद में थे कि भारत इसमें शामिल होगा। इस समझौते में सहयोग के व्यापक क्षेत्र शामिल हैं तथा सभी प्रकार के शुल्कों में से लगभग 90 प्रतिशत को समाप्त करने का प्रयास किया गया है जिससे यह एक प्रकार का आर्थिक संघ बन जाएगा। भारत ने अंततः इसमें शामिल नहीं होने का निर्णय शायद इस आशंका और डर के कारण लिया कि यदि भारत में चीनी सामान शुल्क मुक्त प्रवेश करेंगे तो इससे घरेलू बाजार डूब जाएगा। हालांकि चीन के साथ हमारा व्यापार घाटा पिछले तीन वर्षों से लगातार बढ़ रहा है तथा लद्दाख में संघर्ष के बावजूद कुल व्यापार भी बढ़ा है। भारत की सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि जीडीपी ग्रोथ भी 7 या 7.5 फीसदी की वृद्धि की ओर लौटती दिख रही है। भारत को कई वैश्विक निवेशकों की चीन प्लस वन रणनीति से अंततः लाभ होगा क्योंकि वे चीन के बाहर वियतनाम, थाईलैंड या यहां तक कि भारत जैसे अन्य देशों में कारखाने स्थापित करना चाहते हैं। आरसीईपी पर हस्ताक्षर न कर भारत ने इलेक्ट्रॉनिक्सए कपड़ा तथा ऑटोमोटिव जैसे क्षेत्रों में विनिर्माण आपूर्ति श्रृंखला के विभिन्न हिस्सों में पूंजी निवेश आकर्षित करने की अपनी संभावनाओं को नुकसान पहुंचाया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब निवेशक अपने निवेश का ठिकाना चुनते हैं, जो एक पूरी मूल्य श्रृंखला में फैला हुआ है और जो श्रृंखला बिना बाधाओं के देशों की सीमा पार करती है, तो वे माल की निर्बाध आवाजाही आसान बनाने के लिए आरसीईपी क्षेत्र में रहना चाहेंगे। जब शेष श्रृंखला आरसीईपी देशों में है तब यदि भारत आरसीईपी से बाहर है तो यह मूल्य श्रृंखलाओं में निवेशकों के लिए नुकसानदायक है। इसलिए केवल आरसीईपी के व्यापार घाटे के पहलू पर ध्यान केंद्रित कर भारत मूल्य श्रृंखला बस में बैठने से चूक सकता है। यह भी उल्लेखनीय है कि वॉकआउट के फैसले से पहले भारत का 15 में से 12 देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौता हो चुका है। भारत ने अब ऑस्ट्रेलिया के साथ भी मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं जो आरसीईपी में शामिल है। दुनिया में तीन बड़े व्यापार समूह हैं जो एशिया के बड़े हिस्सों में फैले हुए हैं। आरसीईपी के अलावा व्यापक तथा प्रगतिशील समझौते के लिए अन्य दो ट्रांस पैसिफिक पार्टनरशिप सीपीटीपीपी और इंडो पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क आईपीईएफ कार्यरत हैं।

पर्यटन में छिपे हैं खुशियों के उजाले

आज हर व्यक्ति किसी-ना-किसी परेशानी से घिरा हुआ है, महंगाई, बेरोजगारी, भय और जीवनसंकट के इस दौर में ऐसा लगता है मानो खुशी एवं मुस्कान तो कहीं गुम हो गई है। बावजूद इन सबके हर व्यक्ति को अपने जीवन में कुछ समय ऐसा जरूर निकालना चाहिए जिसमें खुशी, शांति एवं प्रसन्नता के पल जीवंत हो सके, इसका सशक्त माध्यम है पर्यटन। खुशियों को गले लगाने के लिये एवं शांति एवं उल्लासपूर्ण जीवन जीने के लिये पर्यटन पर जरूर निकलना चाहिए। जीवन में पर्यटन के सर्वाधिक महत्व के कारण ही हर साल 27 सितम्बर को विश्व पर्यटन दिवस मनाया जाता है। पर्यटन सिर्फ हमारे जीवन में खुशियों के पलों को वापस लाने में ही मदद नहीं करेगा बल्कि यह किसी भी देश के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का माध्यम भी बनेगा। इनदिनों समूची अर्थव्यवस्था अस्तव्यस्त हो गयी है, हर देश की पहली जरूरत अर्थव्यवस्था को मजबूत करना है उसमें पर्यटन की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। क्योंकि कई देशों की अर्थव्यवस्था पर्यटन-उद्योग के इर्द-गिर्द घूमती रही है। यूरोपीय देश, तटीय अफ्रीकी देश, पूर्वी एशियाई देश, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और भारत आदि ऐसे देश हैं जहां पर पर्यटन उद्योग से प्राप्त आय वहां की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करता है। पर्यटन का महत्व और पर्यटन की लोकप्रियता को देखते हुए ही संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1980 से 27 सितंबर को विश्व पर्यटन दिवस के तौर पर मनाने का निर्णय लिया। विश्व पर्यटन दिवस के लिए 27 सितंबर का दिन चुना गया क्योंकि इसी दिन 1970 में विश्व पर्यटन संगठन का संविधान स्वीकार किया गया था। पर्यटन दिवस को वैश्विक पर्यटन को बढ़ावा देने के प्रयास हेतु मील के पत्थर के रूप में देखा जाता है एवं इस दिवस को मनाने का उद्देश्य विश्व में इस बात को प्रसारित तथा जागरूकता फैलाने के लिए हैं कि किस प्रकार पर्यटन वैश्विक रूप से, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा आर्थिक मूल्यों को तथा आपसी समझ बढ़ाने में सहायता कर सकता है। भारत जैसे देशों के लिए पर्यटन का खास महत्व है। देश की पुरातात्विक विरासत या सांस्कृतिक धरोहर केवल दार्शनिक, धार्मिक, सांस्कृतिक स्थल के लिए नहीं है बल्कि यह राजस्व प्राप्ति का भी स्रोत है। पर्यटन क्षेत्रों से कई लोगों की रोजी-रोटी भी जुड़ी है। आज भारत जैसे देशों को देखकर ही विश्व के लगभग सभी देशों में पुरानी और ऐतिहासिक इमारतों का संरक्षण, संवर्द्धन किया जाने लगा है। भारत असंख्य पर्यटन अनुभवों और मोहक स्थलों का देश है। चाहे भव्य स्मारक हों, प्राचीन मंदिर या मकबरे हों, नदी-झरने, प्राकृतिक मनोरम स्थल हो, इसके चमकीले रंगों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रौद्योगिकी से चलने वाले इसके वर्तमान से अटूट संबंध है। केरल, शिमला, गोवा, आगरा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, मथुरा, काशी जैसी जगहें तो अपने विदेशी पर्यटकों के लिए हमेशा चर्चा में रहती हैं। भारत में अपने लोगों के साथ लाखों विदेशी लोग प्रतिवर्ष भारत घूमने आते हैं। भारत में पर्यटन की उपयुक्त क्षमता है। यहां सभी प्रकार के पर्यटकों को चाहे वे साहसिक यात्रा पर हों, सांस्कृतिक यात्रा पर या वह तीर्थयात्रा करने आए हों या खूबसूरत समुद्री-तटों की यात्रा पर निकले हों, सबके लिए खूबसूरत जगहें हैं। दिल्ली, मुंबई, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, दक्षिण भारत के अनेक राज्यों में तो लोगों को घूमते-घूमते महीना बीत जाते हैं। भारत अपनी सुंदरता के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। भारत में विभिन्न संप्रदाय-धर्म और जाति के लोग एक साथ मिलकर रहते हैं। अपनी समृद्ध सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक धरोहर के कारण भारत दुनिया के प्रमुख पर्यटन देशों में शुमार होता है। यहां के हर राज्य की अलौकिक और विलक्षण विशिष्टताएं हैं जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। उन पर्यटकों के लिए भारत-यात्रा का विशेष आकर्षण है जो शांत, जादुई, सौंदर्य और रोमांच की तलाश में रहते हैं। इन पर्यटकों के लिये भारत में विपुल यात्रा साहित्य अपनी एक विशेष पहचान और उपयोगिता को लेकर प्रस्तुत होता रहा है। अब तक यात्रा साहित्य की दृष्टि से राहुल सांकृत्यायन का मेरी तिब्बत यात्रा, डॉ. भगवतीशरण उपाध्याय का सागर की लहरों पर, कपूरचंद कुलिश का मैं देखता चला गया, धर्मवीर भारती का ढेले पर हिमालय तथा नेहरू का आंखों देखा रूस, रामेश्वर टांटिया का विश्व यात्रा के संस्मरण, आचार्य तुलसी का यात्रा साहित्य की ही भांति मेरे मित्र श्री पुखराज सेठिया का आओ घूमे अपना देश एक मार्मिक और रोचक यात्रा-वृतांत है। इन ग्रंथों में तथ्यपरकता, भौगोलिकता, रोचकता, सरसता और सहजता आदि यात्रा-वृत्त के सभी गुण समाहित हैं। यात्रा ग्रंथों के कारण देश की इन विविधताओं ने ही देश एवं दुनिया के अनेक यायावरी लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है। इन यायावरी पुरुषों के जीवन का लक्ष्य जीवन की आपाधापी, भागदौड़ से हटकर प्रमुख पर्यटन स्थलों के बीच जीवन के मायने ढूंढ़ना रहा है। इसी सत्य की खोज ने उन्हें ऐसे-ऐसे ऐतिहासिक, प्राकृतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक स्थलों से साक्षात्कार करवाया है। उनकी इन्हीं यात्राओं के दौरान अनुभूत तथ्यों का प्रभावी एवं जीवंत चित्रण इन यात्रा ग्रंथों में किया है। जो अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण सामग्री एवं मौलिक तथ्यों को पर्यटकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है। इन यात्रा-ग्रंथों में केवल प्रमुख दर्शनीय स्थलों का वर्णन नहीं है बल्कि वहां के लोगों, वहां के खान-पान, वहां की जीवनशैली, वहां के सांस्कृतिक मूल्य, वहां के ऐतिहासिक तथ्य का भी जीवंत प्रस्तुतीकरण है। यह भारत पल-पल परिवर्तित, नितनूतन, बहुआयामी और इन्द्रजाल की हद तक चमत्कारी यथार्थ से परिपूर्ण है। इस भारत की समग्र विविधताओं, नित नवीनताओं और अंतर्विरोधों से साक्षात्कार करना सचमुच अलौकिक एवं विलक्षण अनुभव है। जिससे इस बहुरूपी भारत को उसके बहुआयामी और निहंग वास्तविक रूप में देखा जा सके और ऊबड़-खाबड़ अनगढ़ता की परतों में छिपी सुंदरता को उद्घाटित किया जा सके। हम भारत को एक गुलदस्ते की भांति अनुभव करते हैं, एक ऐसा गुलदस्ता जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के पुष्प सुसज्जित हैं। किसी फूल में कश्मीर की लालिमा है तो किसी में कामरूप का जादू। कोई फूल पंजाब की कली संजोए हैं, तो किसी में तमिलनाडु की किसी श्यामा का तरन्नुम। किसी में राजस्थान के बलिदान की गाथाएं है तो किसी में उत्तरप्रदेश की धार्मिकता। महाराष्ट्र, गुजरात, पश्चिम बंगाल और अन्य प्रदेशों में तो विविधता में सांस्कृतिक एकता के दर्शन होते हैं। इसी भांति जैसलमेर में पर्यटन से हटकर वहां संग्रहीत प्राचीन पांडुलिपियों की विशद् जानकारी, स्थापत्य कला एवं जैन दर्शनीय स्थलों का अनुभव भी अनूठा है। भारत में प्राचीन समय से पर्यटन की व्यापक संभावनाएं एवं स्थितियां रही है, लेकिन एक समय ऐसा आया जब भारत के पर्यटन स्थल खतरे में नजर आने लगे और लगने लगा कि शायद अब भारत पर्यटक स्थल के नाम पर पर्यटकों की पहली पसंद नहीं रहेगा। दुनिया में आई आर्थिक मंदी और आतंकवाद के चलते ऐसा लगने लगा कि पर्यटक अब भारत का रुख करना पसंद नहीं करेंगे, पर ऐसा नहीं हुआ। भारत की सांस्कृतिक और प्राकृतिक सुन्दरता इतनी ज्यादा है कि पर्यटक ज्यादा समय तक यहां के सुन्दर नजारे देखने से दूर नहीं रह सके। यही वजह है कि भारत में विदेशी सैलानियों को आकर्षित करने के लिए विभिन्न शहरों में अलग-अलग योजनाएं भी लागू की गयीं हैं। भारतीय पर्यटन विभाग ने अतुल्य भारत नाम से अभियान चलाया था। इस अभियान का उद्देश्य भारतीय पर्यटन को वैश्विक मंच पर प्रोत्साहित करना था जो काफी हद तक सफल हुआ। इसी तरह राजस्थान पर्यटन विकास निगम ने रेलगाड़ी की शाही सवारी कराने के माध्यम से लोगों को पर्यटन का लुत्फ उठाने का मौका दिया। जिसे पैलेस ऑन व्हील्स नाम दिया गया। देश के द्वार विदेशी सैलानियों के लिए खोलने का काम यदि सही और सटीक विपणन ने किया तो हवाई अड्डों से पर्यटन स्थलों के सीधे जुड़ाव ने पर्यटन क्षेत्र के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

> इसी सत्य की खोज ने उन्हें ऐसे-ऐसे ऐतिहासिक, प्राकृतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक स्थलों से साक्षात्कार करवाया है। उनकी इन्हीं यात्राओं के दौरान अनुभूत तथ्यों का प्रभावी एवं जीवंत चित्रण इन यात्रा ग्रंथों में किया है। जो अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण सामग्री एवं मौलिक तथ्यों को पर्यटकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है। इन यात्रा-ग्रंथों में केवल प्रमुख दर्शनीय स्थलों का वर्णन नहीं है बल्कि वहां के लोगों, वहां के खान-पान, वहां की जीवनशैली, वहां के सांस्कृतिक मूल्य, वहां के ऐतिहासिक तथ्य का भी जीवंत प्रस्तुतीकरण है

श्री राम जन्मभूमि आन्दोलन के सारथी- श्रद्धेय अशोक सिंघल

मृत्युंजय दीक्षित

राष्ट्रवादी विचारधारा के परिपालक व बहुसंख्य हिंदू समाज में राममंदिर आंदोलन के माध्यम से जागरूकता उत्पन्न करने वाले विश्व हिंदू परिषद के संस्थापक अशोक सिंहल जी के अथक परिश्रम, समर्पित व्यक्तित्व व ओजस्वी उद्बोधनों का ही परिणाम है कि आज हिंदू समाज में सामाजिक समरसता का भाव दिखायी पड़ता है। संत समाज व विभिन्न अखाड़ा परिषदों को एक मंच पर लाने का अकल्पनीय कार्य भी अशोक जी ने ही संभव कर दिखाया । अयोध्या में श्री रामजन्मभूमि मुक्ति के लिए जीवन अर्पण कर सतत प्रयासरत रहने वाले अशोक सिंहल जी ने हिंदुओं की खोती जा रही स्मृतियों को एक बार फिर से संजोने का काम भी कर दिखाया । यह उन्हीं के प्रयासों का परिणाम हैं कि आज देश का बहुसंख्यक समाज अपने आप को गर्व से हिंदू कहना चाहता है। हिंदुत्व के हित का संरक्षण करने व उसके दायित्व का वहन करने के लिए विश्व हिंदू परिषद की स्थापना भी उन्हीं के प्रयासों से संभव हो सकी। अशोक सिंहल जी ने देश , समाज, हिंदू सभ्यता, संस्कृति और संस्कार के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। उन्होने श्री राम जन्मभूमि मुक्ति तथा अयोध्या में भव्य राममंदिर निर्माण के लिए आंदोलनों की झड़ी लगा दी । वे सभी आयोजन काफी अनुशासित होते थे। जनसभाओं व कार्यक्रमों में अशोक जी के ओजस्वी भाषणों को सुनने के लिए भारी भीड़ जमा होती थी और जब यह भीड़ वापस घरों की ओर प्रस्थान करती थी तो उसमें एक नया पन व ताजगी की उमंग होती थी लेकिन किसी प्रकार की उत्तेजना या हिसक वातावरण का प्रदर्शन नहीं होता था। अशोक जी में विरोधाभासी विचार वाले विभिन्न समूहों को साथ में लेकर चलने की अभूतपूर्व कला थी। संघ कार्य करते हुए अशोक सिंघल ने राष्ट्र के एक सच्चे साधक के रूप में अपने आपको विकसित किया और 1942 में संघ के स्वयंसेवक बने। संघ के सरसंघचालक श्री गुरुजी ने 1964 में जाने- माने संत महात्माओं के साथ मिलकर विश्व हिंदू परिषद की स्थापना की। 1966 में विश्व हिंदू परिषद में अशोक जी का पदार्पण हुआ। अदभुत योजक शक्ति,संगठन कुशलता, निर्भीकता,अडिग व्यक्तित्व और सबको साथ लेकर चलने की अशोक जी की विराटता ने हिंदू संगठन के रूप में विश्व हिंदू परिषद को पूरे विश्व में सबसे प्रखर हिन्दू संस्था के रूप में स्थापित किया।

धर्मनिरपेक्षता के नाम पर नेताओं की राजनीति...

वीरेन्द्र सिंह परिहार

कहने को तो हम एक धर्मनिरपेक्ष देश में रहते हैं। तत्कालीन भारत की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने आपातकाल के दौरान इसे संविधान की प्रस्तावना में जुड़वा दिया था। धर्मनिरपेक्षता के गुण-दोष पर जाकर कि धर्मनिरपेक्षता के बजाय सही शब्द पंथनिरपेक्षता है, देखने की यह जरूरत है कि राज्य या शासन देश के नागरिकों के मामलों में धर्म के प्रति क्या सचमुच निरपेक्ष या बराबरी का व्यवहार करता है। उपरोक्त संदर्भों में यूपीए राज के दौर में वह प्रसंग लोगों की याददाश्त में होगा, जब सोनिया गांधी की अध्यक्षता वाली राष्ट्रीय सलाहकार परिषद ने वर्ष 2011 में एक ड्राफ्ट साम्प्रदायिक एवं लक्षित हिस्सा रोकथाम विधेयक 2011 प्रस्तुत किया था। कहने को तो इस विधेयक या ड्राफ्ट का उद्देश्य साम्प्रदायिक घटनाओं पर प्रभावी ढंग से रोक लगाना था। इस विधेयक का तात्पर्य यह था कि हिन्दू आक्रामक है जबकि मुस्लिम, ईसाई और दूसरे अल्पसंख्यक पीड़ित हैं। इस प्रस्तावित विधेयक में ऐसा मान लिया गया था कि दंगा सिर्फ हिन्दू करते हैं, मुसलमान, इसाई और दूसरे सम्प्रदाय के लोग मात्र इसके शिकार होते हैं। यह पहला कानून था जो जाति के आधार पर सजा देने की बात करता था। इस प्रस्तावित विधेयक में यह भी प्रावधान था कि समूह विशेष के व्यापार में बाधा डालने पर भी यह कानून लागू होता। इसका अर्थ यह था कि अगर कोई अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक समाज के किसी व्यक्ति का मकान खरीदना चाहता है और बहुसंख्यक बेचने से मना कर देता है तो इस विधेयक के अन्तर्गत वह अपराधी घोषित हो जाता। यदि किसी हिन्दू की बात से किसी अल्पसंख्यक वर्ग के व्यक्ति को मानसिक कष्ट होता तो वह भी अपराध माना जाता। इसका मतलब तीन तलाक समाप्त करने की मांग, कॉमन सिविल कोड लागू करने की बातें सभी अपराध हो जातीं। आपराधिक कानून के विरुद्ध आरोपी तब तक दोषी था, जब तक वह अपने को निर्दोष न साबित कर दे। इससे मात्र आरोप लगा देने से पुलिस अधिकारी द्वारा वगैर किसी छान-बीन के हिन्दू को जेल भेज दिया जाता। यदि यह विधेयक पारित हो जाता तो हिन्दुओं का भारत में जीना ही दूभर न हो जाता, बल्कि हिन्दू अपने ही देश में द्वितीय श्रेणी का नागरिक हो जाता और उनके अस्तित्व पर भी प्रश्नचिन्ह खड़ा हो जाता। यह बात और है कि तब तक हिन्दू समाज इतना जाग्रत हो चुका था, कि उसके मुखर विरोध के चलते यह प्रस्तावित विधेयक कानून का रूप नहीं ले सका। लेकिन गौर करने की बात यह कि साम्प्रदायिकता रोकने के नाम पर इस देश में कैसे-कैसे घोर साम्प्रदायिक एवं विभेदकारी प्रयास किये गये। इस तरह का यह पहला प्रयास नहीं था, इसके पूर्व 1995 में कांग्रेस सरकार के दौर में वक्फ बोर्ड की धारा 42 में संशोधन कर यह प्रावधान लागू कर दिया गया कि यदि वक्फ बोर्ड किसी जमीन पर दावा कर देता है, तो यह साबित करने का भार जिसकी जमीन है, उसका हो जाता। जिसका उदाहरण अभी तमिलनाडु के त्रिची जिले में सामने आया, जहाँ पर 1500 वर्ष पुराने एक हिन्दू मंदिर पर वक्फ बोर्ड ने अपना अधिकार जता दिया। विडम्बना यह कि इस्लाम को ही दुनिया में आए अभी 1500 वर्ष पूरे नहीं हुये, फिर उसका 1500 वर्ष पुराने मंदिर पर अधिकार के दावे के औचित्य को समझा जा सकता है। इतना ही नहीं त्रिची जिले के 18 हिन्दू बहुल गावों पर जमीनों पर वक्फ बोर्ड ने अपनी सम्पत्ति घोषित करते हुये अपने अधिपत्य में ले लिया है। जबकि उक्त जमीनों के सभी मालिकाना हक गांव वालों के पास हैं। यह बात तब सामने आई जब उक्त गांवों के एक व्यक्ति ने अपनी बेटी की शादी के लिये अपनी जमीन बेचनी चाही, पर रजिस्ट्री विभाग ने उसे वक्फ बोर्ड से एनओसी लाने को कहा और बताया कि उसके बाद ही जमीन बेचने का अधिकार मिल सकता है। तुष्टिकरण की पराकाष्ठा यह कि 1995 में किये गये धारा 3 में संशोधन के तहत ऐसे एकतरफा कानून को किसी सिविल न्यायालय में चुनौती भी नहीं दी जा सकती। मात्र इन्हें ट्रिब्यूनल में चुनौती दी जा सकती है, जिससे सभी सदस्य मुस्लिम होते हैं। जिसमें सेक्सन 85 के तहत ट्रिब्यूनल का फैसला अंतिम और बाध्यकारी होगा। गौर करने का विषय यह कि इस्लामी देशों यथा पाकिस्तान, बांग्लादेश, तुर्की, ईरान में भी ऐसा कानून नहीं है। पर धर्मनिरपेक्ष कहे जाने वाले भारत में ऐसा तुष्टिकरण की पराकाष्ठा वाला कानून है। यद्यपि उक्त कानून को सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता अश्विनी उपाध्याय ने उच्च न्यायालय दिल्ली में चुनौती दी है, पर इसका नतीजा क्या होगा, अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। वक्फ बोर्ड के भी हैसियत के बारे में शायद बहुत लोगों को पता न हो। पर सच्चाई यह कि सेना और रेलवे के बाद सबसे ज्यादा जमीन वक्फ बोर्ड के पास है। बताया जाता है कि 8 लाख एकड़ से ज्यादा भूमि वक्फ बोर्ड के पास है। इतना ही नहीं 8.54509 परिसम्पत्तियां भी वक्फ बोर्ड के पास है। स्थिति यह कि कब्रिस्तान के पास अवैध मजार, मस्जिद की सभी भूमियाँ वक्फ बोर्ड की हो जाता है। बावजूद इसके 2014 में यूपीए सरकार द्वारा जाते-जाते लुटियंस दिल्ली की 123 सरकारी सम्पत्तियां वक्फ बोर्ड को सौंप दी गई। स्थिति की भयावहता यह कि किसी दिन यदि वक्फ बोर्ड यह कह दे कि उत्तर प्रदेश, बिहार जैसे राज्य उसके अधिपत्य में हैं, क्योंकि यहां पर लम्बे समय तक मुस्लिम शासकों का राज रहा है, तो कानूनी स्थिति यही है कि यह राज्य वक्फ बोर्ड के मान लिये जायेंगे और जो भी व्यक्ति या संस्था इससे सहमत नहीं, तो उन्हें साबित करना होगा कि वक्फ बोर्ड का दावा गलत है। कुल मिलाकर स्थितियां प्रस्तावित साम्प्रदायिक एवं लक्षित हिंसा रोकथाम विधेयक की तरह ही है, जिसमें किसी भी स्थिति में हिन्दू को ही यह साबित करना पड़ता कि वह निर्दोष है, और मुसलमान या किसी भी अल्पसंख्यक समुदाय के कहने मात्र से हिन्दू दोषी हो जाता। संभवत ऐसी विषम और विभेदकारी शक्तियों से लैस वक्फ बोर्ड को ही समाप्त करने पर मोदी सरकार गम्भीरता से विचार कर रही है, जो एक उचित और सामयिक कदम कहा जा सकेगा। योगी सरकार ने वक्फ बोर्ड की ऐसी अवैध सम्पत्तियों को लेकर राजस्व अभिलेखों में सुधार के लिये आदेश कर दिया है। इधर कुछ वर्षों से हिन्दुओं में बढ़ती जागरूकता एवं उनमें एक सकारात्मक संगठित होने की प्रवृत्ति के चलते असदुद्दीन ओवैसी और कई हिन्दू विरोधियों का कहना है कि भाजपा और संघ के चलते देश का हिन्दू संकीर्ण, कट्टर और असहिष्णु हो चला है। जबकि सच्चाई यह कि इस देश के हिन्दू समाज को देश की नकली और एकतरफा धर्मनिरपेक्षता क्रमशः समझ में आ रही है।

एक हिन्दू के लिये तो बाल विवाह और पर्दा प्रथा कुरीतियाँ थीं, पर मुसलमानों में तीन तलाक, हलाला और बुरका, हिजाब और बहु विवाह का अधिकार सब उनके निजी

प्रौद्योगिकी और खिलौने

रामानुज पाठक

"विज्ञान" वह है जो क्या? क्यों? कैसे? किसलिए? कब? कहां? का जवाब दे।" प्रौद्योगिकी" वह है जो विज्ञान के सिद्धांतों का व्यावहारिक उपयोग बताए, कोई अनपढ़ व्यक्ति भी जो विज्ञान के सिद्धांत ना जानता हो प्रौद्योगिकी में बहुत अमीर हो सकता है, या प्रौद्योगिकी का बहुत बड़ा जानकार हो सकता है। यह निश्चित नहीं है कि पहले विज्ञान आया या प्रौद्योगिकी लेकिन यह तो अकाट्य सत्य है कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी एक दूसरे के पूरक हैं ।प्रौद्योगिकी ने आज हमारे जीवन को बहुत सरल और आसान बना दिया है। मानव इस अनोखे पृथ्वी ग्रह में सबसे विकसित प्राणी हैं लेकिन अन्य जीवो में भी प्रौद्योगिकी है ,जैसे "शहद" बनाने वाली मधुमक्खी "घोसले" बनाने वाले पक्षी प्रौद्योगिकी में कितने ज्यादा अमीर हैं। खिलौने वास्तव में वह वस्तु या यंत्र हैं जिन्हें खेलकर, देखकर ,सुख एवं आनंद की अनुभूति होती है ।बच्चे सबसे ज्यादा खिलौने देखकर ,खेलकर ही सीखते हैं।रामायण काल में बजरंगबली ने "सूर्य" को खिलौना मानकर ही मुंह में भर लिया था। महाभारत में महाबली भीम ने "हाथियों" को खिलौना मानकर ही 11.2 किलोमीटर प्रति सेकंड के वेग जिसे हम पलायन वेग कहते हैं ,से अंतरिक्ष में फेंक दिया था, पृथ्वी पर कभी फिर वापस नहीं आए। 4000 ईसा पूर्व "पहिए" का आविष्कार हुआ जो शायद मानव जाति की महानतम खोजों में से एक है । "पहिया" की खोज एक खिलौने के रूप में ही हुई थी , जिसने यातायात में क्रांति ला दी है। खिलौने लकड़ी, मिट्टी, प्लास्टिक, सिरेमिक, धातु, आदि के बनते हैं। भारतीय खिलौने परंपरागत, इको फ्रेंडली मैटेरियल, जैसे लकड़ी धातु और यहां तक की सुपारी (रीवा मध्यप्रदेश में बने सुपारी के खिलौने विश्व विख्यात हैं) भारतीय खिलौनों में विज्ञान एवं मनोविज्ञान दोनों है। ट्रेडिशन एवं टेक्नोलॉजी दोनों हैं ।इकोलॉजी भी है साइकोलॉजी दोनो है । भारतीय खिलौनों में विज्ञान भरा पड़ा है भारतीय खिलौनों को खेलकर साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग, मैथमेटिक्स सब कुछ सीखा जा सकता है। चीन ऐसा देश है जो खिलौनों के दम पर ही आज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में विश्व के देशों को भी चुनौती देता खड़ा है। उसने खिलौनों की महत्ता समझा और पूरी अपनी इकोनॉमी खिलौनों के निर्माण एवं निर्यात में लगाई जिससे खिलौनों के क्षेत्र में चीन ने विश्व बाजार में सिरमौर स्थान बनाया ।आज विश्व बाजार चीनी खिलौनों से अटा पड़ा है, भरा पड़ा है, यद्यपि चीनी खिलौने स्वास्थ्य मानकों पर खरे नहीं है, प्लास्टिक एवं अन्य हानिकारक रंगों से बने होते हैं ।भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री ने खिलौनों की महत्ता समझते हुए,उनमें छुपे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को समझते हुए ,भारत में टाइकोथोन हाईकोथून का आयोजन भी कराया ,उन्होंने "मन की बात" में भी कई बार भारतीय खिलौनों का जिक्र किया । आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत भारतीय कारीगरों द्वारा "इको फ्रेंडली" खिलौनों का निर्माण किया जा रहा है ।नई शिक्षा नीति 2020 में भी खिलौने आधारित शिक्षण पर जोर दिया गया है। खिलौनों में विज्ञान के अनेकानेक सिद्धांत भरे पड़े हैं जैसे "गुलेल" द्वारा विज्ञान के स्थितिज ऊर्जा,गतिज ऊर्जा, प्रत्यास्थता, एवं प्रक्षेप्य गति को आसानी से समझा एवं महसूस किया जा सकता है। "लट्टू" द्वारा गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत एवं घूर्णी गति, को आसानी से समझा जा सकता है ।"रूबिक्स क्यूब" और पजल द्वारा मानसिक एवं गणितीय योग्यता का विकास होता है। "शतरंज" जो भारत का प्राचीनतम खेल माना जाता है से बड़ी से बड़ी रणनीतिक कौशलों का विकास होता है। तभी तो मुहावरों तक में कहा जाता है "खेल खेल में"। बड़ी से बड़ी खोजें खिलौने के द्वारा ही हुई है। कंप्यूटर, मोबाइल, रेडियो ,टेलीविजन बीसवीं सदी के बड़े खिलौने माने गए हैं। "रोबोट" और स्मार्ट खिलौने, इलेक्ट्रॉनिक खिलौने हैं। जिन्होंने जीवन के हर क्षेत्र में दखल दिया है । भारत के महान शिक्षाविद आईआईटियन "अरविंद गुप्ता" ने विज्ञान और तकनीकी को खिलौनों द्वारा ही सरल भाषा में समझाया एवं सिखाया।

सोशल मीडिया पर स्क्रॉल होती जिंदगी

डॉ सत्यवान सौरभ

अगर आप समाज से अलग-थलग महसूस करते हैं, और सोशल मीडिया प्लेटफार्म जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम जैसे ऐप्स पर ज्यादा समय बिताते हैं तो एक नए शोध के अनुसार, इससे स्थिति और बिगड़ सकती है। सोशल मीडिया से युवाओं में अवसाद बढ़ रहा है। फेसबुक से डिप्रेशन का खतरा 7% बढ़ा है, फेसबुक से चिड़चिड़ापन का खतरा 20% बढ़ा है। सोशल मीडिया ने मोटापा, अनिद्रा और आलस्य की समस्या बढ़ा दी है, 'फियर ऑफ मिसिंग आउट' को लेकर भी चिंताएं बढ़ गई हैं। स्टडी के मुताबिक सोशल मीडिया से सुसाइड रेट बढ़े है। इंस्टाग्राम से लड़कियों मे हीन भावना आ रही है। सोशल मीडिया के माध्यम से जांच करना और स्क्रॉल करना पिछले एक दशक में तेजी से लोकप्रिय गतिविधि बन गया है। अधिकांश लोगों द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग सोशल नेटवर्किंग साइटों के आदी हो जाने से हो रहा हैं। वास्तव में, सोशल मीडिया की लत एक व्यवहारिक लत है जिस में सोशल मीडिया के बारे में अत्यधिक चिंतित होने की विशेषता है, जो सोशल मीडिया पर लॉग ऑन करने या उपयोग करने के लिए एक अनियंत्रित आग्रह से प्रेरित है, और सोशल मीडिया के लिए इतना समय और प्रयास करते है जो अन्य महत्वपूर्ण जीवन क्षेत्रों को प्रभावित करता है।

वर्तमान समय में फोन बड़े से लेकर बच्चों तक के लए जरूरी हो गया है। बच्चों के स्कूल की पढ़ाई भी ऑनलाइन हुई है। ऐसे में बच्चे फोन पर ज्यादा समय बताते है।

किसानों के मुद्दे को संसद में उठायें सांसदः रुद्र

चित्रकूट। संयुक्त किसान मोर्चा के राज्य कार्यकारिणी सदस्य का रुद्र प्रसाद मिश्र एड ने सांसद आरके सिंह पटेल को सौंपे ज्ञापन में कहा कि संसद में पेश करने से पहले विद्युत संशोधन विधेयक पर किसान मोर्चा से परामर्श लिया जाये।

सोमवार को संयुक्त किसान मोर्चा के राज्य कार्यकारिणी सदस्य का रुद्र प्रसाद मिश्र एड की अगुवाई में सांसद आरके सिंह पटेल को सौंपे ज्ञापन में कहा कि किसानों और किसान नेताओं के खिलाफ आन्दोलन दौरान दर्ज किये सभी मामले वापस लिए जायें। आन्दोलन दौरान अपनी जान गंवाने वाले किसानों को मुआवजा दिया जाये। किसानों पर पराली जलाने के लिए लगाये जुमार्ना कानून को हटाया जाये। उन्होंने सांसद से कहा कि केन्द्र सरकार के किसानों को दिये आश्वासन के दस महीना बीत चुके हैं। एक भी मांग पूरी नहीं हुई। देश के किसानों में व्याकुलता पैदा हो रही है। किसानों को झूंठा आश्वासन देने पर केन्द्र सरकार के खिलाफ एक और आन्दोलन शुरू करने की किसान मांग कर रहे हैं।

का मिश्र ने सांसद से कहा कि अपने निर्वाचन क्षेत्र के सभी किसानों का प्रतिनिधित्व करते हैं। केन्द्र सरकार के किसानों को दिये आश्वासनों को पूरा न करने के मुद्दे को संसद में अविलम्ब उठायें। आश्वासनों को तुरन्त पूरा करने को केन्द्र सरकार को बाधित करें। किसानों के प्रति दृढता से अपनी बात रखें और किसान हितों को आगे बढाने की कोशिश करें। ज्ञापन देने में का रामप्रताप विश्वकर्मा, लल्लूराम त्रिपाठी, शिवप्रसाद, शिवशंकर, अजय सिंह, चुनकूराम पाल, शिवमोहन यादव आदि शामिल रहे।

शारदीय नवरात्र शुरू, पंडालों में बैठने लगी देवी

चित्रकूट। जिले में शारदीय नवरात्र का पर्व शुरू हो गया है। जिला मुख्यालय समेत आसपास के कस्बों के पंडालों में मां दुर्गा की प्रतिमायें स्थापित हो गई हैं। मूर्तिकार प्रतिमाओं को अन्तिम रुप देने में तेजी से जुटे हैं।

सोमवार को जिले में शारदीय नवरात्र का पर्व शुरू हो गया है। कोलकाता के मूर्तिकार नवकुमार ने बताया कि गंगा की मिट्टी लाकर प्रतिमा बनाते हैं। मिट्टी में धान की घास और बांस व सुतली का प्रयोग होता है। प्रतिमा पूरी मिट्टी की होती है। रंग भी अच्छी क्वालिटी का किया जाता है, ताकि चेहरे में चमक अच्छी रहे। पंडालों में प्रतिमायें विराजमान होने लगी हैं। लाइटों के सेट में मूर्ति और सुन्दर लगती है। इस बार जिले में ढाई सौ से ज्यादा प्रतिमाओं के आर्डर मिले हैं। एक मूर्ति तकरीबन 25 हजार रुपये की होती है। कुछ लोग मूर्ति को मानिकपुर कस्बे व मप्र के जबलपुर आदि से भी लाते हैं।

ज्यादातर दुर्गा मां की प्रतिमायें शेर पर बैठी हुई एवं शिवजी को जल चढाती हैं। प्रतिमाओं को ले जाने का सिलसिला शुरू हो चुका है। देवी-मन्दिरों में श्रद्धालुओं की भीड उमडना शुरू हो गई है। पहले दिन जिला मुख्यालय के देवी-मन्दिरों में महिलाओं व पुरुषों ने दुर्गा प्रतिमा की पूजन-अर्चन किया।

गंगा समिति की बैठक, नदी किनारे होगा वृक्षारोपणः डीएफओ

चित्रकूट। जिला गंगा समिति की बैठक में समिति के सदस्य बुन्देली सेना जिलाध्यक्ष अजीत सिंह ने कर्वी में मंदाकिनी किनारे स्थित दो मुक्तिधामों में वृक्षारोपण कराने की बात कही। डीएफओ ने जल्द ही वृक्षारोपण कराने पर सहमति जताई।

सोमवार को जिला गंगा समिति की बैठक कलेक्टेज्ट स्थित सभागार में डीएफओ आरके दीक्षित की अध्यक्षता में हुई। अजीत सिंह ने नदी में हवन-पूजन सामग्री विसर्जित करने को विभिन्न घाटों पर सीमेंटेड ड्रम रखाने का अनुरोध किया। ईओ नगर पालिका रामअचल कुरील ने जल्द व्यवस्था कराने की बात कही। तय हुआ कि मंदाकिनी की स्वच्छता को लेकर जन जागरूकता अभियान चलाया जाये। समिति ने अपील किया कि नदी में किसी भी प्रकार का प्लास्टिक, कचरा गंदगी न प्रवाहित की जाये। हवन पूजन सामग्री सिंगल यूज प्लास्टिक में भरकर कतई न फेंकी जाये। कोई ऐसा करते पकड़े जाने पर उस पर कार्यवाही की जाएगी।

अध्यक्षता कर रहे डीएफओ आरके दीक्षित ने बताया कि जल्द ही गंगा सेना के जरिए मंदाकिनी नदी के किनारे के गांवों में वृक्षारोपण करा दिया जाएगा। नदी में गिर रहे नालों को लेकर सिंचाई विभाग के अधिशाषी अभियंता ने बताया कि वृहद कार्य योजना बनकर शासन में जल निगम ने भेजा था। अब वह स्वीकृति के लिए भारत सरकार के पास गई है। बैठक में पूर्व की बैठकों में आए प्रस्ताव पर चर्चा हुई। बैठक में कर्वी रेंजर नफीस खान, रेंजर रैपुरा, डिप्टी रेंजर हरिशंकर, ईओ राजापुर राम आशीष वर्मा, अधिशाषी अभियंता सिंचाई आशुतोष कुमार, वन दरोगा जितेंद्र प्रताप सिंह, सुरेंद्र कुमार, राधेश्याम दिवाकर समेत समिति से जुड़े अधिकारी मौजूद रहे।

मऊ में बद्हाल सड़क से गुजरना दूभर

चित्रकूट। मऊ नगर पंचायत के वार्ड एनआईए बूथ संख्या 105 मोहल्ला श्यामनगर की दो सौ मीटर कच्ची सडक इस कदर खराब है कि पैदल चलना मुश्किल हो गया है। स्कूल के छोटे-छोटे बच्चे पढने जाने पर गिर जाते हैं। रास्ते में इतने गड्ढे हैं कि कोई न कोई वाहन फंसा रहता है।

सोमवार को मऊ नगर पंचायत के एनआईए बूथ संख्या 105 मोहल्ला श्यामनगर में सड़क की दशा बेहद खराब है। सडक में आगे इंटरलॉकिंग किया गया है, शेष सडक को छोड दिया गया है। मोहल्ले के निवासियों का जीना दूभर है। सुशील कुमार अग्रहरि, राजीव शुक्ला आदि ने बताया कि यह रोड नेशनल हाईवे में मिलती है। 24 घंटे इस रोड में आवागमन रहता है।

छोटे-छोटे बच्चे और डिग्री कालेज तथा इंटर कालेज भी इसी रोड में पडते हैं। इससे आये दिन बच्चे गिरकर घायल होते हैं। रोड खराब होने से किसी दिन कोई बडा हादसा हो सकता है। मोहल्लेवासियों ने एसडीएम नवदीप शुक्ला को ज्ञापन देकर सडक निर्माण कराने की मांग की है। अभी तक कोई कार्यवाही नहीं हुई है।

इस मामले में जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द से मोहल्लेवासियों ने बात की है। जिलाधिकारी ने कहा कि मऊ नगर पालिका की कार्य योजना में सडक पडी है। बजट आने पर तत्काल सड़क बनाई जायेगी। मोहल्ले के मदन सिंह, ध्यानचन्द्र त्रिपाठी, संतोष कुमार, सुनील कुमार आदि ने कई बार अधिकारियों से जर्जर सडक की शिकायत की है।

खून से रंगे हाथ जेल में बना रहे अगरबत्ती

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द व पुलिस अधीक्षक अतुल शर्मा ने जिला करागार का औचक निरीक्षण कर सीसीटीवी कैमरा, हाई सिक्योरिटी बंदीगृह, महिला बंदीगृह को देखकर जेल में बन्द कैदियों की खाना तलाशी कराई।

सोमवार को डीएम-एसपी ने जेल अधीक्षक को निर्देश दिये कि हाई सिक्योरिटी की सुरक्षा में कोई चूक नहीं होनी चाहिए। लगातार सीसीटीवी कैमरे संचालित रहें। डीएम-एसपी ने कहा कि इन दिनों मच्छरों का प्रकोप ज्यादा है। जेल के अन्दर फागिंग व साफ-सफाई का विशेष ध्यान दें। महिला व पुरुष कैदियों के खानपान, स्वास्थ्य की जानकारी लेकर प्रभारी चिकित्साधिकारी को निर्देश दिये कि कारागार में बन्द कैदियों का स्वास्थ्य परीक्षण करते रहें। कोई भी कैदी बीमार नहीं होना चाहिए।

उन्होंने बहुउद्देशीय हाल में कैदियों की बनाई जा रही अगरबत्ती कार्य को देखा। जेल अधीक्षक ने बताया कि प्रिया इंटर प्राइजेज अगरबत्ती बनाने का कच्चा माल उपलब्ध कराकर कैदियों को प्रशिक्षण देती है। कैदी अगरबत्ती का निर्माण कर रहे हैं। कैदियों को अगरबत्ती बनाने का मेहनताना देने की व्यवस्था की गई है। निरीक्षण में जेल अधीक्षक अशोक कुमार सागर, जेलर संतोष कुमार, डिप्टी जेलर पीयूष पाण्डेय, कर्वी कोतवाल एके मिश्रा, प्रभारी डॉ आशीष कनकोरिया आदि मौजूद रहे।

शान्तिपूर्ण त्योहार मनाने में सभी लोग निभायें भूमिकाः डीएम

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द व पुलिस अधीक्षक अतुल शर्मा ने नवदुर्गा पूजा स्थापना, मूर्ति विसर्जन, रामलीला के आयोजकों के साथ बैठक कर त्योहारों को सकुशल व शान्तिपूर्वक सम्पन्न कराने को कहा।

सोमवार को कलेक्टेज्ट सभागार में बैठक करते हुए जिलाधिकारी ने कहा कि मुख्यमंत्री के निर्देश हैं कि अनुमति लेकर ही देवी पंडाल लगायें। सार्वजनिक स्थानों, सडकों पर देवी पंडाल न लगाये जायें। बडे-बडे पंडाल लगाने पर सीसीटीवी कैमरे की व्यवस्था की जाये। पर्व दौरान भीडभाड को देखते हुए अग्निशमन यंत्र की व्यवस्था की जाये। उन्होंने उपजिलाधिकारियों व पुलिस क्षेत्राधिकारियों को निर्देश दिये कि शान्ति समिति की बैठक कर कोई पुराना विवाद हो तो उसे निस्तारित करायें। ईओ व डीपीआरओ को निर्देश दिये कि नगर में साफ-सफाई, प्रकाश व्यवस्था, मूर्ति विसर्जन की तैयारी सभी लोग कर लें। लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिये कि मूर्ति विसर्जन को मुख्य सड़क को दुरुस्त करायें। शान्ति समिति की बैठक में एसडीएम व सीओ वार्ताकर सभी नियमों के बारे में आयोजकों को जानकारी दे दें। उन्होंने कहा कि नदियों में किसी भी दशा में मूर्तियों का विसर्जन नहीं होना है। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि चार-पांच अक्टूबर को नवमीं व दशहरा का पर्व मनाया जायेगा। प्रतिमाओं के विसर्जन में पिछले वर्ष कहीं कोई विवाद हुआ है तो इसकी जानकारी लें। तत्काल निस्तारण कराया जाये। बैठक में संबंधित अधिकारीगण व आयोजक मौजूद रहे।

भाजपा सरकार बनने पर खत्म हो गया जातिवादः देवेश कोरी

चित्रकूट। भाजपा मंडल शिवरामपुर में प्रधानमंत्री के जन्मदिन पर सेवा पखवाडा के तहत विविधता में एकता कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि/प्रदेश मंत्री प्रभारी चित्रकूट दिनेश कोरी ने कहा कि देश-प्रदेश में भाजपा की सरकार बनने पर जातिवाद समाप्त हो चुका है।

सोमवार को भाजपा प्रदेश मंत्री देवेश कोरी ने कहा कि जातिवाद आधारित पार्टियों का खात्मा हो चुका है। भाजपा ने समाज में एकता और सभी को समानता देने का काम करती है। भाजपा जिलाध्यक्ष चन्द्रप्रकाश खरे ने कहा कि भाजपा की सरकार में बिना किसी भेदभाव के सभी को समान रुप से योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है। भाजपा ऐसा दल है जिसमें सभी जातियों का समावेश है। परिवार व जातिवाद नहीं है। पूर्व विधायक आनन्द शुक्ला ने कहा कि प्रधानमंत्री ने मेहतर जाति के लोगों के पैर धुलने का काम किया है। जो आज तक किसी दल ने नहीं किया। संचालन राजेश जायसवाल ने किया।

हैट्रिक चटकाकर कुलदीप यादव ने भारतीय टीम में वापसी पर कही यह बात

चेन्नई । बाएं हाथ के कलाई के स्पिनर कुलदीप यादव ने कहा कि जब भारतीय टीम में उन्होंने अपना स्थान गंवा दिया था तो वह नहीं जानते थे कि इसका सामना कैसे करें लेकिन चोट के कारण लंबे समय तक बाहर रहने के बाद उन्हें अपनी लय बदलने का फायदा मिल रहा है जिससे अब वह असफलता से भयभीत नहीं होते हैं। उत्तर प्रदेश के 27 साल के इस गेंदबाज ने न्यूजीलैंड ए के खिलाफ दूसरे अनाधिकृत वनडे में भारत ए की जीत में हैट्रिक सहित 4 विकेट झटककर अहम भूमिका निभाई।

कुलदीप ने मैच के बाद कहा कि मैं नहीं जानता था कि काफी 'गेम टाइम' नहीं मिलने का सामना किस तरह से करूं। चोट से उबरने के लिए 4 महीने तक बाहर रहने के बाद मैंने महसूस किया कि मुझे तेजी से गेंद फेंकने की जरूरत है और मैंने इस पर काम करना शुरू किया। मैं अब असफलता से नहीं डरता। कुलदीप ने भारत के लिए सात टेस्ट, 69 वनडे और 25 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले हैं।

लेग स्पिनर युजवेंद्र चहल के साथ उनकी जोड़ी 'कुलचा' के रूप में मशहूर हो गई लेकिन वह खराब फॉर्म और चोटों के कारण राष्ट्रीय टीम से अंदर बाहर होते रहे। उन्होंने कहा कि जब आप विफल होते तो आप सीखते हो। जब मैंने जनवरी में भारतीय टीम में वापसी की तो मैं असफलता से भयभीत नहीं था, मैं खेल का आनंद लेना चाहता था। मेरा ध्यान अच्छी लेंथ की गेंद फेंकने पर लगा था क्योंकि विकेट मिलना मेरे हाथों में नहीं था। मैं सिर्फ अच्छी लाइन एवं लेंथ में गेंदबाजी करना चाहता था। कुलदीप ने कहा कि ईमानदारी से कहूं तो जब मैं चोटिल हुआ और इसके बाद वापसी करने के लिए मुझे मेरी लय समझना बहुत महत्वपूर्ण था। मैं थोड़ा धीमा था। सर्जरी के बाद मैंने उस लय में बदलाव किया, मैं अधिक नियंत्रण से गेंदबाजी करने लगा। कुलदीप को पिछले साल सितंबर में इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के दौरान घुटने की चोट लगने के बाद सर्जरी करानी पड़ी। लंबे रिहैब के बाद उन्हें वेस्टइंडीज के खिलाफ तीन मैचों की वनडे श्रृंखला में शामिल किया गया और फरवरी में श्रीलंका के खिलाफ तीन टी-20 मैचों में भी उन्हें चोटिल वाशिंगटन सुंदर की जगह लिया गया। लेकिन वह वेस्टइंडीज और श्रीलंका के खिलाफ केवल एक एक मैच खेले। उन्हें जून में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टी-20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला से पहले नेट में बल्लेबाजी करते हुए फिर हाथ में चोट लग गई। कलाई की चोट से उबरने के बाद वह पिछले महीने वेस्टइंडीज के खिलाफ एक टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में खेले थे। फिर वह जिम्बाब्वे के खिलाफ तीन वनडे की श्रृंखला में भी खेले।

झूलन गोस्वामी ने संन्यास के बाद सोशल मीडिया पर शेयर किया भावुक नोट

लंदन। दो दशक लंबे अंतरराष्ट्रीय करियर के बाद क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास लेने वाली महान तेज गेंदबाज झूलन गोस्वामी ने उम्मीद जतायी कि वह भारत और दुनिया में अगली पीढ़ी की खिलाड़ियों को इस 'खूबसूरत खेल' को खेलने के लिए प्रेरित करने में सफल रहीं हैं। झूलन 39 वर्ष ने अपने करियर का समापन स्वप्निल तरीके से किया जिसमें भारतीय महिला टीम ने लार्ड्स पर तीसरे और अंतिम वनडे में इंग्लैंड को 16 रन से हराकर इंग्लैंड की सरजमीं पर पहली बार श्रृंखला क्लीन स्वीप की।

झूलन ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर पोस्ट किए विदाई संदेश में लिखा कि बतौर क्रिकेटर मैं हमेशा ईमानदार रही हूं और उम्मीद करती हूं कि मैं भारत और दुनिया में महिला क्रिकेट के विकास में योगदान करने में कामयाब रही हूं। मुझे उम्मीद है कि

मैं अगली पीढ़ी की महिलाओं को इस खूबसूरत खेल को खेलने के लिए प्रेरित करने में सफल रही हूं। उन्होंने लिखा- जिस तरह से हर यात्रा का अंत होता है, 20 साल से ज्यादा वर्षों की मेरी क्रिकेट यात्रा भी आज मेरे क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास की घोषणा के साथ खत्म हो गई।झूलन ने अपना क्रिकेट करियर 2002 में शुरू किया था और उन्होंने अपने करियर का अंत महिला क्रिकेट की सर्वाधिक विकेट चटकने वाली गेंदबाज के तौर पर किया। उन्होंने 12 टेस्ट में 44 विकेट, 204 वनडे में 255 विकेट और 68 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में 56 विकेट हासिल किए। उन्होंने कहा कि मेरे लिए यह यात्रा काफी संतोषजनक रही है।

यह काफी उत्साहजनक और रोमांच से भरपूर रही है। मुझे दो दशक तक भारतीय जर्सी पहनने और अपनी सर्वश्रेष्ठ काबिलियत से देश की सेवा करने का सम्मान मिला। मैच से पहले जब भी राष्ट्रगान सुनती तो हर बार गर्व महसूस होता।

झूलन ने लिखा कि मैंने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर के तौर पर अपने जीवन के 20 वर्षों में टीम की अपनी साथी खिलाड़ियों के साथ और मैदान के बाहर प्रत्येक पल का आनंद लिया। मैंने क्रिकेट को हमेशा प्यार किया है और अब जब पेशेवर खिलाड़ी के तौर पर संन्यास ले रही हूं तो मैं तुमसे (क्रिकेट) ज्यादा दूर नहीं रहूंगी।

2002 के नेशनल गेम्स के बाद मेरे अंतरराष्ट्रीय करियर ने उड़ान भरीः सानिया मिर्जा

नई दिल्ली। भारतीय टेनिस की दिग्गज खिलाड़ी सानिया मिर्जा ने नेशनल गेम्स 2022 के शुरू होने से पहले कहा कि उनके मन में इस बात को लेकर कोई संदेह नहीं है कि राष्ट्रीय खेलों ने उनके अंतरराष्ट्रीय करियर को बहुत ज्यादा बढ़ावा दिया। सानिया ने कहा कि मैं केवल 16 साल की थी, जब मैंने 2002 के नेशनल गेम्स में हिस्सा लिया था। तब मैंने अच्छा प्रदर्शन किया था और मैं सुर्खियों में आ गई थी। यह मेरे अंतरराष्ट्रीय करियर के लिए सही साबित हुआ।

सानिया ने अपने शानदार करियर के दौरान छह ग्रैंड स्लैम खिताब जीते हैं। इस टेनिस दिग्गज ने लगभग दो दशक पहले भारत में खूब टेनिस खेली थी, लेकिन इससे पहले दिल्ली में उन्होंने जूनियर नेशनल से लेकर नेशनल गेम्स और फिर हैदराबाद में डब्ल्यूटीए टूर्नामेंट तक का सफर तय किया। सानिया इस बात से उत्साहित हैं कि सात साल के अंतराल के बाद गुजरात में खेल हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह खुद को परखने और फिर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जाने के लिए सही मंच है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय खेल अद्वितीय हैं। यह प्रतियोगिता उभरते खिलाड़ियों और उन अनुभवी खिलाड़ियों का मेल है, जिन्होंने पहले ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई ऊंचाइयों को छू लिया है। उन्होंने कहा कि नेशनल गेम्स में शीर्ष एथलीटों की उपस्थिति उभरती प्रतिभाओं के लिए प्रेरणा का एक बड़ा स्रोत है।

तब मैंने अच्छा प्रदर्शन किया था और मैं सुर्खियों में आ गई थी। यह मेरे अंतरराष्ट्रीय करियर के लिए सही साबित हुआ।

बांग्लादेश में नाव डूबने से 24 की मौत, 30 लापता :महालया उत्सव मनाने मंदिर जा रहे थे अधिकांश लोग, 100 यात्री सवार थे

ढ़ाका। बांग्लादेश में श्रद्धालुओं से भरी एक नाव डूब गई। पंचगढ़ जिले के कोरोटोआ नदी में हुए इस हादसे में 24 लोगों की मौत हो गई, जबकि 30 लापता हैं। अधिकांश यात्री दुर्गा-पूजा से एक दिन पहले महालया उत्सव मनाने के लिए यहां के प्रसिद्ध बिदेशरी मंदिर जा रहे थे। फिलहाल रेस्क्यू टीम लापता लोगों की तलाश कर रही है। मृतकों की संख्या बढ़ सकती है। पंचगढ़ जिले के डिप्टी कमिश्नर मोहम्मद जुहुरुल इस्लाम ने बताया अब तक 60 लोगों का रेस्क्यू किया गया है। 10 से ज्यादा घायलों को इलाज के लिए बोडा के एक हास्पिटल में भर्ती कराया गया है।

बिदेशरी मंदिर जा रहे थे यात्री

बोडा थाने के सब-इंस्पेक्टर शौकत ने बताया कि नदी से 16 शव बरामद किए जा चुके हैं। इनमें तीन बच्चे 11 महिलाएं और

दो पुरुष हैं। आठ की अस्पताल ले जाने के दौरान मौत हो गई। इनमें पांच बच्चे एक महिला और दो पुरुष हैं।

शौकत ने बताया नाव औलिया घाट से दोपहर करीब 1ः30 बजे बिदेशरी हिंदू मंदिर की ओर जा रही थी। नांव में करीब 100 लोग सवार थे। इनमें से अधिकतर यात्री महालया उत्सव मनाने मंदिर जा रहे थे। उन्होंने बताया कि नांव में क्षमता से ज्यादा लोगों के सवार होने की वजह से ये हादसा हुआ।

बांग्लादेश में हो चुके हैं कई बड़े हादसे

बांग्लादेश 230 नदियों से घिरा हुआ है और गंगा-ब्रह्मपुत्र जैसी नदियों के डाउन वे पाथ पर स्थित हैं। यहां नाव पलटने जैसे हादसे आम हैं। इनमें से अधिकतर हादसे सुरक्षा मानकों की अनदेखी और ओवर लोडिंग के कारण होते हैं।

अगस्त 2021 में पैंसेजर नौका एक कार्गो शिप से टकरा गई थी। हादसे के बाद 11 घंटे तक चले रेस्क्यू ऑपरेशन के बाद 21 यात्रियों का शव नौका से बरामद किया था। वहीं अन्य छह यात्रियों के शव नदी में तैरते मिले थे। 19 यात्रियों को बचा लिया गया था। हादसे की वजह ओवरलोडिंग थी।

पिछले साल ही 24 दिसंबर को साउथ बांग्लादेश में एक अन्य हादसे में सुगंधा नदी पर जा रही तीन मंजिला नौका में आग गई थी। घटना में 40 लोगों की मौत हो गई थी, वहीं 100 से अधिक घायल हो गए थे। जब नाव में आग लगी, अधिकतर यात्री गहरी नींद में थे। कई यात्रियों की मौत दम घुटने की वजह हुई थी। नौका में 1000 लोग सवार थे।

20 मार्च 2022 को बांग्लादेश की राजधानी ढाका के बाहरी इलाके में शीतलक्ष्य नदी में एक नौका, कार्गो शिप से टकरा गई थी। हादसे में नौका डूबने के कारण पांच लोगों की मौत हो गई थी और 10 से ज्यादा यात्री लापता हो गए थे। नौका में लगभग 50 यात्री सवार थे।

नौसेना के अधिकारियों की माने तो बांग्लादेश में लाखों लोग राजधानी या डेल्टा देश के प्रमुख शहरों की यात्रा के लिए नावों और घाटों पर निर्भर हैं। लेकिन देश की सैकड़ों हजारों छोटी और मध्यम आकार की नौकाएं 95 प्रतिशत से अधिक न्यूनतम सुरक्षा नियमों को पूरा नहीं करती हैं। इसलिए नदियों में नाव डूबने जैसे हादसे अक्सर होते हैं।

संयुक्त राष्ट्र ने रूसी जनमत संग्रह की भर्त्सना की

-संयुक्त राष्ट्र महासभा में 150 देशों ने यूक्रेन से रूसी सेना वापसी की मांग की

कीव। यूक्रेन में रूस के कब्जे वाले चार क्षेत्रों में जनमत संग्रह की मांग के साथ ही रूसी सेना के हमले जारी हैं। यूक्रेन की सरकार ने आरोप लगाया है कि रूसी सेना ने दक्षिण के नागरिक ठिकानों पर हमले किए हैं और नागरिक सुविधाओं को निशाना बनाया है। यूक्रेन और पश्चिमी देशों ने कहा है कि जनमत संग्रह यूक्रेनी जमीन को हड़पने का रूस का षड्यंत्र है। इसे विश्व मान्यता नहीं देगा। इस बीच संयुक्त राष्ट्र महासभा के तीन चौथाई सदस्य देशों ने यूक्रेन पर हमले के लिए रूस की भर्त्सना के प्रस्ताव पर मतदान किया है। इन 150 देशों ने यूक्रेन से रूसी सेनाओं की वापसी की मांग की है।

यूक्रेन ने कहा है कि रूसी सेना ने रात 35 सैन्य और नागरिक ठिकानों पर मिसाइल हमले और गोलाबारी की जबकि दक्षिणी यूक्रेन के बंदरगाह शहर ओडेसा पर ड्रोन से हमले किए गए। इस हमले में किसी के मारे जाने की सूचना नहीं है। रूस ने यूक्रेन में किसी नागरिक ठिकाने को निशाना बनाए जाने से इनकार किया है।

जानकारी के अनुसार खेरसान में यूक्रेनी सेना ने एक होटल को निशाना बनाया जिससे दो नागरिकों की मौत हो गई। खेरसान पर युद्ध के शुरुआती दिनों में ही रूसी सेना ने कब्जा

कर लिया था। यूक्रेन के रूसी कब्जे वाले लुहांस्क, डोनेस्क, खेरसान और जपोरीजिया इलाकों में तीसरे दिन भी जनमत संग्रह जारी रहा।

यूक्रेनी अधिकारियों ने कहा है कि आमजनों को घरों में रहने और अनिवार्य रूप से मतदान करने के लिए कहा गया है। रूसी सेना रूस में शामिल होने के प्रस्ताव के पक्ष में मतदान के लिए नागरिकों को धमका रही है। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने कहा है कि दुनिया को एक स्वर में रूसी जनमत संग्रह और यूक्रेन में तीन लाख सैनिकों की तैनाती की घोषणा की निंदा करनी चाहिए। संयुक्त राष्ट्र में संबोधन के बाद न्यूयार्क में अंतरराष्ट्रीय मीडिया के समक्ष रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने कहा कि जनमत संग्रह में अगर आमजनों की रूस में शामिल होने की इच्छा जाहिर हुई तो रूसी नागरिक के रूप में उनकी सुरक्षा का पूरा इंतजाम किया जाएगा। जनमत संग्रह वाले इलाके रूस की धरती कहलाएंगे और वहां की वैसे ही सुरक्षा की जाएगी जैसे कि किसी अन्य रूसी इलाके की होती है।

इमरान खान का दावा- भारत से फिर व्यापार शुरू करना चाहती है शहबाज सरकार

पेशावर। पाकिस्तान में सत्ता गंवाने के बाद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान सत्ताधारी शहबाज सरकार के खिलाफ हर दिन हमलावर होते जा रहे हैं। पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने रविवार को कहा कि उनकी सरकार ने 2019 में भारत द्वारा जम्मू कश्मीर का विशेष दर्जा खत्म किए जाने के बाद भारत के साथ व्यापारिक संबंध तोड़ लिए थे लेकिन शहबाज शरीफ के नेतृत्व वाली मौजूदा सरकार फिर से यह शुरू करना चाहती है। खैबर पख्तूनख्वा के कराक में एक रैली को संबोधित करते हुए इमरान खान ने कहा कि पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज की उपाध्यक्ष मरियम नवाज सच बोलने में असमर्थ हैं। खान ने मरियम पर भाई-भतीजावाद को राष्ट्रीय हितों से ऊपर रखने का आरोप लगाया। पूर्व प्रधानमंत्री ने लीक हुए एक ऑडियो का हवाला देते हुए कहा कि मरियम अपने रिश्तेदार के लिए भारत से बिजली संयंत्र मशीनरी आयात करना चाहती हैं। ऑडियो में प्रधानमंत्री शरीफ से कथित तौर पर कहा जा रहा है कि मरियम के रिश्तेदार भारत से बिजली संयंत्र आयात करना चाहते हैं। खान ने कहा, हमारी सरकार ने भारत के साथ व्यापार बंद कर दिया था क्योंकि उसने जम्मू-कश्मीर का विशेष दर्जा समाप्त कर दिया था।

20 साल की हदीस नफाजी को पुलिस ने मारी गोली, हिजाब के विरोध का बन गई थीं प्रतीक

तेहरान। ईरान में हिजाब के खिलाफ महिलाओं का आंदोलन जोर पकड़ रहा है और पुलिस की क्रूरता और दमन की खबरें भी सामने आ रही है। हिजाब के विरोध में ऑनलाइन लोगों के बीच मशहूर हुई 20 साल की हदीस नफाजी को पुलिस ने तेहरान के नजदीक कराज सिटी में प्रदर्शन के दौरान गोली मार दी। हदीस नफाजी का वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुआ था जब वह बिना हिजाब के खिलाफ प्रदर्शन करते हुए पुलिस के सामने पहुंच गई थी और रबर बैंड से अपने बालों को बांध रही थीं। इसके बाद तेजी से ईरान की सड़कों पर लड़कियां प्रदर्शन करती दिखी थीं। ईरान में विरोध प्रदर्शन के दौरान सुरक्षा बलों की कार्रवाई में अब तक 30 से ज्यादा नागरिकों की मौत हो गई है। ये सभी पुलिस द्वारा गिरफ्तारी में महसा अमीनी की मौत के बाद प्रदर्शन कर रहे थे। दरअसल, ईरान में प्रदर्शनों की शुरुआत पिछले हफ्ते हुई थी, जब 22 वर्षीया महसा अमीनी की पुलिस हिरासत में मौत हो गई थी। अमीनी को ठीक से नकाब ना पहनने के आरोप में हिरासत में लिया गया था। सरकारी अधिकारियों का कहना था कि अमीनी की मौत दिल का दौरा पड़ने के कारण हुई, लेकिन अमीनी के परिवार ने दावा किया है कि इसके पहले अमीनी को दिल की बीमारी जैसी कोई शिकायत नहीं थी। परिवार का कहना है कि उसकी पुलिस द्वारा पिटाई से मौत हुई है।

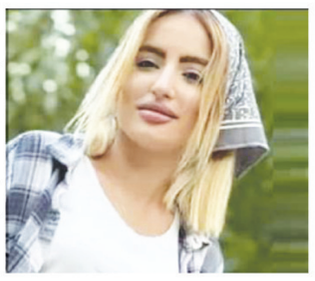

जयशंकर और गुतारेस ने यूएनएससी में सुधारों के साथ यूक्रेन व म्यांमार की स्थिति पर की चर्चा

न्यूयॉर्क/संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र महासभा के सत्र के दौरान विदेश मंत्री एस जयशंकर और संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंतोनियो गुतारेस ने यहां बैठक में सुरक्षा परिषद में सुधार के साथ-साथ यूक्रेन और म्यांमार की स्थिति पर चर्चा की। जयशंकर ने यहां संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) को संबोधित करने के बाद गुतारेस से मुलाकात की। जयशंकर ने ट्वीट किया कि संयुक्त राष्ट्र महासचिव के साथ यूक्रेन संघर्ष, संयुक्त राष्ट्र सुधार, जी20, जलवायु कार्रवाई, खाद्य सुरक्षा और विकास के लिए आंकड़े समेत अन्य विषयों पर बातचीत की। महासचिव के कार्यालय द्वारा जारी बैठक के ब्योरे के मुताबिक गुतारेस ने संयुक्त राष्ट्र के साथ भारत के सहयोग की सराहना की। गुतारेस और जयशंकर ने सुरक्षा परिषद में सुधार और म्यांमा तथा यूक्रेन सहित अंतरराष्ट्रीय स्थिति पर चर्चा की। उन्होंने खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा तथा अंतरराष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली से संबंधित चुनौतियों पर विचार साझा किए। संयुक्त राष्ट्र महासचिव और विदेश मंत्री ने जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता और सतत विकास पर सहयोग को आगे बढ़ाने के प्रयासों पर भी चर्चा की।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
Title UPHIN 29506
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

डॉलर के मुकाबले बेदम हुई दुनिया भर की मुद्राएं

नई दिल्ली,। डॉलर इंडेक्स में आई मजबूती का असर भारतीय रुपया तथा अन्य एशियाई मुद्राओं पर तो पड़ा ही है, ब्रिटिश पाउंड भी इससे अछूता नहीं रह सका है। ब्रिटिश पाउंड आज डॉलर के मुकाबले पिछले चार दशक के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गया। हालांकि ब्रिटिश पाउंड की गिरावट के लिए डॉलर इंडेक्स की मजबूती के साथ ही ब्रिटेन की नई सरकार की ओर से टैक्स में कटौती करने और खर्च को बढ़ावा देने की योजना को भी जिम्मेदार माना जा रहा है।

रूस ने कहा-यूक्रेन में मित्र सरकार बनने के बाद ही रोके जाएंगे हमले

मास्को। रूस ने यूक्रेन पर अपने हमलों का बचाव करते हुए साफ कहा कि कीव में मित्र सरकार बनने पर ही ये हमले रोके जाएंगे। रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने संबोधन में अपने कब्जे वाले यूक्रेनी इलाकों में जबरन जनमत सर्वेक्षण कराने का बचाव भी किया। लावरोव ने कहा कि यूक्रेन के इन इलाकों मे रूसी भाषियों पर अत्याचार किए जा रहे थे।उन्होंने कहा, जो हिस्से और लोग रूस में शामिल होंगे, उनकी हर हाल में पूरी सुरक्षा की जाएगी। यूक्रेन के जरिये पश्चिमी देशों ने रूस के पास सैन्य कार्रवाई के अलावा कोई विकल्प नहीं छोड़ा था। इस हालात में रूस को पश्चिमी देशों ने जबरन घसीटा। उन्होंने कहा, अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को रूस नहीं, बल्कि अमेरिका व उसके सहयोगी मिलकर कमजोर बना रहे हैं।

रूस में मची है भगदड़

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने बुधवार को तीन लाख फौजी यूक्रेन भेजने का एलान किया, जिसके बाद से रूस में भगदड़ मची है। तमाम युवा रूस से बाहर निकलने की

कोशिश कर रहे हैं, क्योंकि उन्हें जबरन सेना में शामिल किए जाने का डर है। यूक्रेन और रूस दोनों ने एक-दूसरे पर हमले का आरोप लगाया। यूक्रेनी सेना ने कहा कि रूस ने बीते 24 घंटे में कई नागरिक ठिकानों को भी निशाना बनाया। वहीं, रूस ने कहा कि यूक्रेनी बलों में खेरसान में एक होटल पर हमला किया, जिसमें दो लोगों की मौत हो गई।

पाकिस्तान के वित्त मंत्री मिफ्ताह इस्माइल ने दिया इस्तीफा, अब इशाक डार संभालेंगे जिम्मेदारी

इस्लामाबाद। आर्थिक संकट से जूझ रहे पाकिस्तान के वित्त मंत्री मिफ्ताह इस्माइल ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। इशाक डार अब नए वित्त मंत्री बनाए गए हैं। डार को वित्त मंत्री बनाने का औपचारिक फैसला लंदन में प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और उनके भाई नवाज शरीफ के बीच हुई बैठक के दौरान लिया गया। बैठक में मिफ्ताह इस्माइल और इशाक डार के अलावा पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) के अन्य नेता मौजूद थे।

इस्माइल ने अपना इस्तीफा नवाज शरीफ को सौंप दिया है जो भ्रष्टाचार के मामलों में दोषसिद्धि के कारण राजनीति से बाहर हैं, लेकिन उनके फैसलों को पार्टी के लिए बाध्यकारी माना जाता है। पीएमएल-एन ने इस्माइल के हवाले से एक बयान में कहा मैंने

चार महीने तक अपनी पूरी क्षमता से काम किया और पार्टी तथा देश के प्रति वफादारी निभाई।

जियो न्यूज के मुताबिक डार प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के साथ लंदन से वापस आएंगे और अगले सप्ताह संभवतः मंगलवार को शपथ लेंगे। डार का संबंध नवाज शरीफ से भी है, क्योंकि उनके बेटे की शादी पूर्व प्रधानमंत्री नवाज की एक बेटी से हुई है।

इमरान खान ने भारत से संबंध को लेकर शहबाज शरीफ पर बोला हमला

पाकिस्तान के पूर्व प्रधान मंत्री इमरान खान ने कहा कि उनकी सरकार ने 2019 में नई दिल्ली द्वारा जम्मू-कश्मीर के विशेष दर्जे को रद्द करने के बाद भारत के साथ व्यापार संबंध तोड़ दिए थे और दावा किया था कि शहबाज शरीफ के नेतृत्व वाली सरकार इसे फिर से शुरू करना चाहती है। खैबर पख्तूनख्वा के कराक में एक रैली को संबोधित करते हुए 69 वर्षीय खान ने यह भी कहा कि पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज की उपाध्यक्ष मरियम नवाज सच बोलने में असमर्थ थीं क्योंकि उन्होंने एक बार फिर उन पर भाई-भतीजावाद को राष्ट्रीय हितों से ऊपर रखने का आरोप लगाया। उन्होंने एक ऑडियो लीक का जिक्र करते हुए कहा कि मरियम अपने दामाद के लिए भारत से बिजली संयंत्र मशीनरी आयात करना चाहती है।

तीन देशों में तूफान से लाखों लोग प्रभावित, खतरे के कारण तटीय इलाके कराए खाली

टालोहासी/मनीला/टोरंटो।

लंदन। अमेरिका, फिलीपीन व कनाडा में तूफानों की वजह से लाखों लोग प्रभावित हो रहे हैं। अमेरिकी राज्य फ्लोरिडा में इयान तूफान की वजह से आपातकाल घोषित किया गया है, जबकि कनाडा फिओना तूफान की वजह से काफी तबाही देखने को मिली है। फिलीपीन में नोरू की वजह से मनीला सहित कई इलाकों को खाली कराया गया। रेड अलर्ट जारी किया गया है।

आठ की मौत

फिओना से कनाडा में बिजली आपूर्ति बाधित होने से पांच लाख लोग अंधेरे में हैं। वहीं, तूफान से प्यूर्टो रिको व डोमिनिकन गणराज्य में आठ लोगों की मौत हुई है।

कई इलाकों में तबाही की आशंका

कैटगरी 5 के महातूफान नोरू की वजह से फिलीपीन में हालात तनावपूर्ण हैं। 240 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से यह तूफान बढ़ रहा है।

इससे राजधनी मनीला सहित कई इलाकों में भारी तबाही की आशंका है। तूफान के रास्ते में आने वाले सैकड़ों तटीय गांवों को खाली कराया जा चुका है।

कैटगरी 4 में बदला इयान

इयान की वजह से फ्लोरिडा के गवर्नर रोन डेसेंटिस ने आपातकाल घोषित करते हुए बताया कि केमैन आइलैंड से निकलने के बाद कैटगरी 3 का तूफान कैटगरी 4 में बदल गया है, जो भारी तबाही मचा सकता है। लोगों को सतर्क रहने व तूफान के रास्ते में नहीं आने की चेतावनी दी गई।

फ्रांस : दुनिया के सबसे विशाल खाद्य उत्पाद बाजार में लगी आग

फ्रांस की राजधानी पेरिस और आस-पास के क्षेत्रों में खाद्य उत्पादों की आपूर्ति करने वाले दुनिया के सबसे बड़े बाजार में आग लग गई। रुन्गिस अंतरराष्ट्रीय बाजार में लगी आग बुझाने के लिए 100 अधिकारी और दमकल की 30 गाड़ियां मौके पर पहुंचीं। कोई हताहत नहीं हुआ। आग पर काबू पा लिया गया है।

856 फुट ऊपर बंधी रस्सी पर चलकर पार किया ज्वालामुखी

साहसिक करतबों के लिए मशहूर राफेल जुगना ब्राइडी व अलेक्जेंडर शुल्ज ने बीते दिनों प्रशांत महासागर के तन्ना द्वीप पर स्थित सक्रिय ज्वालामुखी यासर को रस्सी से पार किया। एक वायरल वीडियो में दोनों धधकते ज्वालामुखी से 856 फुट ऊपर बंधी रस्सी पर चलते नजर आ रहे हैं। इस स्टंट से दोनों ने गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज करा लिया।

फवाद चौधरी ने उठाए पाक में साइबर सुरक्षा पर सवाल, बोले- पीएम हाउस का डेटा डार्क वेब पर बेचने को रखा

इस्लामाबाद। पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के नेता फवाद चौधरी ने पाक में साइबर सुरक्षा की स्थिति पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने दावा किया कि, पाकिस्तान के पीएम हाउस के डेटा को डार्क वेब पर बिक्री के लिए रखा गया है।

मीडिया से बात करते हुए, चौधरी ने कहा कि प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) सुरक्षित नहीं और लीक हुए ऑडियो को 350,000 अमरीकी डॉलर की कीमत पर डार्क वेब पर नीलामी के लिए रखा गया। फवाद ने कहा कि ऑडियो लीक से पुष्टि हुई कि लंदन में फैसले किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि पीएमओ का ऑडियो लीक होना भी सुरक्षा एजेंसियों की

नाकामी है। लीक हुए ऑडियो विवाद में पाकिस्तान मुस्लिम लीग-एन की उपाध्यक्ष मरियम, रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ, कानून मंत्री आजम तरार, गृह मंत्री राणा सनाउल्लाह और एनए के पूर्व अध्यक्ष अयाज सादिक और प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के बीच बातचीत सुनी गई।

अपने ट्विटर हैंडल पर पीटीआई नेता फवाद ने लिखा, यह हमारी खुफिया एजेंसियों, विशेष रूप से इंटेलिजेंस ब्यूरो की एक बड़ी विफलता है। स्थानीय मीडिया के अनुसार, उन्होंने कहा, राजनीतिक मामलों के अलावा, सुरक्षा और विदेशी मामलों पर महत्वपूर्ण चर्चा उनके हाथ में है। पीएम कार्यालय की सुरक्षा पर खैबर पख्तूनख्वा के वित्त मंत्री तैमूर खान झगरा ने भी सवाल उठाए और कहा, लीक हुई ऑडियो क्लिप ने खतरे की घंटी बजा दी है और पीएम हाउस की सुरक्षा पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

डॉन की रिपोर्ट के अनुसार, पहली क्लिप में पीएमएल-एन की उपाध्यक्ष मरियम और पीएम शहबाज के बीच देश के वित्त मंत्री मिफ्ता इस्माइल के बारे में कथित तौर पर बातचीत को दिखाया गया है, जिन्हें कथित तौर पर कड़े आर्थिक कदम उठाने के लिए पार्टी के भीतर से आलोचना का सामना करना पड़ा।

पीएमएल-एन की उपाध्यक्ष मरियम ने सार्वजनिक रूप से कहा है कि वह पेट्रोल और बिजली की कीमतों में बढ़ोतरी के फैसले से सहमत नहीं हैं, उन्होंने कहा कि इस तरह के फैसले उनके पास नहीं हैं, चाहे उनकी पार्टी सरकार में हो या नहीं।